₹15

हिन्दी भाषियों की मासिक पत्रिका

# क्रान्ति

अक्तूबर 2011

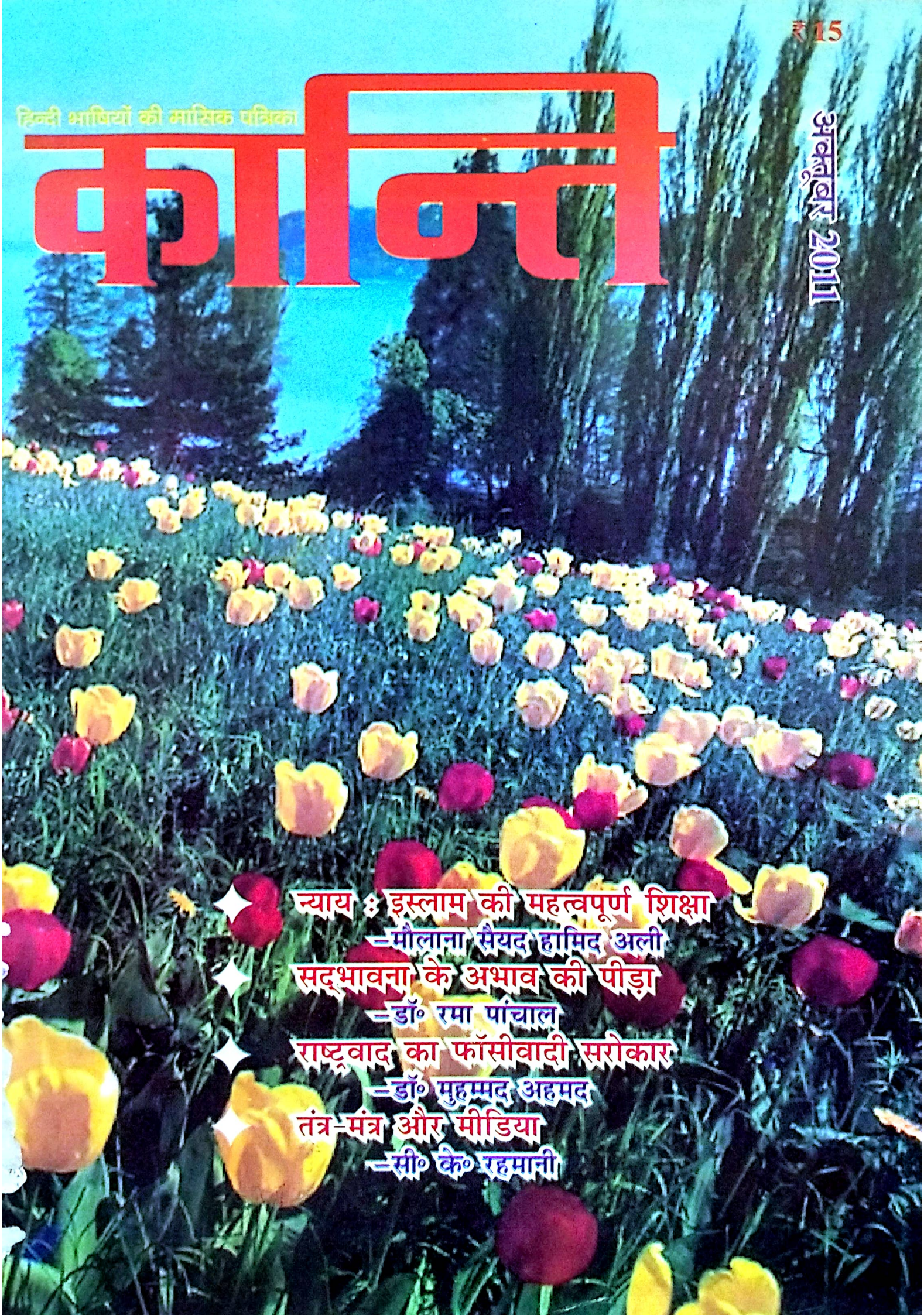

न्याय : इस्लाम की महत्वपूर्ण शिक्षा
–मौलाना सैयद हामिद अली

सद्भावना के अभाव की पीड़ा
–डॉ० रमा पांचाल

राष्ट्रवाद का फॉसीवादी सरोकार
–डॉ० मुहम्मद अहमद

तंत्र-मंत्र और मीडिया
–सी० के० रहमानी

Sham Bepari
Ph. : 2254132

# DILKHUSH
## Chicken Center



Halal Live Chicken

Stall No.360, 1st floor, (Above Mutton Stall No.1),
Mapusa Muncipal Market, Mapusa- GOA.

# DILKHUSH
## Mutton Stall



Halal Fresh Mutton
& Chicken Parts

Stall No.1
Mapusa Muncipal Market, Mapusa- GOA.

आपकी आशाओं का सुन्दर प्रतिबिम्ब

हिन्दी भाषियों की मासिक पत्रिका

# कान्ति

वर्ष 21 अंक 4 अक्तूबर 2011

**रहे वे लोग जो ईमान लाए और उन्होंने अच्छे कर्म किये और अपने रब की ओर झुक पड़े वही जन्नत वाले हैं, उसमें वे सदैव रहेंगे ।** **–क़ुरआन**

**संपादक**

**डॉ० मुहम्मद अहमद**

अपने विचार, लेख, रचनाएं भेजने एवं संपादकीय मामलों के लिए लिखें–

संपादक, 'कान्ति' मासिक

डी-314, दावत नगर, अबुल फ़ज़्ल इन्कलेव

जामिया नगर, नयी दिल्ली–110025

ई मेल editorkanti@yahoo.com

* * *

ख़रीदार बनने, एजेंसी लेने, प्रचार-प्रसार एवं प्रबंधकीय मामलों के लिए लिखें–

प्रबंधक, 'कान्ति' मासिक

डी-314, दावत नगर, अबुल फ़ज़्ल इन्कलेव

जामिया नगर, नयी दिल्ली–110025

फोन–(011)–26949430

**सहयोग राशि**

एक प्रति रु० 15/- विशेषांक रु० 25/-

वार्षिक रु० 160/-

दो वर्ष 300/- पांच वर्ष 700/-

सऊदी अरब और खाड़ी के देशों से–60 रियाल

यूरोप व अमेरिका से–25 US डॉलर

चेक / ड्राफ्ट **'मासिक कान्ति'** के नाम से बनवाएं

# ग़ज़ल

अच्छी तरह ज़रा मुझे पहचान ज़िन्दगी
इन्सान हूं मैं हज़रते-इन्सान ज़िन्दगी

मुझ से तेरे हिसार[1] में ठहरा न जाएगा
मैदान मेरे वास्ते मैदान ज़िन्दगी

हमने लिखा है अपने शहीदों के ख़ून से
मक़्तल[2] की दास्तान का उनवान[3] ज़िन्दगी

पहने हुए है रेशमो-कमख़्वाब का कफ़न
यारान-बे-ज़मीर[4] की बेजान ज़िन्दगी

मनमानियों का राज है सारे समाज में
जैसे हो कोई अह्द[5] न पैमान[6] ज़िन्दगी

बातिल[7] के इक़्तिदार[8] पे चीं-बर-जबीं[9] नहीं
हक़ के सिपाहियों की तन आसान ज़िन्दगी

ग़ैरों से पूछती है तरीक़ा नजात[10] का
अपनों की साज़िशों से परीशान ज़िन्दगी

वो ज़ख़्म हूं कि जिस पे बड़े एहतिमाम[11] से
ख़ाली करे है अपने नमकदान ज़िन्दगी

कमज़र्फ़[12] मुहसिनों[13] का सताया हुआ हूं मैं
मुझ पर न कीजियो कोई एहसान ज़िन्दगी

मैंने बुरा किया जो तुझे बेवफ़ा कहा
अपने 'हफ़ीज़' का न बुरा मान ज़िन्दगी ।

● **हफ़ीज़ मेरठी**

---

1. घेरे दायरे, परिधि 2. क़त्लगाह 3. शीर्षक 4. चरित्रहीन दोस्तों, अन्तरात्माहीन मित्रों 5. वचन 6. वादा 7. असत्य, झूठ 8. शासन, सत्ता 9. अप्रसन्न, माथे पर बल पड़ जाना 10. मुक्ति, आराम-चैन की ज़िन्दगी 11. व्यवस्था, आयोजन, प्रबंध 12. ओछे, छिछोरे 13. उपकार करने वालों, एहसान करने वालों ।



# कहां क्या है ?


| | | |
|---|---|---|
| ग़ज़ल | –हफ़ीज़ मेरठी | 3 |
| क़ुरआन ज्योति | | 5 |
| सहनशीलता, धैर्य और नर्मी (हदीस मंजरी) | | 6 |
| आन्दोलन की सही दिशा का सवाल (संपादकीय) | | 7 |
| 'वन्देमातरम्' की वास्तविकता और मुसलमान (आपके पत्र) | | 8 |
| पवित्र क़ुरआन : जीवंत भाषा में जीवंत ग्रंथ | –अब्दुल्लाह अडियार | 15 |
| सबको मिले न्याय की छाया (कविता) | –अभिराम सत्यज्ञ जयशील | 16 |
| न्याय : इस्लाम की महत्वपूर्ण एवं मौलिक शिक्षा | –मौलाना सैयद हामिद अली | 17 |
| हज़रत ज़ैनब बिन्त अली रज़ि० (नेकी के सिपाही) | –तालिब हाशमी | 19 |
| सद्भावना के अभाव की पीड़ा | –डॉ० रमा पांचाल | 23 |
| राष्ट्रवाद का फॉसीवादी सरोकार | –डॉ० मुहम्मद अहमद | 26–27 |
| तंत्र-मंत्र और मीडिया | –सी० के० रहमानी | 35 |
| 'अनुपम आदर्श' एक पठनीय पुस्तक (पुस्तक समीक्षा) | | 37 |
| अर्जुन पुरस्कार पाने वाले मुस्लिम खिलाड़ी | –ए० एन० शिबली | 39 |
| नरक से स्वर्ग तक | –सैयद मुहम्मद असलम | 41 |
| घातक है महिलाओं में बढ़ती धूम्रपान की लत (स्वास्थ्य चर्चा) | –सुप्रिया | 47 |
| इलेविन ऐट, शह्ला (कविताएं) | –डॉ० मुहम्मद अहमद | 49 |
| बालवीथी | | 50 |




**(33) उस वक़्त तो अल्लाह उन पर अज़ाब उतारने वाला न था जबकि तू उनके बीच मौजूद था और न अल्लाह का यह नियम है कि लोग तौबा कर रहे हों और वह उनको अज़ाब दे दे ।[27] (34) लेकिन अब क्यों न वह उन पर अज़ाब ले आये जबकि वे मस्जिदे हराम (प्रतिष्ठित मस्जिद) का रास्ता रोक रहे हैं, हालांकि वे उस मस्जिद के जाइज़ मुतवल्ली (वैध व्यवस्थापक) नहीं हैं । इसके जाइज़ मुतवल्ली तो सिर्फ़ परहेज़गार ही हो सकते हैं, मगर अधिकतर लोग इस बात को नहीं जानते । (35) अल्लाह के घर के पास उन लोगों की नमाज़ क्या होती है ? बस सीटियां बजाते और तालियां पीटते हैं ।[28] इसलिए अब लो, इस अज़ाब का मज़ा चखो अपने उस हक़ के इन्कार के बदले में जो तुम करते रहे हो ।[29]**

**–क़ुरआन, 8 : 33-35**

27. यह उनके उस प्रश्न का उत्तर है जो उनकी ऊपर वाली प्रत्यक्ष दुआ में निहित था । इस उत्तर में बताया गया है कि अल्लाह ने मक्की काल में क्यों अज़ाब नहीं भेजा । इसका पहला कारण यह था कि जब तक नबी किसी आबादी में मौजूद हो और सत्य का आह्वान कर रहा हो, उस समय तक आबादी के लोगों को मोहलत दी जाती है और अज़ाब भेजकर समय से पहले उनसे सुधार लाने का दिया हुआ अवसर छीन नहीं लिया जाता । इसका दूसरा कारण यह है कि जब तक आबादी में से ऐसे लोग बराबर निकले चले आ रहे हों, जो अपनी पिछली कोताहियों और ग़लत आचरण पर सतर्क होकर अल्लाह से क्षमा-याचना करते हों और आगे के लिए अपने रवैये में सुधार ले आते हों, उस समय तक इसका कोई उचित कारण नहीं है कि अल्लाह उस आबादी को नष्ट करके रख दे । अलबत्ता अज़ाब का असली वक़्त वह होता है जब नबी इस आबादी पर हुज्जत (युक्ति) पूरी करने के बाद निराश होकर वहां से निकल जाए या निकाल दिया जाए या क़त्ल कर डाला जाए और वह आबादी अपनी रीति-नीति से सिद्ध कर दे कि वह किसी सत्य प्रिय तत्व को अपने बीच सहन करने के लिए तैयार नहीं है ।

28. यह संकेत उस भ्रम को दूर करता है जो लोगों के मन में पाया जाता था और जिससे सामान्य रूप से अरब के लोग धोखा खा रहे थे । वे समझते थे कि कुरैश चूंकि अल्लाह के घर के मुजाविर और मुतवल्ली (प्रबंधक और देखभाल करने वाले) हैं और वहां पूजा-पाठ करते हैं इसलिए उन पर अल्लाह की मेहरबानी है । इसके खंडन में कहा गया कि मात्र वरासत में मुजाविर और मुतवल्ली हो जाने से कोई व्यक्ति या गिरोह किसी इबादतगाह का जाइज़ मुजाविर और मुतवल्ली नहीं हो सकता । जाइज़ मुजाविर और मुतवल्ली तो केवल खुदा से डरकर जीवन गुज़ारने वाले (परहेज़गार) लोग ही हो सकते हैं । और इन लोगों का हाल यह है कि एक गिरोह को, जो अल्लाह की विशुद्ध इबादत करने वाला है, उस इबादतगाह में आने से रोकते हैं जो विशुद्ध रूप से अल्लाह की इबादत हीं के लिए वक़्फ़ की गयी थी । इस तरह ये मुतवल्ली और सेवक बनकर रहने के बजाय इस इबादतगाह के मालिक बन बैठे हैं और अपने आपको इस बात का अधिकारी समझने लगे हैं कि जिससे ये रुष्ट हों, उसे इबादतगाह में न आने दें । यह हरकत इस बात की खुली दलील है कि न तो वे खुदा से डरते हैं और न ही परहेज़गार हैं । रही उनकी इबादत जो वे अल्लाह के घर में करते हैं, तो न उसके भीतर एकाग्रता है न विनम्रता, न अल्लाह की ओर ध्यान है और न अल्लाह का स्मरण । बस एक निरर्थक शोर-हंगामा और खेल-तमाशा है जिसका नाम उन्होंने इबादत रख छोड़ा है । अल्लाह के घर की ऐसी तथा कथित सेवा और ऐसी झूठी इबादत पर आख़िर ये अल्लाह की कृपा के अधिकारी कैसे हो गये और यह चीज़ उन्हें अल्लाह के अज़ाब से कैसे सुरक्षित रख सकती है?

29. वे समझते थे कि अल्लाह का अज़ाब सिर्फ़ आसमान से पत्थरों की शक्ल में या किसी और तरह की प्रकृति-शक्ति के उफ़ान के रूप में आया करता है, मगर यहां उन्हें बताया गया है कि बद्र की लड़ाई में उनकी निर्णायक पराजय, जिसकी वजह से इस्लाम के लिए जीवन का और प्राचीन अज्ञानी व्यवस्था के लिए मृत्यु का निर्णय हुआ है, वास्तव में उनके लिए अल्लाह का अज़ाब ही है ।

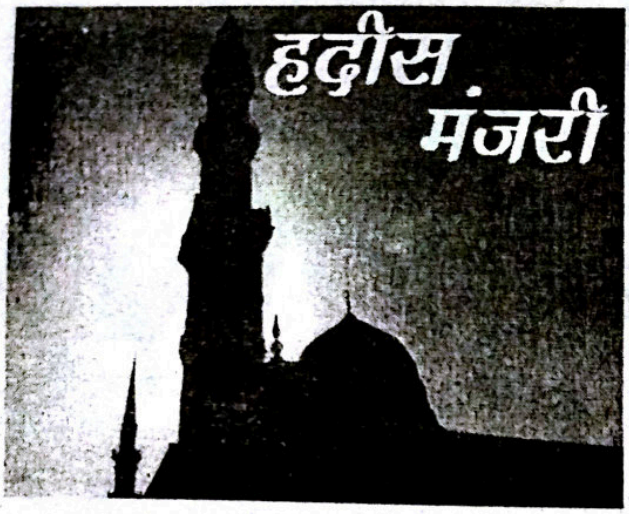


# सहनशीलता, धैर्य और नरमी

● हज़रत इब्न अब्बास (रज़ि॰) से रिवायत है कि अल्लाह के रसूल (सल्ल॰) ने हज़रत अब्दुल क़ैस (रज़ि॰) से कहा : "तुममें दो स्वाभाविक गुण ऐसे हैं जो अल्लाह को प्रिय हैं : सहनशीलता और धैर्य ।"
—मुस्लिम

● हज़रत आइशा (रज़ि॰) से रिवायत है कि अल्लाह के रसूल (सल्ल॰) ने कहा : "निस्सन्देह अल्लाह नर्म है । हर एक मामले में नरमी को पसन्द करता है ।" —बुख़ारी, मुस्लिम

● हज़रत आइशा (रज़ि॰) से रिवायत है कि नबी (सल्ल॰) ने कहा : "निस्सन्देह अल्लाह नर्म है, नरमी को पसन्द करता है और नरमी पर वह कुछ देता है जो सख़्ती पर नहीं देता बल्कि उसके सिवा (नरमी के सिवा) किसी चीज़ पर नहीं देता ।" —मुस्लिम

● हज़रत आइशा (रज़ि॰) से रिवायत है कि नबी (सल्ल॰) ने कहा : "नरमी जिस चीज़ में भी होती है अनिवार्यत: उसको ख़ूबसूरत बना देती है । और वह (नरमी) जिस चीज़ से भी निकाल दी जाती है वह अनिवार्यत: बुरी हो जाती है ।" —मुस्लिम

● हज़रत अबू हुरैरा (रज़ि॰) से रिवायत है । वे कहते हैं कि एक ग्रामीण ने मस्जिद में पेशाब कर दिया । लोग खड़े हो गये ताकि इस मामले में उसकी ख़बर लें, तो नबी (सल्ल॰) ने कहा : "उसे छोड़ दो और उसके पेशाब पर पानी से भरा एक डोल बहा दो । क्योंकि तुम आसानी पैदा करने के लिए भेजे गये हो और तुम कदापि कठिनाई और तंगी पैदा करने के लिए नहीं भेजे गये हो ।" —मुस्लिम

● हज़रत अनस (रज़ि॰) से रिवायत है कि नबी (सल्ल॰) ने कहा : "आसानी पैदा करो और कठिनाई और तंगी पैदा न करो । और ख़ुशख़बरी दो और नफ़रत पैदा न करो ।" —बुख़ारी, मुस्लिम

● हज़रत जरीर बिन अब्दुल्लाह (रज़ि॰) से रिवायत है । वे कहते हैं कि मैंने अल्लाह के रसूल (सल्ल॰) को यह कहते हुए सुना : "जो व्यक्ति नरमी से वंचित रहा, वह प्रत्येक भलाई से वंचित रहा ।"
—मुस्लिम

● हज़रत अबू हुरैरा (रज़ि॰) से रिवायत है कि एक व्यक्ति ने नबी (सल्ल॰) की सेवा में निवेदन किया कि आप मुझे कोई वसीयत करें । आपने कहा : "क्रोध न करो ।" उसने अपना सवाल कई बार दोहराया । आप यही कहते रहे : "क्रोध न करो ।"
—मुस्लिम

● हज़रत अबू याआला सद्दाद बिन औस (रज़ि॰) से रिवायत है कि अल्लाह के रसूल (सल्ल॰) ने कहा : "निश्चय ही अल्लाह ने हर चीज़ में अच्छा तरीक़ा अपनाना ज़रूरी ठहराया है । अत: जब तुम किसी जानवर को ज़ब्ह करो, तो अच्छे तरीक़े से ज़ब्ह करो और चाहिए कि तुममें से हर एक ज़ब्ह करते समय अपनी छुरी को तेज़ कर ले और जानवर को आराम दे ।" —मुस्लिम

● हज़रत इब्न मसऊद (रज़ि॰) से रिवायत है कि अल्लाह के रसूल (सल्ल॰) ने कहा : "क्या मैं तुम्हें उस व्यक्ति की ख़बर न दूं जो आग (दोज़ख़) पर हराम है या जिस पर आग हराम है ? वह हराम है हर एक उस व्यक्ति पर जो निकट रहने वाला हो, नर्म, कोमल, सरल हो।"
—तिरमिज़ी
('रियाज़ुस्सालिहीन' से)

**इस्लाम-परिचय**

**हिन्दी वेबसाइटें**

www.quranhindi.com
www.islamdharma.org
www.islamicwebdunia.com
www.islamic-videos.com

संपादकीय

# आन्दोलन की सही दिशा का सवाल

प्रसिद्ध समाजसेवी अन्ना हज़ारे के आन्दोलन का सम-सामयिक पटाक्षेप सरकार और जनता के लिए राहत के संदेश से कम नहीं रहा । भ्रष्टाचार के मुद्दे पर जन-जागरण इसकी बड़ी उपलब्धि कही जाएगी, लेकिन जहां तक जन-लोकपाल विधेयक का संबंध है, तो उसके बारे में मांग केवल तीन बिन्दुओं तक सिमट गयी । संसद के दोनों सदनों में इस पर चर्चा हुई और सरकार ने विभिन्न दलों की असहमति एवं सशर्त सहमति के स्वरों के बीच तीन बिन्दुओं पर सहमति की बात कह दी । वास्तविकता यह है कि इन तीन बिन्दुओं के अतिरिक्त लोकपाल विधेयक में अन्ना हज़ारे की मांगों को शामिल किये जाने पर संदेह और संशय है । बहरहाल सरकार ने किसी तरह विशेषकर मध्यवर्गीय सपोर्ट से चले अन्ना-अनशन से अपना पिंड छुड़ाया । दूसरी ओर अन्ना पक्ष अपनी सभी आरंभिक मांगों का त्याग कर जिन तीन बिन्दुओं की बात करने लगी, वे इस प्रकार हैं : राज्यों में लोकायुक्तों की नियुक्ति हो, सभी निचले कर्मचारी भी लोकपाल के अंतर्गत आएं और सिटीज़न चार्टर अर्थात सरकारी कार्यालयों में समयबद्ध काम संपन्न कराने की घोषणा की जाए । स्पष्ट है, ये मांगें अधिक महत्वपूर्ण नहीं हैं, क्योंकि इन पर कुछ राज्यों में अमल हो रहा है । जो अधिक महत्वपूर्ण मांगें थी, उन पर परिस्थितियों के चलते ध्यान नहीं दिया गया—जैसे प्रधानमंत्री, सांसदों और न्यायपालिका को लोकपाल के अंतर्गत लाना, भ्रष्टाचार की शिकायत करने वालें को दंडमुक्त कराना और दोषी पाये गये लोगों का दंड सुनिश्चित कराना आदि । अब लोकपाल के संबंध में सरकार, अन्ना, अरुणा राय, जयप्रकाश नारायण (लोकसत्ता) द्वारा तैयार किये गये विधेयक संसद की स्थायी समिति के पास हैं । साथ ही संसद के दोनों सदनों में हुई चर्चा के रिकार्ड भी उसके सामने हैं । इनके मद्देनज़र समिति विधेयक बनाएगी, जिस पर संसद में चर्चा होने के बाद क़ानून बनेगा ।

इस प्रकार अन्ना हज़ारे टीम को कुछ विशेष प्राप्त नहीं हुआ, इसीलिए शायद अन्ना हज़ारे ने केवल तीन बिन्दुओं पर सहमति को 'आधी जीत' की संज्ञा दी । सरकार ने जो कुछ दिया (?) वह झुनझुने के सदृश है । हम जब 13 दिन के अनशन पर दृष्टिपात करते हैं, तो कुछ विसंगतियों को भी पाते हैं, जैसे—अनशन में देश के सबसे बड़े अल्पसंख्यक जनों (मुसलमानों) की भागीदारी नगण्य रही । यही बात दलित और अन्य वंचित भाइयों के सिलसिले में कही जा सकती है । इसकी पूर्ति मुस्लिम और दलित बच्चियों के हाथों अनशन समाप्त करवाने से नहीं की जा सकती । अनजाने या अज्ञानतावश अन्ना, उनकी टीम और अन्य लोगों द्वारा जो 'वंदे मातरम्' जैसे नारे लगाये गये, वे सहिष्णुतावर्धक कदापि नहीं थे । अन्ना द्वारा बार-बार राजगुरु, भगत सिंह का नाम लेना और अशफ़ाक़ उल्लाह ख़ां को भुला देना भी अनुचित व असहज रहा । इसी प्रकार देश-निर्माण में सक्रिय भूमिका निभाने वालों की अनदेखी की गयी । मंच से अशालीन भाषा भी निकली, जिस पर संसद तक में आपत्ति हुई । यह भी वास्तविकता झलकी कि इस आन्दोलन के राजनीतिक अर्थ भी हैं । अनशन तोड़ने के दिन मने जश्न में जो भावोद्गार सामने आये, उनके विश्लेषण में राजनीतिक सहभागिता के भी संकेत मिलते हैं । अन्ना चाहते हैं कि अन्य मुद्दों और समस्याओं पर भी आन्दोलन करें । स्पष्ट रूप से संविधान के अंतर्गत इनका आयोजन किया जा सकता है, लेकिन जनतांत्रिक मूल्यों की अवहेलना करके अड़ियल रुख़ अपनाना कदापि उचित नहीं है । इस नयी सामाजिक और राजनीतिक प्रक्रिया के आगे चलकर घातक परिणाम सामने आ सकते हैं, क्योंकि इस बात की क्या गारंटी कि जो भी मांगें होंगी, वे बहरहाल ठीक और जनानुकूल होंगी । अत: आन्दोलन को व्यापक बनाने के साथ ही 'सीमा' का भी लिहाज़ करना होगा । कुछ राजनीतिक प्रेक्षकों का मानना है कि यह आन्दोलन 2014 तक लोकसभा चुनाव होने तक चलता रहेगा । स्पष्ट है, इस सूरत में इस आन्दोलन का राजनीतिकरण हो जाएगा, जो इसकी अंतिम-क्रिया के लिए पर्याप्त होगा ! अत: सावधानी के साथ सभी देशवासियों को साथ लेकर विवेकपूर्ण ढंग से इसे आगे ले जाना चाहिए, सत्ता नहीं जन-समस्याओं का निवारण ही इस आन्दोलन का लक्ष्य होना चाहिए । समस्याओं में मुसलमानों, अन्य अल्पसंख्यकों, दलितों, वंचितों और उपक्षित के अधिकारों और उनसे जुड़ी समस्याओं को भी सम्मिलित करना होगा ।

# 'वन्देमातरम्' की वास्तविकता और मुसलमान

अन्ना हज़ारे की टीम ने 'वन्दे मातरम्' के अंधाधुंध नारे लगाकर एक बार फिर इसके औचित्य का मुद्दा उठा दिया है। 'वन्दे मातरम्' जिस मानसिकता का परिचायक है वह पूर्णतः मुस्लिम विरोधी है। यही कारण है कि मुसलमान अन्ना हज़ारे के आन्दोलन से अधिक नहीं जुड़े। अन्ना हज़ारे पर संघी होने के जो आरोप लगे, उनमें निश्चय ही उनका नारा एक कारक के रूप में है।

इस्लाम सिर्फ़ एक ईश्वर की वन्दना की अनुमति देता है और किसी की भी नहीं, इसलिए देशवासियों के समक्ष इस्लामी दृष्टिकोण रखना वर्तमान समय की अत्यंत आवश्यकता है। ताकि भ्रांतियों का निवारण हो सके और लोग इस्लामी दृष्टिकोण से अवगत हो सकें जिससे देश में राष्ट्रीय एकता और अखंडता का वातावरण निर्मित हो।

धार्मिक दृष्टि से इस्लाम की बुनियाद तौहीद (एकेश्वरवाद) पर आधारित है इस्लाम का जो कलिमा (मूलमंत्र) है वह "ला इलाहा इल्लल्लाह, मुहम्मदुर्रसूलुल्लाह" है जिसका अर्थ है कि नहीं कोई पूज्यनीय व वंदनीय एक ईश्वर के अतिरिक्त और हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) उसके संदेशवाहक हैं। इसलिए इस्लाम में एक ईश्वर के अतिरिक्त किसी की भी बन्दगी (वंदना) नहीं की जा सकती है। चाहे वह ईश्वर के संदेशवाहक पैग़म्बरे इस्लाम हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) ही क्यों न हो ? एक ईश्वर के अतिरिक्त अन्य की पूजा वंदना शिर्क (ईश्वर के साथ अन्य को सम्मिलित करना) कहलाता है। ईश्वरीय ग्रंथ कुरआन के अनुसार ईश्वर अपने भक्त का हर पाप क्षमा कर सकता है मगर शिर्क एक ऐसा घोर पाप है जिसके करने वाले को ईश्वर कभी भी क्षमा नहीं करेगा। इसलिए हर मुसलमान शिर्क जैसे घोर पाप से बचना चाहता है क्योंकि इसी पर उसका ईमान निर्भर है।

इस्लाम में भारत भूमि सहित समस्त ब्रह्माण्ड का पैदा करने वाला तथा उसे चलाने वाला एक ईश्वर ही पूज्यनीय एवं वंदनीय है और कोई नहीं इस बात का समर्थन वैदिक धर्म के ग्रंथ वेद भी करते हैं। ऋग्वेद में है : "जो ईश्वर समस्त मानव संसार का एक ही उपास्य है उसी का इन वाणियों द्वारा भली-भांति अर्चन करो, वही सुख की वर्षा करने वाला सर्वशक्तिमान, सत्यरूप, सर्वज्ञ और समस्त शक्तियों का अधिपति है।

ऋग्वेद में एक जगह और आता है कि : "जो ईश्वर एक ही है तू उसी की स्तुति कर वह सब मनुष्यों का सर्वद्रष्टा-सर्वज्ञ है। सुख की वर्षा करने वाला संपूर्ण संसार का एक मात्र अधिपति है।

यजुर्वेद में है कि : अंधकार में प्रविष्ट होते हैं जो प्रकृति की पूजा करते हैं।

वेद वाणी का प्रभाव दूसरे ग्रंथों पर भी कुछ न कुछ पड़ा है। उदाहरणार्थ शतपथ ब्राह्मण में है–जो दूसरे में ईश्वर बुद्धि करके उपासना करता है वह कुछ भी नहीं जानता है इसलिए वह विद्वानों के बीच में पशु के समान है।

अथर्ववेद में है कि–एक ईश्वर ही स्तुति एवं नमस्कार करने के योग्य है।

मुसलमान अगर वन्दे मातरम् गीत से परहेज़ करते हैं तो उनकी नीयत किसी दूसरे धर्म या वर्ग का विरोध या अपमान करने की क़तई नहीं होती है बल्कि अपने ही धर्म के पालन की भावना ज़्यादा होती है क्योंकि इस्लाम में शिर्क (ईश्वर के साथ दूसरों को सम्मिलित करना) घोर पाप है इसके लिए इस्लाम में कोई स्थान नहीं है। भारत का संविधान देश के हर नागरिक को समान अधिकार देता है और हर धर्म के मानने वालों को अपने धर्म का पालन करने एवं उसका प्रचार-प्रसार की स्वतंत्रता प्रदान करता है। इसके पश्चात भी अगर कोई सत्ता के नशे में मस्त होकर अपनी संस्कृति दूसरे धर्म के मानने वालों पर थोपने का प्रयास करता है तो यह भारत के नागरिक की स्वतंत्रता के मूल अधिकार का हनन है। जिस 'आनन्द मठ' उपन्यास में यह गीत है उसमें अंग्रेज़ों के आगमन का स्वागत किया गया है। यहां यह सोचने की बात है कि अंग्रेज़ों का स्वागत करने वाले क्या देश भक्त हो सकते हैं ? जिस बंकिमचन्द्र चटर्जी ने 'आनन्द मठ' उपन्यास लिखा था उनकी शिक्षा "हाजी मुहसिनफंड" से पूरी हुई थी। बी०ए० पास करने के बाद उन्होंने जो सिला

दिया वह सबके सामने है । जबकि वे जानते थे कि इस्लाम में शिर्क घोर पाप है । वंदेमातरम् गीत के अर्थ से यह स्पष्ट हो जाता है कि यह दुर्गा माता के लिए है । उनकी भक्ति में गाया गया गीत राष्ट्रगीत कैसे हो जाएगा यह भी विचार करने की बात है । हमारे देश में राष्ट्रगान के साथ एक राष्ट्रगीत भी है जो कि संसार के अन्य देश में नहीं है । भारत देश की राष्ट्र भाषा हिन्दी है और इस गीत की भाषा बंगला संस्कृत है । भारत के मूल निवासी दलित पिछड़े वर्ग सहित देश के ज़्यादातर लोगों के समझ में इसका अर्थ नहीं आता । पंडित जवाहरलाल नेहरू इसे क़ौमी गीत नहीं मानते थे । सुभाष चन्द्र बोस बंगाली होने के बावजूद इस बंगला गीत के विरोधी थे । इंडियन नेशनल कांग्रेस ने इस गीत के कुछ हिस्सों को विवादस्पद और साम्प्रदायिक मानकर हटा दिया था । ऑल इंडिया स्टूडेंट्स यूनियन ने भी यह फ़ैसला किया था यह गीत साम्प्रदायिक भावनाओं को भड़काता है इसलिए इसे छात्रों के किसी भी कार्यक्रम में गाना ठीक नहीं है ('स्टेट्समेन', 12 दिसम्बर 1938)

आख़िर में मैं अपने प्रिय देशवासियों के नाम एक संदेश देना चाहूंगा कि मुसलमान अपनी पैदा करने वाली मां को न तो पूज्य कहकर संबोधित करते हैं और न ही चरण स्पर्श करते हैं जबकि पैग़म्बरे इस्लाम हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) के कथन के अनुसार मां के चरणों में जन्नत है तो क्या वह अपनी मां से प्यार नहीं करते ? मुसलमान भले ही वन्दे मातरम् से परहेज़ करते हों क्योंकि उसमें शिर्क के अंश हैं लेकिन अपने राष्ट्र से अगाध प्रेम करते हैं । ऐसी कितनी मिसालें हैं जैसे ब्रिगेडियर मुहम्मद उस्मान और परमवीर चक्र से सम्मानित अमेरिकी पेटेंट टैंक तोड़ने वाला हवलदार अब्दुल हमीद ब्लैक कमांडो अल्लाह रक्खा अपने देश के लिए अपनी जान का नज़राना पेश करते रहते हैं । राष्ट्र प्रेम से ओत-प्रोत लगभग दो दर्जन से अधिक गीत जिसे मुस्लिम शायरों ने फिल्मों के लिए लिखे हैं जिसे हर वर्ष राष्ट्रीय पर्व व अन्य अवसरों पर बड़े शान से ज़ोर-शोर से बजाये जाते हैं पर अधिकांश लोग इससे परिचित नहीं हैं कि इतने प्यारे राष्ट्र गीत मुस्लिम शायरों द्वारा लिखित हों ।

**जीनियस ख़ान**

## ज्योतिषीय अनुभव

याद कीजिए मार्च 2011 अंक में आपने जनाब सैयद वक़ार अहमद हुसैनी का आलेख 'ब्रह्माण्ड : ज्योतिषशास्त्र बनाम अंतरिक्ष विज्ञान' शीर्षक से शाया किया था । अंत में लिखा था 'शेष अगले अंक में' यह शृंखला दूसरे अंक में नहीं दिखायी दी ।

ज्योतिष कहां से आयी ? कहां विस्तार हुआ और विभिन्न धर्मों के धार्मिक ग्रंथ इस बारे में क्या करते हैं । इस पचड़े व पेंच में पड़ते हुए मैं अपने निजी अनुभव के आधार पर कह सकता हूं कि ज्योतिष को जानने-समझने की सबसे अधिक सुलभ साधन है । यहां विश्वास की बात नहीं 'ज्ञान' की बात है । आपको कितना ज्ञान है, जो आपके सामने बैठकर बता रहा है, उसको कितना ज्ञान है ।

मैं एक साधारण परिवार में जन्मा/जन्म पत्रिका के पीछे विद्वान ब्राह्मण ने लिखा कि यह व्यक्ति 32वें वर्ष से हवाई जहाज़ से यात्राएं करेगा । मैंने की ! हमारा परिवार यह सब सोच भी नहीं सकता था । पत्नी की मृत्यु भी उसी उम्र में हुई । शायद मैं समय से उस बात को समझ पाता । घमंड में था । सारी घटनाओं को इत्तिफ़ाक़ मानता रहा ।

आख़िरकार दक्षिण के कई प्रदेशों में जाकर इस ज्ञान को थोड़ा-बहुत प्राप्त किया । आज मेरी आंखें खुली हैं । मुझ में विश्वास है कि सब चीज़ धोखा दे सकती है ज्ञान नहीं । मेरा पुत्र कर्क लग्न का है पंचम में बुध है जी-तोड़ प्रयास के बावजूद गणित नहीं ले पाया । एक बात क़तई सत्य है कि हमारे समाज में जो ज्योतिषी न नजूमी घूम रहे हैं । उसमें से 95 फ़ीसदी पत्रा-जंत्री भी ठीक देख पाने में असमर्थ हैं । नक्षत्रों का मिलान करके उसका परिणाम बताना तो दूर की कौड़ी है । यही कारण है कि लोगों का इससे विश्वास उठ गया है ।

बड़ा दुख होता है जब मैं यदा-कदा देखता हूं कि राहू का पत्थर गोमेद लोग चांदी में दाहिनी हाथ में पहनकर परेशान-बीमार मुक़दमे में फंसे, हैरान घूमते हैं । कहते हैं कि फलां पीर या गुरु ने पहना दिया । ज्योतिष और रत्न धारण बहुत बड़ा विज्ञान है । इसके लिए धैर्य से सीखने की ज़रूरत है । गुरु भी ज्ञानवान हो । आजकल जल्दी से ज्ञान को व्यवसाय बनाने की होड़ मची हुई है । उन्हें क्या पता कि रत्नों की तरंगों की संबंध ब्रह्मांड के व्यापक ग्रहों के गुणों से है । हमारे राजा-महाराजा रत्न जड़ित मुकुट पहनते थे । समझने की बात है मोती का जन्म स्वाति' नक्षत्र में ही क्यों होता है ? वही मोती तो फ़ायदा करेगा । आज मोतियों के खेती हो रही है । बड़ा भारी धंधा है । प्लास्टिक के मोती

# मदद के लिए अपील

जामिया मिस्बाहुल उलूम चौकोनियां, पूर्वी उत्तर प्रदेश का एक जाना-माना तालीमी इदारा है। यह इदारा सिद्धार्थ नगर ज़िला के ग्रामीण क्षेत्र में है। यहां लगभग सभी राज्यों और पड़ोसी देश नेपाल के छात्र तालीम हासिल कर रहे हैं। यह इदारा आधी सदी से तालीम व तर्बियत के मोर्चे पर मुस्लिम समाज की सेवा कर रहा है। यहां प्राइमरी से लेकर आलिमीयत तक की तालीम का पूरा इन्तिज़ाम है। यहां दीनी और अस्री उलूम को एक ख़ास इम्तिज़ाज के साथ समोया गया है, जिसके कारण जामिया को तालीमी मैदान में एक अलगं और प्रतिष्ठित स्थान प्राप्त है। यहां क़याम और तआम की सारी सहूलतें उपलब्ध हैं। जामिया मिस्बाहुल उलूम की विशेषता तालीम के साथ इस्लामी बुनियादों पर छात्रों की मिसाली तर्बियत करना है।

## जामिया के मंसूबे

● मर्कज़ी लाइब्रेरी की तामीर ● जामिया की मस्जिद के अधूरे कामों को पूरा करना ● लड़कियों के लिए अलग दर्सगाह की तामीर ● टेक्निकल सेन्टर का क़याम ● होस्टल की तामीर ● अनाथालय की तामीर ● फैमिली क्वार्टर्स की तामीर

**अहूले ख़ैर हज़रात से दरख़्वास्त है कि जामिया की दिल खोलकर मदद करें और अल्लाह के यहां उसका बदला पाएं।**

—: भेजने का पता :—

**जामिया मिस्बाहुल उलूम**

चौकोनियां भारत भारी, सिद्धार्थनगर-272191

फ़ोन : 09450587737, 09793424547

**जामिया का बैंक खाता नं०**

A/c No. 30290663653 S.B.I. डुमरियागंज, कोड-1250

भी तैयार हैं । ऐसे मोतियों का जीवन पर क्या प्रभाव होगा? फिर कहते हैं ज्योतिष झूठा है ।

अब आपको अंश, नीच, उच्च-अस्त-व्यस्त व वक्री ग्रहों की जानकारी है नहीं । कौन किसको किस उम्र में प्रभावित करेगा ? गणित लगा नहीं सकते और कहें कि ज्योतिष झूठा है । जो चीज़ समझ में नहीं आती उसमें धर्म अड़ा कर सीना चौड़ा कर लेते हैं । मज़ाक़ बना लेते हैं फिर इतिहास में टटोलने लगते हैं । शांति से बैठकर ज्ञान प्राप्त नहीं करना चाहते ।

ज्योतिष नाड़ी शास्त्र पर निर्भर करता है । नाड़ी अंशों पर ही मानव जीवन की घटनाएं घटती हैं । यदि जन्म समय आपका 24 सेकेंड तक सही है तो फलादेश सही होगा । वैराम ख़ां के पुत्र रहीम ने 1600 में एक छोटी-सी पुस्तक 'खेट के तुकम' लिखी दोहो में ज्योतिष का बखान करके कमाल किया है । यह एक बहुत बड़ा विषय है । मेरी मंशा किसी की भावनाओं को चोट पहुंचाना नहीं है, न चुनौती देना है । मैंने जो अध्ययन किया और अपने जीवन में महसूस किया उसको विनम्र से प्रस्तुत किया है । लोग ज्ञान को कहां तक झूठ साबित करेंगे ? मेरे अज़ीज़ दोस्त हाजी याक़ूब कुरैशी कहते हैं–जो झूठ बोलता है वो अल्लाह का दोस्त नहीं हो सकता । अल्लाह के पास जाने के लिए ज्ञान और सच के पास जाना होगा । उसकी उपासना और प्रार्थना बहुत कठिन है ।

**आनन्द शर्मा**
209, कहरवान बिहारीपुर
बरेली-243003

## शिक्षा : उन्नति का द्वार

किसी भी मुल्क की उन्नति वहां की शिक्षा पर निर्भर करती है । हमारा मुल्क कई वर्षों तक अंग्रेज़ों का गुलाम रहा । इसके कारणों में सबसे बड़ा कारण था–शिक्षा का अभाव ।

अत: आज़ादी के तुरंत बाद शिक्षा के प्रसार के लिए जगह-जगह विद्यालय खोले गये । प्रारंभ में सामाजिक शिक्षा व ग्रामीण शिक्षा के कार्यक्रम चलाये गये । लेकिन लोगों में जागरूकता के अभाव के कारण शिक्षा का प्रसार नहीं हो सका और एक बड़े तबक़े में निरक्षरता व्याप्त रही । इसी कारण छठी पंचवर्षीय योजना प्रारंभ होने पर प्रौढ़ शिक्षा के लिए राष्ट्रीय नीति की घोषणा की गयी और 2 अक्तूबर 1978 से इस कार्यक्रम की शुरुआत हुई । इसमें 1983-84 तक 15 से 35 वर्ष के दस करोड़ निरक्षरों को साक्षर करने का लक्ष्य रखा गया । परंतु इसके वांछित परिणाम नहीं मिल पाये ।

आज हमारे मुल्क में शिक्षा का सर्वाधिक अभाव मुस्लिम समुदाय में पाया जाता है । क्योंकि इस समुदाय के लोगों में जागरूकता की कमी है, अन्यथा इस्लाम धर्म में शिक्षा का स्थान बहुत ऊंचा है ।

क़ुरआन की शुरू की जो आयतें नाज़िल हुई हैं, वे शिक्षा से ही संबंधित हैं । ये आयतें इस प्रकार हैं–

"पढ़ो ! अपने रब के नाम के साथ जिसने पैदा किया, जमे हुए ख़ून के एक लोथड़े से इन्सान की रचना की । पढ़ो और तुम्हारा रब बड़ा उदार है, जिसने क़लम के द्वारा ज्ञान की शिक्षा दी, इन्सान को वह ज्ञान दिया जिसे वह व जानता था ।" (क़ुरआन, 96:1-5)

लेकिन पढ़ने को लेकर जो आदेश क़ुरआन में दिया गया है, उसका पालन नहीं हो पा रहा है । इसके मूल में ग़रीबी है । लोग पढ़ने की बजाय अपना पेट भरने की प्राथमिकता देते हैं ।

चूंकि क़ुरआन सारी दुनिया के लिए अवतरित हुआ है, अत: पढ़ने का आदेश पूरी दुनिया के लिए है, न कि सिर्फ़ मुसलमानों के लिए । लेकिन आज पुरी दुनिया में शिक्षा का काफ़ी अभाव है । अनेक लोग निरक्षर हैं, जिसके कारण वे न अपने कर्तव्य को समझते हैं और न अधिकारों को । अत: अशिक्षित लोग अपने अधिकारों से वंचित हैं और काफ़ी पिछड़े हुए हैं ।

अत: यह समस्या विश्वव्यापी है । इस कारण प्रतिवर्ष 8 सितम्बर को विश्व साक्षरता दिवस के रूप में मनाया जाता है ।

इस्लाम धर्म में इल्म के लिए किये जाने वाले जिहाद (जीतोड़ कोशिश) को बड़ा जिहाद घोषित किया गया है । जब कोई बन्दा इल्म सीखने के लिए घर-बार छोड़कर निकलता है तो वापस घर आने तक वह अल्लाह की राह में होता है । ऐसा व्यक्ति अगर रास्ते में मर जाए तो उसे शहीद का दर्जा प्राप्त होता है ।

आज निरक्षरता को समाप्त करने के लिए समर्थ लोगों को पहल करनी होगी । क़ौम की हालत को बदलने के लिए उन्हें जान-तोड़ संघर्ष करना होगा । क्योंकि अल्लाह

# हज़रत मुहम्मद(सल्ल०) की जीवनी

| | | |
|---|---|---|
| हज़रत मुहम्मद(स०) जीवन और संदेश | मौलाना सय्यद जलालुद्दीन उमरी | 9.00 |
| प्यारे नबी कैसे थे? | इरफ़ान ख़लीली | 16.00 |
| प्यारे नबी ऐसे थे ! | माइल ख़ैराबादी | 10.00 |
| जगत-गुरु | अबू ख़ालिद | 50.00 |
| जीवनी हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) | मु० इनायतुल्लाह सुब्हानी | 80.00 |
| बड़ों की माँए | माइल ख़ैराबादी | 10.00 |
| रह्मतुल-लिल-आलमीन | मौलाना सय्यद अबुल आला मौदूदी | 12.00 |
| विश्व-नायक | डॉ० कौसर यज़दानी नदवी | 22.00 |
| विश्व-नेता हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) | मौलाना सय्यद अबुल आला मौदूदी | 12.00 |
| हज़रत मुहम्मद : एक संक्षिप्त परिचय | डॉ० मुहम्मद अहमद | 6.00 |
| हज़रत मुहम्मद एक महान समाज सुधारक | प्रो० मिर्ज़ा रफ़ीउद्दीन अहमद | 08.00 |
| हज़रत मुहम्मद का आदर्श | श्री नाथूराम | 15.00 |
| हज़रत मुहम्मद सल्ल० का संदेश | मौलाना सय्यद अबुल आला मौदूदी | 10.00 |
| हज़रत मुहम्मद सल्ल०के संदेशों के मूल तत्त्व | मौलाना सय्यद अबुल आला मौदूदी | 4.00 |
| आख़िरी नबी (सल्ल०) | हमूदा अब्दुल आती | 05.00 |
| अल्लाह के रसूल का व्यावहार अपने शत्रुओं के साथ | मुहम्मद फ़ारूक़ ख़ाँ | 08.00 |
| क्रान्ति-दूत हज़रत मुहम्मद सल्ल० | नईम सिद्दीक़ी | 65.00 |

# परिवार इस्लाम की नज़र में

| | | |
|---|---|---|
| औरत और इस्लाम | मौलाना सय्यद जलालुद्दीन उमरी | 24.00 |
| औरत और प्राकृतिक नियम | मौलाना सय्यद अबुल आला मौदूदी | 18.00 |
| इस्लाम और बर्थ कंट्रोल | मौलाना सय्यद अबुल आला मौदूदी | 45.00 |
| नारी और इस्लाम | मक़बूल अहमद फ़लाही | 6.00 |
| परदा | मौलाना सय्यद अबुल आला मौदूदी | 80.00 |
| परिवार इस्लाम की नज़र में | मौलाना सय्यद जलालुद्दीन उमरी | 10.00 |
| बहुविवाह | मौलाना सय्यद हामिद अली | 50.00 |
| माँ-बाप के अधिकार | मौलाना सय्यद लुत्फ़ुल्लाह क़ादरी | 20.00 |
| मुस्लिम पर्सनल ला और समान सिविल कोड | शम्स पीरज़ादा | 12.00 |
| मुस्लिम पर्सनल ला धार्मिक व सामुदायिक... | मौलाना सदरुद्दीन इस्लाही | 6.00 |
| मुस्लिम लड़कियों की शिक्षा समस्या... | उमर अफ़ज़ल | 35.00 |

## MARKAZI MAKTABA ISLAMI PUBLISHERS

D-307, Dawat Nagar, Abul Fazl Enclave, Jamia Nagar, New Delhi-110025
Phone: 26971652, 26954341, 26946447(D) Fax: 26947858
E-mail: mmipublishers@gmail.com Website: www.mmipublishers.net

का फ़रमान है, "सच यह है कि अल्लाह किसी क़ौम की हालत नहीं बदलता जब तक कि वह ख़ुद अपने गुणों को नहीं बदल लेती ।" (क़ुरआन, 13:11)

शिक्षा के प्रसार से अनेक सामाजिक कुरीतियों पर स्वत: ही रोक लग जाएगी । शिक्षित व्यक्ति साफ़-सफ़ाई से रहना सीख जाता है, जिससे संक्रामक रोगों के फैलाव में कमी आती है । शिक्षित व्यक्ति अपनी अक़्ल का इस्तेमाल करना भी सीख जाता है ।

"यक़ीनन अल्लाह की दृष्टि में अत्यंत बुरे क़िस्म के जानवर वे बहरे-गूंगे लोग हैं, जो अक़्ल से काम नहीं लेते ।" (क़ुरआन, 8:22)

भारत में 2011 की जनगणना में पाया गया कि पुरुष व महिला की साक्षरता की दर क्रमश: 84.14 व 65.46 प्रतिशत है ।

स्पष्ट है कि महिलाएं शिक्षा के मामले में अभी काफ़ी पीछे हैं । अत: महिलाओं में शिक्षा के प्रसार के लिए विशेष प्रयत्न करने होंगे ।

इस्लाम धर्म के अनुसार जो व्यक्ति अपनी पुत्रियों को सही व पूरी तालीम दिलवाता है वह जन्नती है ।

सिर्फ़ नारे लगाने से महिलाएं आगे नहीं बढ़ जाएंगी बल्कि उन्हें उचित शिक्षा देकर ही आगे जा सकता है । देश के विकास के लिए महिला शिक्षा अतिआवश्यक है । एक पुरुष को शिक्षित किया जाए तो केवल एक पुरुष शिक्षित होता है, इसके विपरीत यदि एक महिला को शिक्षित किया जाए तो पूरा परिवार शिक्षित हो जाता है ।

**अबरार अहमद**

कोटा (राज॰)

## लोकपाल का दायरा

भ्रष्टाचार ऊपर से नीचे तक फैल गया है । राजनीति, लोकसभा, राज्यसभा, विधानसभा, नगर प्रशासन, ज़िला प्रशासन, ग्राम पंचायतों, सरकारी कार्यालयों, मीडिया यहां तक कि अदालतों में भी भ्रष्टाचार फैल चुका है । सभी सियासी पार्टियों में भ्रष्टाचारी हैं, जिन्होंने अरबों-खरबों की संपत्ति बना ली है और विदेशी बैंकों में भी अरबों की दौलत जमा कर ली है । उन पर मुक़दमे चलाये जाएं और उन्हें कड़ी सज़ाएं दी जाएं ।

बढ़ता हुआ भ्रष्टाचार देश की एकता, अखंडता और लोकतंत्र के लिए बड़ा ख़तरा है । लोकपाल बिल बहुत ज़रूरी है । राष्ट्रपति, प्रधानमंत्री, हाईकोर्ट्स एवं सुप्रीम कोर्ट के जजों को भी लोकपाल के अंतर्गत लाया जाए । साथ ही लोगों में यह विश्वास भी जगाया जाए कि अल्लाह जिसने सारे मनुष्यों को पैदा किया है वह हर समय हम सबको देख रहा है । हम सबको अंतत: उसके पास ही जाना है और अपने कर्मों का हिसाब देना है । उन्हीं कर्मों के आधार पर हमें इनाम या सज़ा मिलेगी ।

**हसनैन कैफ़**

भंडारा, महाराष्ट्र

## सच को झुठलाने की कोशिश

'कान्ति' का अयोध्या फ़ैसला अंक मिला । आपने बहुत ग़ज़ब का मैटर छापा है । यह सभी हिन्दू भाइयों की ज़िम्मेदारी है कि धर्म-जाति आदि से ऊपर उठकर मुस्लिम कल्चर तथा मुस्लिम भाइयों के साथ मुहब्बत का व्यवहार करें । श्री मुद्राराक्षस, डॉ॰ सूरजभान, योगेन्द्र यादव सभी नाम सफ़ाई दे रहे हैं कि हम सद्भावी हैं और सभी एक साथ मिल-जुलकर रहेंगे । तोड़-मरोड़ तो राजनीति संविधान और कोर्ट कर रहा है—ऐसा चलेगा नहीं ।

आपने प्रतिक्रिया मांगी है, पूरा अंक पढ़कर मैं तो केवल यह कहूंगा कि ख़ुदा सब देख रहा है, ख़ुराफ़ाती झूठे को सख़्त सज़ा देगा ।

मेरे होश उड़ गये हैं । बीमार तो था ही, तकलीफ़ और बढ़ गयी है । जब मस्जिद तोड़ी गयी थी तो मेरी पत्नी कामेश्वरी श्रीवास्तव कुछ बीमार थी, सोचते-सोचते ऐसा धक्का लगा कि हाय कहकर चल बसीं । मेरी भी हालत बुरी हो गयी है, मैं क्या प्रतिक्रिया दूं । इतिहास का बहुत बड़ा सच झूठला दिया गया है । आगे क्या होगा ख़ुदा जाने ।

**डॉ॰ कृष्ण मोहन**

लखनऊ (उ॰प्र॰)

## बुराइयों को सामाजिक स्वीकृति न दें

समाचार पत्रों में स्वास्थ्य मंत्री गुलाम नबी आज़ाद द्वारा समलैंगिकता को 'बीमारी' बताने तथा घातक रोग एड्स का मुख्य कारण बताने पर कुछ शैतानी ताक़तों द्वारा मचाया जा रहा हंगामा देखने को मिल रहा है । शैतान के ये एजेंट अपने कापको डेमोक्रेसी का समर्थक तथा सिविल सोसाइटी का सदस्य बता रहे हैं । माननीय मंत्री ने आंकड़ों से बताया कि सामान्य सेक्स प्रवृत्ति के लोगों में एड्स का संक्रमण 0.31 प्रतिशत है तथा समलैंगिक प्रवृत्ति के लोगों में यह आंकड़ा

7.3 प्रतिशत है ।

यह भी एक तथ्य है कि एड्स का रोग अफ़्रीक़ा में अमेरिकी समलैंगिकों के माध्यम से ही फैला था । वहां से सारे विश्व में फैला इस समय स्वयं भारत सरकार के आंकड़ों के अनुसार देश में एड्स के लगभग 45 लाख 'ज़िंदा बम' टिक-टिक कर रहे हैं जो 5 वर्ष के भीतर फटेंगे तो करोड़ों लोग मौत का शिकार होंगे जिनमें बेगुनाह अधिक और समलैंगिक शैतान कम होंगे । एक महत्वपूर्ण प्रश्न यह है कि कुछ लोगों की मौज-मस्ती तथा विकृत मानसिकता की सज़ा निर्दोष लोग क्यों भुगतें । हम जानते हैं कि एड्स फैलाने में सबसे महत्वपूर्ण रोल सेक्सकर्मियों का है । वहां से यह मौत का तोहफ़ा अपने परिवार वालों विशेषत: पत्नियों को दिया जाता है और यह तोहफ़ा गर्भ स्थित मासूम को भी संक्रमित कर देता है ।

सोचने का विषय है कि कुछ शैतानी मानसिकता रखने वालों के कुकृत्यों, जिसे वह अपनी स्वतंत्रता का अधिकार कहते हैं की घातक सज़ा बेगुनाह लोग क्यों भुगतें । यह कैसी सिविल सोसाइटी है अपने विकृत कार्यों से पूरी सोसाइटी को तबाह करने पर तुली हुई है । जिस प्रकार समाज में इस विकृत मानसिकता को दिल्ली हाईक़ोर्ट ने 2 वर्ष पूर्व अपने फ़ैसले से ताक़त पहुंचायी अब उसने धारा 377 को समाप्त करके समलैंगिकता को पुलिस के हस्तक्षेप से बाहर कर दिया पश्चिम से आने वाली हर गन्दगी को हलवा समझ कर खाने वाले तथाकथित सिविल सोसाइटी के ध्वजावाहक अपनी विकृत मानसिकता और शैतानी करतूतों का शिकार बनने वाले मासूमों तथा बेगुनाह पत्नियों की तकलीफ़ों तथा असमय मृत्यु पर क्यों सहानुभूतिपूर्वक विचार नहीं करते ? तथाकथित सिविल सोसाइटी रोज़ाना हज़ारों की संख्या में हो रही कन्या भ्रूण हत्या पर अपना आक्रोश नहीं दर्ज कराती ।

जिस UNAIDS संस्था की शह पर यह शैतान के एजेंट सारे संसार को नरक बनाना चाहते हैं उसके प्रबंध निदेशक माइकल सिडबे के विचारों पर ग़ौर कर लेना चाहिए जिसने दिल्ली के देह बाज़ार का दौरा करके कहा है कि देह व्यापार में लिप्त अधिकांश कम उम्र नारियां एड्स के ख़तरों को नहीं जानती हैं । मगर अब इस व्यापार में आने के बाद वह इससे बाहर कैसे निकल सकती हैं अधिकतर महिलाएं आर्थिक तंगी के कारण इस अमानवीय कार्य में लिप्त होती हैं । सिविल सोयाइटी इन महिलाओं के आर्थिक सुधार के लिए क्या प्रोग्राम रखती है ?

रहा यह तर्क कि यह तो बहुत पुराने समय से होता चला आया है तो बहुत पुराने समय से क़त्ल, चोरी, मिलावट, रिश्वत, बलात्कार सब कुछ होता चला आ रहा है तो क्या इन सब लानतों को भी क़ानूनी रूप देकर वेश्यावृत्ति तथा समलैंगिकता के समान क़ानूनी रूप दे देना चाहिए ? अगर मानवजाति का बड़ा हिस्सा समलैंगिक हो जाएगा तो संतानोपत्ति का आवश्यक कार्य कैसे होगा ? फिर जो आबादी का अनुपात असंतुलित होगा वह क्या-क्या गुल खिलाएगा ?

समाज के ताने-बाने को छिन्न-भिन्न करने वाली शक्तियों के विरुद्ध समाज के समस्त हितैषियों को आगे आकर 'काले धन' तथा 'भ्रष्टाचार' जैसे मुद्दों से भी उग्र विरोध करके शैतानी ताक़तों के मंसूबों को नाकाम करना होगा वरना कल जब 45 लाख इन्सानी बम फटकर एड्स फैलाना शुरू कर देंगे तो मैडकाऊ, प्लेग, बर्ड फ्लू जैसी महामारी बच्चों का खेल दिखेंगी तथा शहर के शहर क़ब्रिस्तान बन जाएंगे तथा शमशान घाटों पर चिताओं का तांता लग जाएगा । तब यह शैतान के एजेंट अपनी ग़लती स्वीकार करेंगे तो क्या फ़ायदा होगा ?

**डॉ॰ अजमल फ़ारूक़ी**
देहरादून

## स्तरीय

'कान्ति' के फ़रवरी 2011 अंक के लिए धन्यवाद ! इसका मुख्यपृष्ठ बहुत सुन्दर है, रचनाएं भी मूल्यवान है । कुल मिलाकर पत्रिका स्तरीय है । इसका स्तर जारी रहे यही हमारी कामना है ।

**मंडल विजय बेग**
संपादक 'होली'
भुवनेश्वर, उड़ीसा


**www.shoppinglanes.com**
Virtual lanes, real shopping

**Mr. S. Barvi**
Business Development Director
+91 9049185093
shahbazworld@gmail.com

Technologies & Solutions Pvt. Ltd
**Softronikx**
B.O.: L-81, A.F.E. Okhla,
New Delhi-25, M: 9958527318
H.O.: B-3, Kalpataru Plaza,
Bhawani Peth, Pune-02
contact@shoppinglanes.com,
www.softronikx.com

# पवित्र क़ुरआन : जीवंत भाषा में जीवंत ग्रंथ

❑ अब्दुल्लाह अडियार

वेद, बाइबल और अन्य धर्मों के ग्रंथों और क़ुरआन मजीद के बीच एक बड़ा अन्तर पाया जाता है ।

हिन्दू-धर्म की बुनियादी किताबें चारों वेद हैं और इन वेदों की भाषा संस्कृत है ।

संस्कृत का अर्थ ही होता है, नयी भाषा और निखारी हुई भाषा ।

अगर यह माना जाए कि वेद आरंभ काल ही से इन्सानों को मिले हैं, जैसा कि कुछ लोगों की धारणा है, तो इसका मतलब यह होता है कि वे अस्ल संस्कृत में नहीं, बल्कि संस्कृत से पहले की भाषा में रहे होंगे ।

बाद में आने वाली भाषाओं में जब वेद लिखे गये तो स्पष्ट है कि मूल वेद में और नयी भाषा में लिखे गये वेदों में अन्तर होना एक स्वाभाविक बात है ।

मगर क़ुरआन मजीद अरबी भाषा में अवतरित हुआ और बिल्कुल उसी अरबी भाषा में आज भी हमारे सामने मौजूद है । उसमें बाल बराबर भी कोई अन्तर नहीं पाया जाता ।

यहूदियों की किताब तौरात को देखिये । उसके अवतरण के शताब्दियों बाद इसराइलियों ने उसे संकलित किया ।

वास्तविकता यह है कि तौरात हज़रत मूसा (अलैहि०) पर इबरानी भाषा में अवतरित हुई थी । सैकड़ों साल के बाद उसको लिखा गया । फिर यह लिखा हुआ संग्रह नष्ट हो गया । केवल लातीनी और यूनानी भाषा में लिखे गये बाइबल ही शेष रहे । फिर इन भाषाओं में तौरात के अनुवाद से इसराइलियों ने फिर इबरानी भाषा में उसे रूपांतरित किया । इस तरह अनुवाद से अस्ल भाषा में परिवर्तित की जाने वाली किताब का क्या हाल होगा ? इसे हर व्यक्ति समझ सकता है ।

डेड सी (मृत सागर) के निकट क़ुमरान नामक गुफ़ा में इबरानी भाषा में लिखे हुए, जो काग़ज़ात मिले हैं, वे भी केवल बाइबल के कुछ इधर-उधर के हिस्से ही हैं । यह बाइबल की नवीनतम खोज है ।

अगर कोई ग्रंथ अनुवादों पर निर्भर न करते हुए अपनी मूल भाषा में जिसमें वह अवतरित हुआ है मौजूद है, तो वह केवल क़ुरआन मजीद है । यह विशेषता उसी को प्राप्त है ।

हज़रत ईसा (अलैहि०) पर अवतरित होने वाली किताब सुरयानी की एक बोली 'आरामी' भाषा में थी, लेकिन उसको पहले पहल यूनानी भाषा में लिखा गया । फिर यूनानी से लातीनी भाषा में अनुवाद किया गया, फिर विभिन्न


## SHATABDI FOUNDATION, GAYA

- Started Shatabdi Public School in 2001 with primary classes, has now developed into a 10+2 CBSE affiliated educational institution with quality education in modern subjects with moral orientation.
- Presently there are around 1000 students who are provided modern teaching facilities. The Foundation also adopts poor/ orphan students
- Under Upwardbound .scheme, another project has been launched for preparation of +2 students to compete in Entrance Test for Engineering, Medical and other professional & technical courses.
- Our immediate needs are — Purchase one more school bus, Construction of Prayer Hall & Purchase of 30 Computers.

**Ahle Khair Hazrat are Requested to Donate.**

*Kindly send your cheque/draft in favour of "Shatabdi Foundation, Gaya".*

*(ProfZ.H.Khan)* Chairman — *(Prof M. B. Zaman)* Secretary

**Shatabdi Public School, Katari Hill Road, Gaya-823001 (Bihar) INDIA**

भाषाओं में । बाइबल अपनी मूल भाषा में मौजूद नहीं है, बल्कि अनुवाद की भाषा ही में हमारे पास है । जबकि कुरआन मजीद जिस भाषा में अवतरित हुआ था, उसी भाषा में आज भी हमारे सामने मौजूद है ।

कुरआन मजीद के एक अन्य विशेष गुण पर विचार कीजिए ।

● हिन्दू धर्म के वेद अपनी मूल भाषा के बजाय संस्कृत में लिखे गये, लेकिन संस्कृत भी आज बोलचाल की भाषा नहीं है ।

● यहूदियों की धार्मिक पुस्तक की भाषा इबरानी शताब्दियों तक बोलचाल की भाषा न थी । (इसराईल ने इस भाषा को दोबारा अपनी जनता पर थोपा है)।

● इसी तरह हज़रत ईसा (अलैहि०) की भाषा 'आरामी' और गौतम बुद्ध की भाषा 'पाली' दोनों ही आज बोलचाल की भाषा नहीं है ।

जिन-जिन भाषाओं में आसमानी किताबों का अवतरण हुआ है, वे सारी भाषाएं आज मुर्दा हो चुकी हैं । इसके विपरीत कुरआन और केवल कुरआन ही बोलचाल की ज़िन्दा भाषा में ज़िन्दा किताब के रूप में हमारे सामने मौजूद है ।

कुरआन मजीद के एक और अन्य गुण विचार कीजिए :

● चार वेद ।

● यहूदियों का ग्रंथ तौरात ।

● हज़रत मसीह (अलैहि०) की इंजील ।

● गौतम बुद्ध का ग्रंथ 'तम्मा बुद्धम्' ।

ये सारे ही ग्रंथ जिन महान व्यक्तियों को मिले थे, उनके देहावसान के काफ़ी समय बाद इन ग्रंथों का संकलन हुआ । परन्तु कुरआन और सिर्फ़ कुरआन ही वह ग्रंथ है जिसको तत्काल ही क्रमबद्ध किया गया और जैसे-जैसे वह अवतरित होता गया वैसे-वैसे उसे क्रमबद्ध किया जाता और लिखा जाता रहा ।

प्यारे नबी हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) इस काम की स्वयं देख-रेख करते रहे और इस सिलसिले में विशेष ध्यान देते रहे । आप (सल्ल०) के देहावसान के बाद ही पहले ख़लीफ़ा हज़रत अबू बक्र (रज़ि०) ने पूरे कुरआन मजीद को नबी (सल्ल०) के बताए हुए क्रम के अनुसार एक जिल्द में एकत्र कर दिया । यह काम उन्होंने कुरआन की सुरक्षा के उद्देश्य ही से किया । जब कुरआन उतर रहा था, तो नबी (सल्ल०) के साथी उसको झिल्लियों और पत्तों पर लिखते और नबी (सल्ल०) को सुनाते गये । कुरआन के सही तौर पर लिखे जाने का पूरा ख़याल रखा गया ।

जैसे-जैसे यह पवित्र किताब अवतरित होती गयी, वैसे-वैसे विशेष सावधानी के साथ उसको ठीक-ठीक लिखने का प्रबंध होता रहा । इतने व्यवस्थित रूप में और सतर्कता के साथ लिखी जाने वाली किताब केवल कुरआन मजीद ही है ।

## सबको मिले न्याय की छाया

सबको मिले न्याय की छाया
सब के आंगन चांद उगे

प्रेम का सूरज मन के नभ पर
हर मौसम आलोक लुटाये
घृणा, द्वेष की रात घिनौनी
जाए तो फिर कभी न आये

वाणी अधरों से जो निकले
तो वह निकले नेह पगे

सदाचार के विस्तृत श्यामल
मेघ हमें सरसाएं निशि दिन
पर हित पर सेवा, उपकार
में बीतें जीवन के पल छिन

पाखंडी कर्मों से हटकर
शुचिता में मन भाव लगे

ऊंच-नीच के भेदभाव से
वंचित जन समूह सब अपना
'हर मानव ईश्वर वरदान'
कथन यही बस श्रेष्ठ समझना

भाव हृदय में मानवता का
और न अन्य विचार जगे ।

**अभिराम सत्यज्ञ जयशील**
हथुआ डाकघर, हथुआ

# न्याय : इस्लाम की महत्वपूर्ण एवं मौलिक शिक्षा

■ मौलाना सैयद हामिद अली

न्याय करना धर्म की सबसे महत्वपूर्ण और मौलिक शिक्षा है । न्याय यह है कि मनुष्य अल्लाह और उसके बन्दों के हक़ ठीक-ठीक अदा करे और अन्याय यह है कि वह अल्लाह का या उसके किसी बंदे का कोई हक़ मारे । शिर्क (अनेकेश्वरवाद) को क़ुरआन में इसीलिए 'सबसे से बड़ा अन्याय' कहा गया है, क्योंकि ऐसा करके इन्सान अल्लाह का सबसे बड़ा हक़ मार लेता है । जब वह अल्लाह के साथ किसी और को शरीक समझता है । अन्याय और अत्याचार यह भी है कि अल्लाह की आज्ञा का उल्लंघन करके मनुष्य स्वयं अपने ऊपर अन्याय करने लग जाए और इसके फलस्वरूप अपनी दुनिया और आख़िरत अपने ही हाथों तबाह कर ले । क़ुरआन मजीद में ज़ुल्म का शब्द प्रायः इसी अर्थ में इस्तेमाल हुआ है ।

'और हम ने (यातना देकर) उन पर ज़ुल्म नहीं किया (अवज्ञा और विद्रोह करके) उन्होंने स्वयं अपने ऊपर ज़ुल्म किया ।'

(हूद : 101)

'बंदों के हक़ और अधिकार' में न्याय और अन्याय का वर्णन सविस्तार आ चुका है ।

दया, सद्व्यवहार और लोक-सेवा भी धर्म की महत्वपूर्ण और मूल शिक्षा है और इसका भी 'बंदों के हक़' में विस्तार से उल्लेख हो चुका है ।

सच बोलना और सच्चाई को अपनाना भी धर्म की एक महत्वपूर्ण और मौलिक शिक्षा है । आदमी हर हालत में सच बोले, वह सत्य पर चलने वाला और सत्यवादी हो, उसका बाह्य जीवन उसके अन्तर के अनुकूल हो, ईमान का भी सच्चा हो, चरित्र का भी और जब बोले तो सच बोले । वह सिर से पैर तक सच्चाई में डूबा हो ।

जो व्यक्ति यह निश्चय कर लेता है कि वह सदा सत्य बोलेगा और झूठ के निकट भी न जाएगा, उसके लिए बुराई से बचना और नेकी के रास्ते पर चलना बहुत सरल हो जाता है । सच बोलने का परिणाम यह होता है कि उसकी आत्मा पवित्र हो जाती है और वह चरित्रवान हो जाता है, फिर वह अपनी ग़लतियों को छिपाने के लिए झूठ नहीं बोल सकता और मोमिन होने की वजह से वह अपराधों के निकट नहीं जा सकता । इसके विपरीत झूठ बोलने वाला व्यक्ति न केवल यह कि अपनी आत्मा को अपवित्र करता है और अपने आचरण को बिगाड़ लेता है, बल्कि अपने लिए अन्य कितनी ही बुराइयों के रास्ते भी खोल लेता है क्योंकि वह झूठ बोलकर बहुत-सी बुराइयां आसानी के साथ कर बैठता है और फिर उन्हें छिपा भी लेता है । प्यारे नबी (सल्ल०) ने कहा है–

'सच्चाई को अपनाओ क्योंकि सच्चाई नेकी की और वफ़ादारी की ओर ले जाती है और नेकी और वफ़ादारी जन्नत (स्वर्ग) तक पहुंचाती है । और जब इन्सान सदैव सच बोलता और सच्चाई की तलाश में रहता है तो वह समय आ जाता है कि वह ख़ुदा के यहां सत्यवादी लिख दिया जाता है और झूठ से दूर भागो क्योंकि झूठ अल्लाह की अवज्ञा की तरफ़ ले जाता है और अल्लाह की अवज्ञा नरक में पहुंचा देती है । और जब आदमी झूठ बोलता ही रहता है तो वह समय आ जाता है कि वह ख़ुदा के यहां 'असत्यवादी' लिख दिया जाता है ।' (बुख़ारी, मुस्लिम)

झूठी गवाही देना और झूठी क़सम खाना भी एक प्रकार का झूठ ही है, बल्कि बहुत ही बड़ा झूठ है । हदीस में है–

'महापाप ये हैं–अल्लाह के साथ किसी को शरीक करना, मां-बाप की बात न मानना, किसी प्राणी की हत्या

झूठी गवाही देना और झूठी क़सम खाना भी एक प्रकार का झूठ ही है, बल्कि बहुत ही बड़ा झूठ है । हदीस में है–'महापाप ये हैं–अल्लाह के साथ किसी को शरीक करना, मां-बाप की बात न मानना, किसी प्राणी की हत्या करना और झूठी क़सम खाना । एक दूसरी रिवायत में है कि झूठी गवाही देना ।'

करना और झूठी क़सम खाना । एक दूसरी रिवायत में है कि झूठी गवाही देना ।' (बुख़ारी, मुस्लिम)

कुरआन मजीद ने सच्चाई को ईमान वालों के मौलिक गुणों में बताया है–

'(ईमान वाले) सब्र करने वाले, सच बोलने वाले, कहा मानने वाले, ख़र्च करने वाले (खुदा की राह में), और रात की अंतिम घड़ियों में अपने गुनाहों की क्षमा चाहने वाले होते हैं ।' (3:17)

कुरआन ने केवल इतना ही नहीं कहा बल्कि उसने सत्यवादिता को प्रत्यक्ष धर्म की संज्ञा दी है क्योंकि धर्म इसके अलावा कुछ नहीं चाहता कि मनुष्य सिरे से पैर तक खुदा का सच्चा बन्दा बने । पवित्र कुरआन की सूरह बक़रा में ईमान वालों के गुणों का उल्लेख करने के बाद फ़रमाया–

'जो लोग ये गुण रखते हैं वही (ईमान के दावे में) सच्चे हैं और वही अल्लाह का भय रखने वाले और धर्मपरायण लोग हैं ।' (2:177)

अल्लाह के रास्ते में जान और माल का बलिदान देकर मनुष्य यह साबित कर सकता है कि वह अपने ईमान के दावे में सच्चा है । कुरआन में है–

'ईमान वालों में कितने ही ऐसे लोग हैं जिन्होंने अल्लाह से जो वादा किया था, उसे सच्चा कर दिखाया । उनमें से कुछ ने तो (जान, माल देकर) अपना अरमान पूरा कर लिया और कुछ प्रतीक्षा में हैं, उन्होंने (अपने इरादे में) परिवर्तन नहीं किया है ।' (33:23)

जो ईमान वाले सच्चाई की मूर्ति होते हैं और ईमान और चरित्र की दौलत से मालामाल होते हैं, कुरआन उन्हें 'सिद्दीक़' (सत्यवान) के नाम से सम्मानित करता है, जिनको नबियों के बाद सबसे श्रेष्ठ स्थान प्राप्त होता है–'जो लोग अल्लाह और रसूल का कहा मानेंगे वे उन लोगों के साथ रहेंगे जिन पर अल्लाह ने कृपा की है, ये लोग हैं नबी, सिद्दीक़, शहीद और नेक काम करने वाले और ये लोग कितने अच्छे साथी हैं ।' (4:69)

मुसलमान अगर सत्यवादी और सच्चे मुसलमान बनना चाहते हैं, तो उनके लिए ज़रूरी है कि वे सत्यवादी और सच्चे ईमान वालों की संगत ग्रहण करें । कुरआन मजीद में है–

'हे ईमान लाने वालो ! अल्लाह की अवज्ञा से बचो और सच्चे लोगों के साथ हो जाओ ।' (9:119)

सच्चे ईमान के मुक़ाबले में ढोंग तो हो सकता है ईमान नहीं । कोई व्यक्ति यह ढोंग कर सकता है कि ज़ुबान से तो वह धर्म और ईमान का दावा करे, लेकिन उसका दिल और उसका व्यवहार, ईमान से वंचित हो, इसी को कुरआन ने निफ़ाक़ (कपट) की संज्ञा दी है–

'जब मुनाफ़िक़ (कपटाचारी) तुम्हारे पास आते हैं तो कहते हैं, हम गवाही देते हैं कि तुम अल्लाह के रसूल हैं और अल्लाह जानता है कि आप अल्लाह के रसूल हो और अल्लाह गवाही देता है कि ये मुनाफ़िक़ बिल्कुल झूठे हैं ।' (63:1)


## Jamaat-e-Islami Social Service Society (Regd), Gaya

*The Society is in service in the field of education, health and Islamic understanding for the last 34 years. Our resources are limited, our task is tremendous. We seek your co-operation in the following activities:-*

1. **IQRA PUBLIC SCHOOL :** Besides 800 paying students, about 150 poor or orphan girls & boys are provided free education upto Matriculation with Islamic Carriculam.
2. **MILLAT HOSPITAL :** Every year about 15000 poor & needy patients are provided with free medical treatment & medicine besides other services.
3. **INTEREST-FREE SOCIETY :** Provides short-term loan without interest to needy people.
4. **ISLAMIC INFORMATION CENTRE :** Established at Bodh-Gaya, where lakhs of foreigners visit every year during Nov - March. The Centre provides reading materials on Islam, distributes Islamic literature and invites interested visitors for discussion besides inter-faith dialogue on regular basis.

**Kindly send your cheque/draft in favour of the society**

*(Q. Hoda)* Chairman — *(Prof. M. B. Zaman)* Secretary

**JISSS, Millat Campus, Leitch Road, Gaya-823001**

# हज़रत ज़ैनब बिन्त अली (रज़ि॰)

❖ तालिब हाशमी

(गतांक से आगे)

*(3)*

जब हज़रत अली (रज़ि॰) अपने ख़िलाफ़त के दौर में (सन 37 हिजरी में) मदीना मुनव्वरा छोड़कर कूफ़ा चले आये तो उनकी बेटी हज़रत ज़ैनब (रज़ि॰) और उनके पति हज़रत अब्दुल्लाह बिन जाफ़र (रज़ि॰) भी कूफ़ा आ बसे। कूफ़ा में हज़रत ज़ैनब (रज़ि॰) पूरी एकाग्रता के साथ पढ़ने-पढ़ाने के काम में जुट गयीं। कूफ़ा की महिलाएं उनके पास आतीं, उनसे कुरआन मजीद पढ़तीं, आयतों की व्याख्या सुनतीं और अपनी समस्याओं का समाधान पूछतीं।

एक बार हज़रत ज़ैनब (रज़ि॰) कुछ महिलाओं के सामने सूरह कहफ़ की व्याख्या कर रही थीं। तभी हज़रत अली (रज़ि॰) वहां पहुंच गये। और अपनी बेटी की व्याख्या सुनने लगे। जब हज़रत ज़ैनब (रज़ि॰) व्याख्या कर चुकीं तो अमीरुल मोमिनीन हज़रत अली (रज़ि॰) ने कहा :

"मेरी प्यारी बेटी, मैंने तुम्हारा बखान सुना और मुझे बहुत ख़ुशी हुई कि तुम अल्लाह के कलाम का मतलब इतने अच्छे ढ़ंग से बयान कर सकती हो।"

जल्द ही हज़रत ज़ैनब (रज़ि॰) के इल्म व फ़ज़्ल की चर्चा दूर-दूर तक फैल गयी। यह उनके जीवन का बेहतरीन दौर था। लेकिन अफ़सोस कि सुख और चैन की यह अवधि बहुत छोटी साबित हुई।

17 रमज़ान सन 40 हिजरी में हज़रत अली (रज़ि॰) कूफ़ा की मस्जिद में अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त के सामने सजदे में थे कि एक ख़ारजी अब्दुर्रहमान बिन मुलजिम ने उन पर घातक हमला किया और अपनी ज़हर से बुझाई हुई तलवार से भरपूर वार किया और अमीरुल मोमिनीन को बुरी तरह घायल कर दिया। इब्न मुलजिम को मुसलमानों ने गिरफ़्तार कर लिया।

हज़रत ज़ैनब (रज़ि॰) ने उसे देखा तो गुस्से से बेताब हो उठीं और उसे संबोधित करते हुए कहा : "ऐ ख़ुदा के दुश्मन, तूने अमीरुल मोमिनीन को घायल कर डाला !!"

इब्न मुलजिम ने कहा : "अमीरुल मोमिनीन को नहीं, तुम्हारे बाप को।"

हज़रत ज़ैनब (रज़ि॰) ने कहा : "अल्लाह ने चाहा तो उनका कुछ नहीं बिगड़ेगा।"

इब्न मुलजिम बहुत ही बेशर्मी से बोला : "तो फिर चीख़-पुकार क्यों करती हो ? ख़ुदा की क़सम, मैंने कई दिनों तक अपनी तलवार को ज़हर पिलाया है।"

उसी ज़हरीली तलवार के घाव से अमीरुल मोमिनीन हज़रत अली (रज़ि॰) को शहादत नसीब हुई। अपने पिता की मौत से उन पर ग़म का पहाड़ टूट पड़ा। लेकिन अभी उनके भाग्य में कुछ और भी सदमे झेलने बाक़ी थे। सन 49 हिजरी (या सन 50 हिजरी) में उनके बड़े भाई हज़रत हसन (रज़ि॰) भी शहीद कर दिये गये। उस समय हज़रत ज़ैनब (रज़ि॰) अपने पति और बच्चों के साथ मदीना मुनव्वरा में थीं।

ज़िलहिज्जा सन 60 हिजरी में सैयदना इमाम हुसैन (रज़ि॰) ने कूफ़ा वालों की दावत पर अपने परिजनों एवं अनुयायियों की एक छोटी-सी जमाअत के साथ मक्का से कूफ़ा की ओर कूच किया। हज़रत ज़ैनब (रज़ि॰) भी अपने दो बच्चों के साथ उस क़ाफ़िले में शामिल हो गयीं। हज़रत अब्दुल्लाह बिन जाफ़र (रज़ि॰) स्वयं तो उस क़ाफ़िले में शामिल न हो सके लेकिन उन्होंने अपनी पत्नी और बच्चों को उनके साथ जाने की अनुमति दे दी।

10 मुहर्रम सन 61 हिजरी को करबला की हृदयविदारक घटना घटी जिसमें हज़रत ज़ैनब (रज़ि॰) की आंखों के सामने उनके बेटे, भतीजे, भाई और अनेक रिश्तेदारों को सीरियाई सेना से लड़ते और एक-एक करके शहीद होते देखा। इस अवसर पर हज़रत ज़ैनब (रज़ि॰) ने जिस हौसले, साहस और धैर्य व संयम का सबूत दिया, इतिहास में उसकी मिसाल नहीं मिलती।

कहा जाता है कि 9 और 10 मुहर्रम के बीच की रात

# क़ादिरी दवाख़ाना की कामयाब यूनानी दवाएं

DIAL
033-2469-3173
033-2489-3539




किसी भी प्रकार के दर्द, चोट, मोच, गठिया, जलने, कटने और बच्चों की मालिश में बहुत ही लाभदायक।



## जाफ़रानी तेल®

## गैस्टिक के दर्द में?

## क़ब्ज़ ट्रोजन

अनपच, भूख की कमी, जिगर का दर्द, क़ब्ज़, सीने की जलन और पेटी की सभी बीमारियों में बहुत ही लाभदायक।




**Qadri Dawakhana**
B-18, NAWAB WAJID ALI SHAH ROAD, KOLKATA - 24,

DISTRIBUTORS:
DARYA BADI DAWAKHANA 393, E. R. Road, Pydhonie, Mumbai - 400 003 Ph: 022-2341-1957,
RELAX ENTERPRISES 3416, Bahishti Wada, No.1, Dhule, - 424 001 Ph: 02562-236952

में जब हज़रत इमाम हुसैन (रज़ि॰) की तलवार साफ़ की जाने लगी तो उन्होंने कुछ शेर पढ़े । हज़रत ज़ैनब (रज़ि॰) क़रीब ही थीं । उन्होंने जब इसे सुना तो रुहांसी हो उठी और अनायास ही बोल उठीं ।

"ऐ काश ! आज का दिन देखने के लिए मैं ज़िन्दा न होती । हाय, मेरे नाना, मेरी मां, मेरे बाप और मेरे भाई हसन सब मुझ को छोड़कर चले गये । ऐ मेरे भाई ! अल्लाह के बाद हमारा सहारा अब आप ही हैं, हम आपके बिना कैसे ज़िन्दा रहेंगे ?"

इमाम हुसैन (रज़ि॰) ने कहा, "ज़ैनब, धैर्य से काम लो ।"

हज़रत ज़ैनब (रज़ि॰) ने रोते हुए कहा : "मेरे भाई, आपके बदले में मैं अपनी जान देना चाहती हूं ।"

"ऐ बहन, सब्र कर । ऐ बहन तुम्हें ख़ुदा की क़सम है कि यदि मैं हक़ की राह में काम आ जाऊं तो मेरे मातम में गरेबान न फ़ाड़ना, चेहरा न नोचना और बैन न करना ।

10 मुहर्रम को पहले हज़रत अली अकबर बिन हुसैन (रज़ि॰) शहीद हुए । फिर अब्दुल्लाह बिन मुस्लिम बिन अक़ील (रज़ि॰), अहमद बिन हसन (रज़ि॰), अबू बक्र अब्दुल्लाह बिन हसन (रज़ि॰), जाफ़र बिन अक़ील (रज़ि॰), उमर बिन अली (रज़ि॰), उस्मान बिन अली (रज़ि॰) आदि एक-एक करके शहीद हो गये ।

अब केवल 7 लोग बचे थे । हज़रत ज़ैनब (रज़ि॰) ने अपने दोनों बच्चों औन (रज़ि॰) और मुहम्मद (रज़ि॰) को लड़ने के लिए भेजने की अनुमति चाही । हज़रत हुसैन (रज़ि॰) को कुछ हिचकिचाहट थी लेकिन हज़रत ज़ैनब (रज़ि॰) के आग्रह के सामने उनकी कुछ न चली । दोनों नवजवान रण भूमि में गये और लड़ते-लड़ते शहादत का जाम पी लिया । फिर तो सभी लोग शहीद हो गये और हज़रत हुसैन (रज़ि॰) अकेले बच गये । ज़ैनुल आबिदीन (रज़ि॰) बीमार थे । उनको अल्लाह और ज़ैनब (रज़ि॰) के हवाले करके सब्ते रसूल (सल्ल॰) अपने आख़िरी सफ़र पर रवाना हो गये । लड़ते-लड़ते ज़ख़्मों से चूर हो गये । तभी हिस्सीन बिन नुमैर ने एक भाला फेंका जो उनके गर्दन में जा लगा और मुंह से ख़ून का फ़व्वारा फूट पड़ा । अपने चुल्लू में थोड़ा-सा ख़ून लेकर आसमान की तरफ़ उछाला और फ़रमाया :

"ऐ अल्लाह, जो कुछ तेरे हबीब के नवासे के साथ किया जा रहा है, तुझी से उसकी फ़रियाद करता हूं ।"

हज़रत ज़ैनब (रज़ि॰) ने दूर से अपने भाई को इस हाल में देखा तो बेताब होकर एक टीले पर चढ़ गयीं और सीरियाई सेना के सरदार अम्र बिन सअद को पुकार कर कहा :

"ऐ अम्र बिन साअ्द ! क्या क़ियामत है कि अबू अब्दुल्लाह की हत्या की जा रही है और तुम देख रहे हो ।"

अम्र बिन साअ्द, आप (सल्ल॰) के मामूज़ाद भाई साअ्द बिन अबी वक़्क़ास (रज़ि॰) का बेटा था । सत्ता की लालच ने उसकी आंख पर परदा डाल रखा था, लेकिन हज़रत ज़ैनब (रज़ि॰) की ललकार सुनकर उसका सिर शर्म से झुक गया । लेकिन तब तक बहुत देर हो चुकी थी । सीरियाई सैनिकों ने करबला के शहीदों के शरीरों को घोड़ों की टापों से रौंद डाला । हज़रत हुसैन (रज़ि॰) का सिर काट कर नीज़े पर चढ़ाया और फिर अह्ले बैअ्त के ख़ेमे की ओर


Prop : Abid Hussain
09413037652
09252235194

Shop : Mujahid Hussain
09214747172

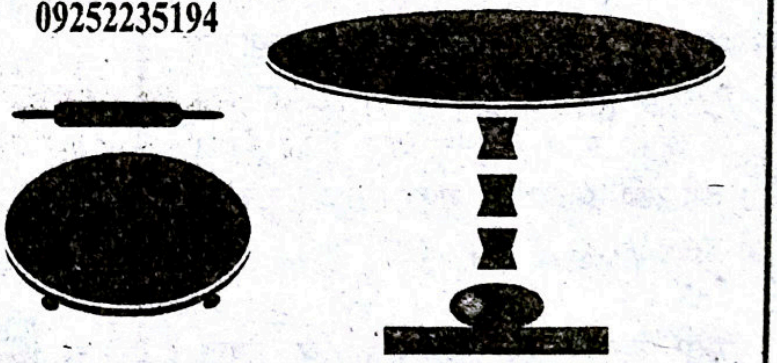

कान्ति मार्बल हैंडीक्राफ्ट

सभी प्रकार के वन पीस और ज्वाइंट पीस चकलों के निर्माता व थोक विक्रेता, मार्बल के फव्वारे तथा टेबल, टेलीफ़ोन स्टेंड, नोजल लैंप, गमले, घड़ी व फैंसी आइटम

Shop : Hotel Moti Mahal, Manglana Road, Makrana-341505
Fact : Bypass Mor, Opp : Sai Kirpa Petrol Pump, Makrana Road, Borawad (Raj.)

बढ़े । हज़रत ज़ैनब (रज़ि॰) उनके सामने खड़ी हो गयीं और कहा : "ख़ुदा की क़सम, जब तक मैं ज़िन्दा हूं उस बीमार को कोई क़त्ल नहीं कर सकता ।"

उनका इरादा देखकर वह अपने इरादे से बाज़ आ गया ।

*(4)*

12 मुहर्रमुल हराम को सेना में हुसैनी क़ाफ़िला के बचे-खुचे लोगों को क़ैद करके कूफ़ा की ओर चल पड़े । क़ैदियों में महिलाओं के साथ नन्हा और बीमार आबिद भी शामिल था । जब यह क़ाफ़िला कूफ़ा में दाख़िल हुआ तो कूफ़ा के लोग हज़ारों की संख्या में जमा हो गये । बेवफ़ा कूफ़ियों की भीड़ को देखकर शेरे ख़ुदा हज़रत अली (रज़ि॰) की बेटी बिफर पड़ीं और उनको संबोधित करते हुए कहा :

"ऐ कूफ़ियो, ऐ मक्कारो, ऐं वादे से फिर जाने वालो, अल्लाह करे तुम्हारी आंखें हमेशा रोती रहें । तुम्हारी मिसाल उन औरतों के समान है जो ख़ुद की सूत कातती और फिर उसे टुकड़े-टुकड़े कर देती है । तुमने ख़ुद ही मेरे भाई के हाथ पर बैअ्त किया और ख़ुद ही तोड़ डाला । तुम्हारे दिलों में खोट और कीना है । तुम्हारे स्वभाव में झूठ और दग़ाबाज़ी है । ख़ुशामद, शेखी और ज़ुबान से फिर जाना तुम्हारे प्रकृति में है । तुमने जो कुछ आगे भेजा है वह बहुत बुरा है । तुमने अल्लाह के रसूल (सल्ल॰) के नवासे को जो जन्नत में जवानों के सरदार हैं की हत्या की है । ख़ुदा का क़हर तुम्हारी प्रतीक्षा कर रहा है ।

ऐ कूफ़ा वालो ! तुमने बहुत गुनाह किया है । याद रखो तुम्हारा रब नाफ़रमानों की ताक में है । उसके हां देर है अंधेर नहीं ।"

*(5)*

दूसरे दिन क़ैदियों को कूफ़ा के गवर्नर उबैदुल्लाह बिन ज़ियाद के दरबार में पेश किया गया । हज़रत ज़ैनब (रज़ि॰) बहुत ही ख़स्ताहाल थीं । इब्न ज़ियाद ने पूछा : "यह औरत कौन है ?"

एक लौंडी ने जवाब दिया : "ज़ैनब बिन्त अली (रज़ि॰)।"

इब्न ज़ियाद ने कहा : "ख़ुदा का शुक्र है जिसने तुम्हें रुसवा किया ।"

हज़रत ज़ैनब (रज़ि॰) ने जवाब दिया : "ख़ुदा का शुक्र है जिसने अपने रसूल (सल्ल॰) के ज़रिया हमें इज़्ज़त बख़्शी । अल्लाह ने चाहा तो फ़ासिक़ रुसवा होंगे और झुटलाये जाएंगे ।"

इब्न ज़ियाद ने कहा : "तुम ने देखा तुम्हारे भाइयों और उसके साथियों का क्या हश्र हुआ ?"

"अल्लाह तआला ने उन्हें शहादत का दर्जा अता किया ।"

उसने झल्लाकर कहा, "बनू हाशिम के सबसे सरकश आदमी के क़त्ल से मेरा दिल ठंडा हो गया ।"

फिर उसकी नज़र हज़रत ज़ैनुल आबिदीन (रज़ि॰) पर पड़ी तो पूछा : "लड़के तुम कौन हो ?"

"अली बिन हुसैन (रज़ि॰) ।"

उसने अम्र बिन सअद से पूछा : "इसकी हत्या क्यों नहीं की ?"

"वह बीमार है ।"

इब्न ज़ियाद ने कहा, "उसे मेरे सामने मार डालो ।"

हज़रत ज़ैनब (रज़ि॰) ने कहा : "यदि उसकी हत्या करनी है तो मुझे भी मार डाल ।"

बहरहाल कुछ दिन तक वहां रुकने के बाद इब्न ज़ियाद ने क़ैदियों को यज़ीद के पास दमिश्क़ भेज दिया । (जारी)


**Niyaz Ahmed**

**Tel. : 2292062 (S)**
**M. : 98261-29877**

**Hosiery Centre**

**Wholeseller**

**Readymade & Handloom**

**B/43 Uttar Gangotri, Supela, Bhilai, Durg (C.G.)**

# सद्‌भावना के अभाव की पीड़ा

■ डॉ॰ रमा पांचाल
(महासचिव, वेलफेयर पार्टी ऑफ़ इंडिया)

'सद्‌भावना' शब्द बड़ा ही सुहाना लगता है । इसमें आशीर्वाद, दुआएं तथा आपसी सम्मान व परस्पर आंतरिक स्नेह की भावना का समावेश है । काश ! वर्तमान युग में हम भारतवासियों के मन में उपरोक्त सभी तत्व विद्यमान होते । आज सद्‌भावना दीपक लेकर ढूंढ़ने पर भी दिखायी नहीं देती । पाठक बंधुओं यह भारत है । हम यदि मुग़ालते में न रहें तो प्रत्येक स्थान पर, प्रत्येक स्तर पर और प्रत्येक परिस्थिति में असहिष्णुता चरमोत्कर्ष पर है । क्या समाज, क्या शिक्षा का क्षेत्र, क्या सांस्कृतिक, क्या राजनीति, क्या अर्थनीति और क्या सेवा का क्षेत्र हर दायरे में असमानता तथा विद्वेष भाव के वातावरण का ही बोलबाला है ।

हम सद्‌भावना को कहां ढूंढ़े ? वह तो भारतवर्ष से 3500 वर्ष पहले ही खदेड़ दी गयी है । एक वर्ष पूर्व की ही घटना का ज़िक्र करना लाज़िमी लगता है । आदिवासी माता-पिता ने बड़ी मुश्किलों से छोटी-सी नौकरी के आधार पर अपने हीरे से बेटे का मेडिकल में प्रवेश दिलवाया था । वह भी लगातार अध्ययनरत रहकर शिशु रोग विशेषज्ञ का कोर्स पूरा करके (इंटर्नशिप) व्यावहारिक क्षेत्र में क़दम रख चुका था ।

अचानक एक दिन रात को अपने लैपटॉप के माध्यम से पढ़ाई कर रहा था कि योजनाबद्ध तरीक़े से उसके दो साथी कमरे में आये और उसे विष का इंजेक्शन देकर कहा कि अब सो जाओ, अधिक पढ़ाई सेहत के लिए ठीक नहीं होती हमने तुम्हें नींद का इंजेक्शन लगा दिया है चिंता मत करो टॉप पर तुम्हीं रहोगे । प्रातःकाल विदित हुआ कि वंचित वर्ग का यह टॉपर विद्यार्थी मौत की आग़ोश में समा चुका है । एक दिन होहल्ला मचा, साथियों ने उसकी प्रशंसा में क़सीदे पढ़े और अंत में निर्णय दिया कि वह तो डिप्रेशन में था इसलिए स्वयं ही नींद का इंजेक्शन लगाकर मौत को गले लगा लिया । बस !

हमारे लिए 3500 वर्ष पूर्व प्रतिबंधित शिक्षा के द्वार राष्ट्रपिता ज्योतिबा फुले, अपनी पत्नी के सहयोग से अंग्रेज़ों की सत्ता के समय में खोलने में सफल हुए उनके शिष्य बोधिसत्व डॉ॰ भीमराव अम्बेडकर ने उनके शिक्षा सूत्र को संविधान में स्थान देकर शैक्षणिक ग़ैरबराबरी का ख़ात्मा करके देश की व्यवस्था में व्याप्त असमानता को आपसी सद्‌भावना के वातावरण में तब्दील करने का अथक प्रयास किया । संविधान में समता, बंधुता और स्वतंत्रता का समावेश करने के साथ ही शिक्षा संगठन व संघर्ष का मंत्र भी दिया ।

सद्‌भावना की स्थापना के लिए अनैतिकता, आतंकवाद और हिंसक गतिविधियों द्वारा सामाजिक वातावरण को दूषित करने वाले तत्वों को समाप्त करने हेतु हमें उनके मन में भी इस देश के मूलनिवासियों के प्रति सद्‌भावना का बीजारोपण करना होगा । क्योंकि दुर्भावना युक्त विचारधारा का इतिहास बड़ा पुराना है । संत कबीर साहब ने तो तथाकथित वर्णाभिमानियों का बहिष्करण करते हुए कह दिया था कि

मैं कहता हूं आंखन की देखी तू कहता है कागद की लेखी
मैं कहता हूं सुरझावन की तू रहा उरझाई, रे
तेरा मेरा मनवा कैसे एक होई रे ।

उनका अपना उद्देश्य था कि जम्बूद्वीप के निवासियों के बीच में ही आपसी सद्‌भावना क़ायम की जाए । क्योंकि वर्णवादी तो कभी भी सद्‌भावना उत्पन्न नहीं होने देंगे इसलिए उन्होंने अपने अभियान को सुचारू संचालित करने हेतु कहा था कि–

कबीर खड़ा बाज़ार में लिए लकुटी हाथ ।
जो घर जारे आपनो चलो हमारे साथ ।।

वे अपने साथियों को निश्चित ही आपसी सद्‌भावना की स्थापना के अभियान में लगाना चाहते थे । आज के परिवेश में वे मूल भारतीयों में ही प्रेम का ढाई आखर पढ़ाने के लिए तैयार खड़े थे और चौराहे पर खड़े होकर अपने साथियों को आवाज़ लगा रहे थे । अपनी 120 वर्ष की आयु तक उन्होंने आपसी सद्‌भावना की स्थापना के लिए 'बोली' के शब्दों पर अनेक साखियां कहीं । जैसे–

बोली तो अनमोल है जो तू बोले जान ।
घट भीतर तराजू एक रखी है तोलकर बाहर आन ।।

उन्होंने ऐसी वाणी बोलने का आह्वान किया जिससे आपस में सद्भावना पैदा हो जाए । बीजक की एक साखी में कहा है कि–

ऐसी वाणी बोलिये मन का आपा खोय ।
औरन को शीतल करे आपहु शीतल होय ।।

दुर्भावना को सींचने वालों ने उन्हें 52 बार मारने और मरवा डालने के प्रयास भी किये क्योंकि वे आदिनिवासियों में आपसी स्नेहभाव उत्पन्न करना चाहते थे तथा ब्राह्मणवाद के पाखंड के विरुद्ध जनजागरण करते थे ।

उनके पश्चात् ज्योतिराव फुले द्वारा वंचितों के लिए किये जा रहे शैक्षणिक कार्यों से दुराभावी ब्राह्मणवादी लोगों के मन को बड़ी चोट लग रही थी । इसलिए उनको मरवा डालने के लिए जिन लोगों को 1000 रुपये देकर उन्होंने भेजा था । फूले जी ने उनके मन में अपने सद्भावों का बीजारोपण करके उनको अपना अंगरक्षक बनने हेतु समर्पित कर लिया । अब यदि हम बाबा साहब अम्बेडकर के ही उदाहरण को लें तो मुट्ठी भर साढ़े तीन प्रतिशत लोगों ने उनके प्रति दुर्भावना का इतना ज़हर उगला कि वे जीवनभर उससे दुखी रहे और अंत में पीड़ित मन से उन वर्णाभिमानियों से पल्ला झाड़ा ।

सद्भावना के अभाव की पीड़ा हम विगत चार हज़ार वर्षों से भोग रहे हैं । देश आज़ाद हुआ और संविधानानुसार विभिन्न विभागों का जब गठन हुआ तब गृहमंत्रालय के अंतर्गत अपराध अन्वेषण ब्यूरो भी बनाया गया, जो देश में घटित अपराधों उनके प्रकारों तथा कारणों का विश्लेषण करके उसका रिकार्ड संरक्षित रखता है । आयोगों का भी गठन किया गया किंतु 1980 के पश्चात के लगभग सभी आयोगों को पंगु बनाकर रखा है । वे मात्र शिकायतें संग्राहक और सलाहकार मंडल का अथवा जांच करके दोनों सरकारों को (राज्य व केन्द्र) सूचनाएं भेजकर पोस्टमैन का कार्य ही कर सकते हैं । उन्हें कार्रवाई करने के लिए अधिकार से वंचित कर रखा है । यही कारण है कि देश के वंचित लोगों के साथ अपराधों में निरंतर वृद्धि होती जा रही है और अपराधियों पर राजनैतिक पार्टियों का वरदहस्त भी बढ़ता जा रहा है । अपराधों की तुलनात्मक स्थिति से यह बात सिद्ध हो जाती है ।

### अन्य आंकड़े

1. सामूहिक हत्याएं–सन 1968 में तमिलनाडु में बरेली गांव में 42 दलितों को जलाया ।

2. 1977 में बिहार में बेलछी में 11 दलितों को आग में झोंका गया ।

| सन | 1981 | 1982 | 1983 | 1984 | 1985 | 1986 | 1987 | 1988 | 1990 |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| अपराध | | | | | | | | | |
| हत्या | 603 | 647 | 686 | 712 | 650 | 724 | | | |
| गंभीर चोट | 1752 | 1749 | 1661 | 1802 | 1690 | 1719 | | | |
| बलात्कार | 863 | 891 | 902 | 1004 | 943 | 1012 | अप्राप्त | अप्राप्त | अप्राप्त |
| आगज़नी | 1441 | 1167 | 1171 | 1105 | 1178 | 1234 | | | |
| अन्य अपराध | 13091 | 14702 | 14603 | 15654 | 14967 | 14672 | | | |
| योग | 17750 | 19747 | 18083 | 20277 | 19428 | 19361 | | 15207 | 16810 |

(स्रोत : 1. 1981 से 1985 तक के आंकड़े अजा जजा आयोग से । 2. 1988–1990 तक के आंकड़े 'देशबंधु' अक्तूबर 05 से)

3. 1978 में तमिलनाडु के बिल्लूपुर गांव के 12 दलितों को हाथ पैर बांधकर तालाब में फेंक दिया ।

4. 1978 में ही आगरा में 10 दलितों को अम्बेडकर ज्यंती मनाने पर मार डाला गया ।

5. 1981 नवम्बर माह में मैनपुरी ज़िले के देहुली गांव में 25 दलितों को मार डाला ।

6. 1982 में दि॰ 24 जनवरी को म॰प्र॰ के दुर्ग ज़िले के सतरा गांव में 14 सतनामियों की हत्या की गयी, जिनमें एक गर्भवती महिला और तीन वर्ष का बालक भी था ।

दलितों पर बढ़ते अन्याय अत्याचारों की बढ़ती घटनाओं को दृष्टि में रखकर अजा जजा के 70 सांसदों ने माननीय राष्ट्रपति (भारत सरकार) से मिलना चाहा तो तत्कालीन केन्द्रीय गृहमंत्री बूटासिंह और तात्कालीन श्रममंत्री श्री

रामविलास पासवान से मिलने से इन्कार करके यह बता दिया कि अजा जजा के सांसदों की औक़ात क्या है ।

(सन्दर्भ : अजा जजा के संवैधानिक अधिकार सी०आर० घिरही, पृ० 76-77)

मध्य प्रदेश में भी सद्भावना के अभाव में अजा जजा पर होने वाले अत्याचारों में कमी नहीं है। यहां 2005 से 2006 एक वर्ष की घटना से ही विदित होगा कि अजा जजा की महिलाओं पर अपराधों में किस प्रकार की वृद्धि हुई है, दृष्टव्य है–

**म०प्र० में अजा और अजजा पर अपराध सबसे ज़्यादा**

महिलाओं, अनुसूचित जाति और जनजाति पर होने वाले अपराधों के मामले में म०प्र० की स्थिति अन्य प्रदेशों की तुलना में बहुत ख़राब है ।

म०प्र० में जहां अनुसूचित जनजाति पर होने वाले अपराध सबसे ज़्यादा हैं, वहीं अनुसूचित जाति पर होने वाले अपराधों के मामले में म०प्र० देश में दूसरे नम्बर पर हैं । इसी तरह 2006 में महिलाओं पर होने वाले अपराधों के मामले में म०प्र० देश में चौथे स्थान पर रहा ।

वर्ष 2005-2006 के अपराधों के आंकड़ों को देखा जाए तो अनुसूचित जनजाति पर होने वाले अत्याचार अपराधों में अव्वल रहे । देश भर में 2005 में इनके विरुद्ध पर जो अपराध हुए थे, उनमें से 28.3 फ़ीसदी अकेले म०प्र० में हुए । यह प्रतिशत 2006 में कम हुआ, लेकिन यह भी एफ०आई०आर० नहीं करने के अघोषित आदेश के कारण । इसके बाद भी अजजा पर होने वाले अपराधों के आंकड़े देश में दर्ज अपराधों का एक चौथाई रहे । अनुसूचित जाति पर होने वाले अपराधों के मामले में उत्तर प्रदेश और मध्य प्रदेश की स्थिति बहुत ख़राब है ।

इन प्रदेशों में अजा पर होने वाले अपराध की संख्या देश भर में दर्ज अपराधों का एक तिहाई होती है । म०प्र० में जहां ये 2005 में 16.7 प्रतिशत अपराध हुए, वहीं 2006 में यह प्रतिशत 15.6 रहा ।

| श्रेणी | वर्ष 2005 | वर्ष 2006 |
|---|---|---|
| महिला | 155553 | 164765 |
| आंध्र प्रदेश | 20819 | 21484 |
| उत्तर प्रदेश | 14875 | 16375 |
| महाराष्ट्र | 13370 | 14452 |
| म०प्र० | 145239 | 14321 |
| अजा | 26127 | 27070 |
| उ०प्र० | 4397 | 4960 |
| म०प्र० | 4356 | 4214 |
| अजजा | 5713 | 5791 |
| म०प्र० | 1615 | 1498 |
| राजस्थान | 663 | 967 |

(स्रोत : राष्ट्रीय अपराध अभिलेख ब्यूरो की रिपोर्ट)

**महिला अपराधों में चौथा स्थान**

देश भर में महिलाओं पर होने वाले अपराधों में आंध्र प्रदेश की स्थिति सबसे ज़्यादा ख़राब है । इस मामले में म०प्र० की स्थिति कुछ बेहतर है । यहां वर्ष 2005 की तुलना 2006 में क़रीब आधा फ़ीसद की कमी आयी है, लेकिन संख्या को देखें तो यह अंतर क़रीब दो सौ है । जबकि देश में 2005 की तुलना में 2006 में क़रीब आठ हज़ार अपराध कम हुए । म०प्र० का स्थान 2005 में तीसरा था, लेकिन 2006 में महिलाओं पर होने वाले अपराधों की संख्या कम होने से प्रदेश चौथे स्थान पर खिसक गया ।

**अपराधों की स्थिति**

सद्भावना के अभाव की पीड़ा को ऊपर के तीन वर्णों को छोड़कर देश के मूल निवासियों को भोगना पड़ रहा है। इनमें वे लोग भी समाविष्ट हैं जो वर्चस्ववादी व्यवस्था की अमानवीयता के शिकार थे और उन्होंने जहां भाईचारा, ममत्व तथा आत्म-सम्मान का माहौल देखा वहां उसी धर्म में धर्मांतरित हो गये ।

पिछले 60 वर्षों से सद्भावना के अभाव की पीड़ा से रूबरू हो रहे हैं अजा, जजा, पिजा, धार्मिक अल्प-संख्यक तथा भटक-भटककर अपनी दो जून की रोटी कमाने वाले । वे जो मनमाने ढंग से अपराधी घोषित किये गये समुदाय के पुरुष व महिलाएं भी सद्भावना के अभाव के परिणामस्वरूप तथाकथित उच्चवर्णीय षड्यंत्रकारियों द्वारा बड़े पैमाने पर किये जा रहे अत्याचारों को सहने के लिए बाध्य हैं ।

आज की तारीख़ में वे किसके सामने दुखड़ा रोएं, यह एक विचारणीय प्रश्न है ? क्योंकि प्रजातंत्र के चारों स्तंभों पर (न्यायपालिका, विधायिका, कार्यपालिका तथा मीडिया) में वे ही लोग पैर फैलाये बैठे हैं । उन्होंने इन चारों दरवाज़ों को वंचित तबक़ों के लिए अर्थ, समाज और अपनी दुर्भावनायुक्त राजनीति के द्वारा बंद कर रखा है । इसलिए सद्भावना के अभाव की पीड़ा से मुक्ति के लिए हमें आगे आना होगा ।

# राष्ट्रवाद के फॉसीवादी सरोकार

■ डॉ॰ मुहम्मद अहमद

वन पर्व में ब्राह्मण-क्षत्रिय एका पर ज़ोर दिया गया है : "ब्रह्म क्षत्र से मिश्रित है और क्षत्र ब्रह्म से । दोनों मिलकर शत्रु का उसी प्रकार नाश कर सकते हैं, जिस प्रकार आग और हवा मिलकर जंगल का नाश कर डालते हैं । ब्राह्मणत्व में अतुल्य दृष्टि होती है और क्षत्रिय में अद्वितीय बल । अगर दोनों साथ-साथ चलते हैं तो संसार प्रसन्न रहता है ।"

इसके बावजूद ब्राह्मणों की स्थिति क्षत्रियों से मज़बूत ही रहती है । इस सिलसिले में महाभारत के एक वाक़िये का यहां ज़िक्र कर देना ज़रूरी महसूस होता है । परशुराम ने, जो कि ब्राह्मण थे, सारी धरती से जब क्षत्रियों का नाश किया, तो उनकी औरतों ने ब्राह्मणों ही की तरफ़ रुजू किया । महाभारत में आया है :

तदा निःक्षत्रिये लोके भार्गवेण कृते सति,
ब्राह्मणान् क्षत्रिया राजन् सुतार्थिन्योऽभिचक्रमुः
तेभ्यश्च लेभिरे गर्भं क्षत्रिपास्ताः सहस्रशः ॥

यानी, "जब भृगु पुत्र परशुराम ने पृथ्वी को क्षत्रियविहीन कर दिया, तो क्षत्राणियां पुत्र प्राप्ति की कामना से ब्राह्मणों के पास गयीं । उनसे हज़ारों क्षत्राणियों ने गर्भ प्राप्त किया ।" वैसे महाभारत में नियोग एक आम बात थी ।

इसका फ़ायदा वैश्यों और शूद्रों ने भी उठाया :

ततः शूद्राश्च वैश्याश्च यथा स्वैरप्रचारिणः ।
अवर्तन्त द्विजाग्रयाणां दारेषु भरतर्षभ ॥ (शांति पर्व, 49-39), यानी, उसके बाद शूद्रों और वैश्यों ने स्वच्छन्द होकर द्विजों (बाह्मणों, क्षत्रियों) की पत्नियों के साथ व्यवहार किया ।

सभा पर्व (5-34) में स्पष्ट कर दिया गया है कि "सब वर्णों को ब्राह्मणों के ही निरीक्षण में रखा जाए ।" क्योंकि ब्राह्मण ही से बाक़ी तीनों वर्ण बनाये गये हैं । इन्द्र के बारे में कहा गया है कि वे पहले ब्राह्मण थे, बाद में क्षत्रिय हो गये, क्योंकि उन्होंने अपनी ही जातियों के 99 लोगों को क़त्ल कर डाला था । (शांति पर्व 307-49)

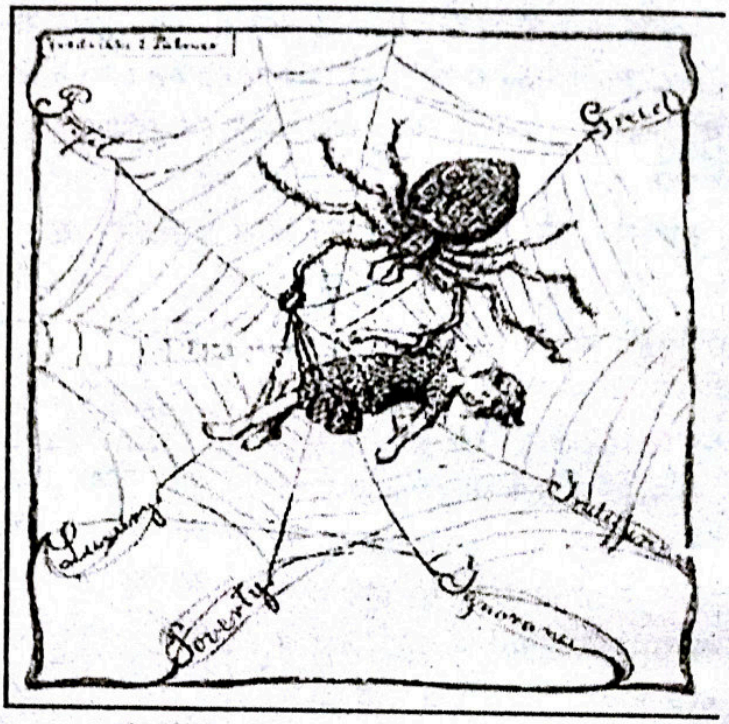

क़त्ल किये जाने के कारण उनका दर्जा घटाया गया । महाभारत में जहां कर्म के आधार पर वर्ण व्यवस्था की बात बहुत खुलकर आयी है, लेकिन इस पर क्या अमल हुआ—यह बात स्पष्ट नहीं होती । ब्राह्मण से शूद्र होने का या शूद्र से ब्राह्मण होने की जो बात है, वह पुराणों तक ही सीमित है । ब्राह्मण ग्रंथों में भी कुछ ऐसे उदाहरण हैं : (1) ऐतरेय ऋषि दासी के बेटे थे । वे पढ़-लिखकर विद्वान तो हुए, लेकिन ब्राह्मण नहीं बन सके । हां, ब्राह्मण के लगभग समान बन गये थे । और (2) कवष ऐलूष भी दासी-पुत्र थे । ऐतरेय ब्राह्मण (2-19) में आया है कि ऋषियों ने इन्हें दासी पुत्र कहकर यज्ञ से निकाल दिया था । फिर इन्होंने सारे वेद का अध्ययन किया । तब ऋषियों ने उन्हें बुलाकर अपना आचार्य बनाया और यज्ञ किया । (इस तरह के कुछ पौराणिक हवालों के लिए ध्यातव्य है भागवत पुराण (9-2-17) से 9-2-23 तक और 9-6-3) आदि।)

### शूद्रों की स्थिति

ब्राह्मण, क्षत्रिय और वैश्य भले ही कर्म के आधार पर पराचर वर्णों में तब्दील हो जाएं, मगर शूद्र तो जन्म से नीच

# धर्माधार और राष्ट्रवाद



ही होता है । इस हालत में शुद्र सम्मान का अधिकारी नहीं हो सकता । सभा-पर्व (38-17) में आया है :

ज्ञान वृद्धो द्विजातीनां क्षत्रियाणां बलाधिकः ।
वैश्यानाम् धान्यधनवान् शुद्राणामेव जनमतः ।।

यानी, द्विजों में जो अधिक विद्वान हो, क्षत्रियों में जो अधिक बलवान हो, वैश्यों में जो अधिक धनवान हो, वह सम्मान का पात्र होता है । जन्म से सिर्फ़ शूद्र ही नीच होता है ।

शूद्र की पैदाइश ही बाक़ी तीनों वर्णों की सेवा के लिए हुई है । शांति पर्व (72-5) में साफ़ तौर पर कहा गया है :

वर्णानां परिचर्यार्थं त्रयाणाम् भरतर्वभ ।
वर्णः चतुर्थः पश्चात्तु पद्भयां शूद्रो विनिर्मितः ।।

यानी, "तीनों वर्णों की सेवा करने के लिए बाद में पैर से चौथे वर्ण (शूद्र) का निर्माण किया गया ।" गीता (9:32) में शूद्र के साथ वैश्य और औरत को भी पाप योनि से पैदा बताया गया है । गीता महाभारत का एक हिस्सा है । महाभारत में शूद्र को आदेश दिया गया है :

"नित्यं त्रयाणां बर्णानां शुश्रुषा शूद्र उच्यते"

यानी, "शूद्र के लिए रोज़ ही तीनों वर्णों की सेवा करना चाहिए, ऐसा कहा गया है ।"

जनसेवा का काम अंजाम देने वाले चिकित्सक और लेखक और बेकार पढ़ने वाले सब शूद्र हैं । महाभारत में आया है : "चिकित्सकः काण्ड पृष्ठ : ...सांवत्सरो वृथाह पायी सर्वे ते शूद्र-सम्मितः ।" इसका मानी उपयुक्त ही है । इनके साथ कैसा बर्ताव होता था, वह इस घटना से स्पष्ट हो जाता है : अश्विनी कुमारों (वैद्यों) ने च्यवन ऋषि को इलाज से जवान बना दिया, तो च्यवन ने खुश होकर आश्विनी कुमारों को सोम रस पिलाने के लिए यज्ञ किया । इससे इन्द्र नाखुश हुए और कहा "ये दोनों इलाज करने वाले, कर्म करने वाले और मनुष्यों के बीच घूमने वाले सुन्दर होने पर भी सोम पान के अधिकारी कैसे हो सकते हैं । (वन पर्व 123-12)

शूद्र ज्ञानार्जन के भी अधिकारी नहीं थे । आदि पर्व के अनुसार हिरण्यधनु के बेटे एकलव्य ने द्रोण से धनुर्विद्या का प्रशिक्षण प्राप्त करने के बारे में सोचा । वे उनके पास गये, लेकिन द्रोण ने उसके शूद्र होने के कारण प्रशिक्षण से इन्कार कर दिया । एकलव्य लगन के पक्के थे । उन्होंने द्रोण की मूर्ति बनाकर उन्हें गुरु के रूप में मानकर धनुष चलाने का ज्ञान प्राप्त कर लिया । इसमें वे इतने माहिर हो गये कि अर्जुन उनसे पिछड़ गये । अर्जुन ने द्रोण से यह शिकायत की कि आपने एकलव्य को उनसे ज़्यादा माहिर क्यों बना दिया । आपने तो यक़ीनदिहानी की थी कि उनसे ज़्यादा किसी को ज्ञान नहीं देंगे । इस पर द्रोण एकलव्य के पास गये और गुरु दक्षिणा के नाम पर उनके दाहिने हाथ का अंगूठा कटवा लिया, ताकि वे धनुष का इस्तेमाल न कर सकें । इस घटना से यह स्पष्ट हुआ कि एकलव्य ने कर्म किया, जिसकी उसे सज़ा मिली, लेकिन क्या वह क्षत्रिय बन सका ? क़तई नहीं ।

कहा जाता है कि द्रोण ने कर्ण को धनुर्विद्या सिखायी थी, जो कि शूद्र के बेटे थे । वास्तव में वे पाण्डवों की मां कुंती की औलाद थे, जो शादी के पहले ही पैदा हुए थे । लोकलाज के भय से कुंती ने इन्हें सन्दूक़ में रखकर यमुना

नदी में फेंकवा दिया था। सूत जाति के अधिरथ नामी शख़्स की पत्नी ने उन्हें नदी से निकाला और पाला-पोसा। इसी वजह से कर्ण को सूत-पुत्र कहते हैं, मगर क्या कोई हक़ीक़तपसन्द यह मान सकता है कि वे सूत नामी शूद्र के बेटे थे ? कर्ण के कुंती का बेटा होने की बात महाभारत में साफ़ तौर पर आती ही है, विष्णु पुराण (4-18-27-8) और वायु पुराण (99-118) आदि में भी मिलती है।

शूद्रों को यूं ही नहीं छोड़ दिया गया कि उनका कुछ ख़्याल ही न किया जाए। शांति पर्व (60-33/34) में कहा गया है : "वर्णों में जिसे शूद्र कहा जाता है उसका भरण पोषण अवश्य ही किया जाना चाहिए। जो शूद्र सेवा करे, उसे छाता, ओढ़ना, टोपी, पंखा आदि और जाने के लिए सवारी दी जानी चाहिए। लेकिन ये चीज़ें ऐसी हों जो इस्तेमाल के क़ाबिल न रह गयी हों और फटी हों। इन्हें शूद्र ही को दिया जाना चाहिए। यही उनका धर्म-धन होता है।" (लगभग ऐसी ही बात मनुस्मृति (10-125) में भी आयी है।) शूद्र की अपनी कोई जायदाद नहीं होती (शांति 60-37)। शांति पर्व (60-35) में है :

"अगर शूद्र का मालिक संन्यास ले ले तो धर्म जानने वाले विद्वानों के अनुसार उस शूद्र को कल्पवृत्ति करनी चाहिए यानी अपने मालिक के साथ ख़ुद भी जंगल में रहना चाहिए। दरिद्रों (शूद्रों) का भोजन तेल बताया गया है, जबकि मालदारों का गोश्त। कहा गया है : "आढ्यानां मांस परमं...तैलोत्तर दरिद्राणां भोजनं भरतर्षभ।

महाभारत में ऐसे और कई हवाले मिलते हैं, जिनसे शूद्र की हैसियत स्पष्ट होती है। कुछेक स्थान पर ही उनकी बेहतरी के सिलसिले में बातें मिलती हैं, मगर कुल मिलाकर शूद्र शूद्र ही रहता है। उस पर बाक़ी तीनों वर्ण हावी रहते हैं।

**परदे का रिवाज हरेक सभ्य समाज के लिए ज़रूरी है। ऋग्वेद ही से यह भी मालूम होता है कि दासों की पत्नियों के बीच परदे का रिवाज था। ऋग्वेद में है : "दास पत्नी रहि गोपा अतिष्ठन" यानी "दास-पत्नियां एकांत में छिपाकर सुरक्षित रखी जाती थीं।" ब्रह्मवैवर्त पुराण (18-117) में तो परदा पाकीज़गी की निशानी बतायी गयी है। महाभारत के आदि पर्व (73-6) में औरत की हिफ़ाज़त के लिए कहा गया है : "कुमारी अवस्था में पिता, युवावस्था में पति और वृद्धावस्था में पुत्र औरत की हिफ़ाज़त करता है। औरत आज़ादी की पात्र नहीं है।" वेदों में 'अवगुंठन' शब्द विशेष रूप से परदे के सिलसिले में आया है।**

### औरतों की स्थिति

वैदिक काल ही से औरतों की स्थिति बहुत ख़राब थी। औरतों के तरह-तरह के अश्लील खेल होते थे। डॉ॰ नामवर सिंह ने इतिहास के प्रसिद्ध लेखक विश्वनाथ काशीनाथ राजवाड़े की किताब 'भारतीय विवाह संस्था का इतिहास' का हवाला देते हुए लिखा है : "यज्ञ की अवधारणा पर टिप्पणी करते हुए उन्होंने (राजवाड़े) जलती हुई आग के चारों तरफ़ बैठे हुए लोगों के सामने बिल्कुल खुले में औरत-मर्द के बीच रतिक्रिया के अनेक उदाहरण दिये हैं और इसे एक मान्य प्रथा की संज्ञा दी है। ... अश्वमेध यज्ञ के संदर्भ में तो यजुर्वेद संहिता में एक अद्‌भुत कथा का वर्णन मिलता है। इस कथा के अनुसार ऋत्विज (पुरोहित) और सबकी मौजूदगी में पटरानी (राजा की सबसे बड़ी रानी) को अश्वमेध यज्ञ के घोड़े के साथ संभोग करना होता था। वैदिक मंत्रों में इस पूरे प्रकरण को जिस प्रकार चित्रित किया गया है, उससे आभास होता है कि इसे एक उत्सव या ड्रामा के एक दृश्य के तौर पर मान्यता प्राप्त थी।"

('राष्ट्रीय सहारा' हिन्दी, नयी दिल्ली, 29 अगस्त (इतवार), 1993)

इस अश्लील कर्म का यजुर्वेद (23-19) से 23वें मंडल के अंत तक हुआ है। महीधर ने इसका संस्कृत में

जो अनुवाद किया है, उसका अलग से अध्ययन किया जा सकता है । इन मंत्रों का अनुवाद इतना अश्लील है कि किसी अच्छी, स्तरीय पत्रिका या अख़बार में नहीं लिखा जा सकता । यह बात और है कि इनका स्वामी दयानन्द जी आदि ने खींचतान कर दूसरा रंग देने की कोशिश की है, लेकिन मूल पाठ को देखकर मूलार्थ मालूम किया जा सकता है ।

वेदों में ऐसे मंत्र भी मिलते हैं, जिनके बारे में कहा जा सकता है कि वे ईश्वरीय रहे होंगे । इनमें ऋग्वेद का वह मंत्र (8-33-11) भी है, जिसमें औरतों को हुक्म दिया गया है : "ऐ औरत, निगाहें नीची रख, ऊपर न देख, दोनों पांवों को ठीक तरीक़े से एकजुट करके रख । तेरे कशप्लक (ऊपरी हिस्से), दोनों स्तन, पीठ, पेट, दोनों कूल्हे, रानें, पिंडलियां और टखने दिखायी न पड़ें, क्योंकि औरत को संतति विस्तार के लिए पैदा किया गया है ।"

**हिन्दू राष्ट्र की तहरीक में जब-तब राम राज्य का नाम उछलता रहता है, लेकिन यह राम राज्य क्या है और कैसा था ? इस पर हिन्दू राष्ट्रवादियों की ज़ुबानें आमतौर पर बन्द रहती हैं । गांधी जी राम राज्य की हक़ीक़त से शायद वाक़िफ़ थे इसीलिए उन्होंने राम राज्य के नारे के तहत "अपने राम राज्य" का स्वप्न देखा था ।**

परदे का रिवाज हरेक सभ्य समाज के लिए ज़रूरी है । ऋग्वेद ही से यह भी मालूम होता है कि दासों की पत्नियों के बीच परदे का रिवाज था । ऋग्वेद में है : "दास पत्नी रहि गोपा अतिष्ठन" यानी "दास-पत्नियां एकांत में छिपाकर सुरक्षित रखी जाती थीं ।" ब्रह्मवैवर्त पुराण (18-117) में तो परदा पाकीज़गी की निशानी बतायी गयी है । महाभारत के आदि पर्व (73-6) में औरत की हिफ़ाज़त के लिए कहा गया है : "कुमारी अवस्था में पिता, युवावस्था में पति और वृद्धावस्था में पुत्र औरत की हिफ़ाज़त करता है । औरत आज़ादी की पात्र नहीं है ।" वेदों में 'अवगुंठन' शब्द विशेष रूप से परदे के सिलसिले में आया है ।

महाभारत में रोती-चिल्लाती लड़कियों को बाल पकड़ कर छीन लाना सबसे अच्छा विवाह माना गया है । यह व्यवहार पराजित लोगों की औरतों के साथ ज़्यादा होता था । ऐसी औरतों को दासी या वेश्या भी बनाया जाता था । युधिष्ठिर की एक लाख (सभा०, 54-12), भीम, अर्जुन, नकुल, सहदेव आदि के अनेक (शांति, 44- 6 से 90 और 12-13) और सुभद्रा, दमयंती, लोपामुद्रा, उत्तरा (आरण्यक०, 50-11 और विराट०, 10-12), देवयानी और शर्मिष्ठा जैसे राज पुरुषों और राज महिषियों (औरतों) और कन्याओं के सौ-सौ दासियों के होने के उल्लेख हैं । डॉ० भवालकर की किताब "महाभारत में नारी" के अनुसार कहीं विवाह में, कहीं उपहार के रूप में, कहीं पारितोषिक, लालच, दान-दक्षिणा या जुआ और जंग में हर्जाना या ख़रीद-फ़रोख़्त के रूप में दासियां प्राप्त की जाती थीं । (पृ० 290-293) शल्य ने धन लेकर अपनी बहन माडी को पाण्डु को दिया था । मणिपुर के राजा इस शर्त पर अर्जुन को अपनी कन्या दी थी कि उसका पहला बेटा उन्हें दिया जाएगा ।

महाभारत में एक घटना ऐसी भी मिलती है, जिसमें एक औरत की शादी पांच भाइयों के साथ हो जाती है । द्रोपदी की शादी पांचों पाण्डवों के साथ हुई थी । द्रौपदी के पिता द्रुपद इस शादी के लिए तैयार नहीं थे । उन्होंने कहा कि ऐसा करना न तो दुनियावी होगा और न ही वैदिक । इस पर युधिष्ठिर ने कहा : "सुना जाता है कि प्राचीनकाल में भी जटिला नाम की एक औरत सात ऋषियों के साथ रहती थी । इसी तरह मुनि कन्या वार्क्षी, प्रचेतस के एक नाम के दस तपस्वी भाइयों के साथ रहती थी ।"

महाभारत के अनुसार औरत का अपराध नहीं होता । अपराध सिर्फ़ मर्दों का होता है (शांति 266-38)। कुछ और किताबों की तरह महाभारत में भी नसीहत की गयी है कि औरतों और बेवकूफ़ों से मशविरा नहीं करना चाहिए । कहा गया है : "न बुद्धि परिगृहणीत स्त्रीणां मूर्खजनस्य च ।" विद्वानों से कहा गया है : "स्त्री प्रधानानि राज्यानि

विद्ववविद्भर्वर्जितानि च ।'' यानी, ''जिन राज्यों में औरतों की प्रधानता हो उसे विद्वान छोड़ दें ।'' औरतों के ख़िलाफ़ और बहुत-सी बातें वाल्मीकि रामायण, देवी भागवत, ब्रह्मवैवर्त पुराण, राम चरित मानस आदि में भी आयी हैं ।

महाभारत में औरतों के सती होने के सिलसिले में भी कई घटनाएं मिलती हैं । जैसे, पाण्डु के मरने पर भाद्री उनकी चिता पर सती हो गयी थी । (आदि पर्व, 95-65)। वसुदेव की चार पत्नियां–देवकी, भद्रा, रोहिणी और मदिरा–पति की चिता पर सती हुईं, मगर सत्यभामा तप करने जंगल को चली गयीं (मुसल०, 7-73 और 74) वसुदेव कृष्ण के पिता का नाम है । वे देवकी से पैदा हुए थे । वाल्मीकि रामायण (उत्तर कांड, 17-15) और दूसरी कुछ किताबों में सती होने के वृत्तांत मिलती हैं ।

औरत के सिलसिले में महाभारत की उक्त व्यवस्था ज़ाहिर है कि अव्यावहारिक हैं और अमानवीयता से भरी हुई हैं । औरतों के हित की एकाध जो बातें मिलती हैं, उनमें से ज़्यादातर तो सारी औरतों के सिलसिले में नहीं आयी हैं, बल्कि ऊंची जातियों की औरतों के लिए हैं, दूसरे यह कि ये बातें औरत मुख़ालिफ़ बातों और व्यवस्थाओं के नीचे दब जाती हैं । किसी भी राष्ट्र में यह व्यवस्था चल नहीं सकती ।

### दंड व्यवस्था

जहां तक महाभारत में दंड व्यवस्था का प्रश्न है, तो वह भी काफ़ी लचर थी । यह व्यवस्था पूरी तरह ऊंच-नीच पर आधारित थी । किस व्यक्ति को किस अपराध का कितना दंड मिलना चाहिए, इसका फ़ैसला करने और दंड देने के लिए राजा एक राजपुरुष नियुक्त करता था, जो ब्राह्मण होते थे । नारद और युधिष्ठिर के सवाल-जवाब से ज्ञात होता है कि सामान्यत: न्याय का कार्यभार मंत्रियों के ज़िम्मे होता था, मगर वे दंड के स्वतंत्र और सर्वोच्च निर्णायक नहीं थे । राजा उसका अंतिम अधिकारी था, जिसे मंत्रियों द्वारा दिये जाने वाले दंड का ज्ञान रखना आवश्यक था (सभा पर्व 5-34)। मंत्रियों द्वारा दंड देने का काम बिल्कुल नुमायां नहीं था । प्राय: राजपुरुष ही मामलें का फ़ैसला करता था ।

ब्राह्मण, धर्म के प्रतीक और शास्त्रों के माहिर समझे जाते थे । अत: किसी भी व्यक्ति को अपराध करने पर सबसे पहले उसे विद्वान ब्राह्मण के ही पास जाना पड़ता था (शांति, 259-7)।

जो व्यक्ति ब्राह्मण की बात नहीं मानता था, उसे राजा के पास भेजा जाता था (शांति 259-8)। महाभारत में पंचों के ज़रिये (सभा 5-70) और सभा के ज़रिये मामले के फ़ैसले का भी उल्लेख है । फ़ैसले करते समय देश, जाति, कुल आदि के 'धर्मों' का पूर्ण ध्यान रखा जाता था (आश्रम 10-1 से 4), ताकि फ़ैसले में गड़बड़ी न होने पाये । बृहस्पति, व्यास (व्यवहारमयूख, पृ० 3), शुक्र (शुक्रनीतिसार 2-99 और 100) और मनु (मनुस्मृति 8-390) सबने मामले के वक़्त इनका ध्यान रखने पर बल दिया है । ए०एस० अल्टेकर के मतानुसार जिन विषयों में सन्देह था या जिनका शास्त्रों में उल्लेख नहीं था, उन्हीं के निर्णय के लिए, निष्पक्ष रूप से, स्मृतियों में लगभग दस व्यक्तियों की परिषद बनाकर राजा को न्याय करने की अनुमति दी गयी थी । (Malviya commemoration volume, page 649) महाभारत में भी ऐसी परिषद का उल्लेख मिलता है (शांति 86:7-9)।

इन सबके बावजूद फ़ैसले परम्परा से हटकर नहीं होते थे । उदाहरण के लिए यहां कुछ क़ानून पेश किये जा रहे हैं, जिनसे न्याय व्यवस्था का सही अंदाज़ा हो सकेगा ।

शतं ब्राह्मणमाक्रुश्य क्षत्रियो दण्डमर्हति,
वैश्यस्तु द्विशतो राजन् शूद्रस्तु वधमर्हीत ।
शूद्र: क्षत्रियमाक्रुश्य जिह्वाच्छेदनामाप्नुयात्,
शूद्राक्रोशे तथा वैश्य: श्तार्द्धं दण्डमर्हति ।
धर्मोपदेश: शूदस्य द्विजानामभिकुर्वत:,
तप्तमासेचयेत् तैलं वक्त्रे क्षोत्रे च पार्थिव: ।

यानी, क्षत्रिय अगर ब्राह्मण को अपशब्द कहे, तो उसे एक सौ का दण्ड दिया जाए । वैश्य अगर ब्राह्मण को अपशब्द कहे, तो दो सौ दण्ड दे, लेकिन अगर शूद्र कहे, तो उसको क़त्ल कर दिया जाए । (यही बात मनुस्मृति (8-267) में भी आयी है ।) शूद्र अगर क्षत्रिय को अपशब्द कहे तो उसकी ज़ुबान काट ली जाए । वैश्य अगर शूद्र को अपशब्द कहे, तो उस पर 50 का दण्ड दिया जाए । द्विजों (ब्राह्मण, क्षत्रिय और वैश्य) को अगर शूद्र धर्म की नसीहत करे, तो तेल गरमाकर उसके मुंह और कान में राजा डाल दे । (ऐसी मिलती-जुलती बात मनुस्मृति (8-270 और 8-279) में भी आयी है ।)

महाभारत के शांति पर्व (165-57) में कहा गया है : ''वैश्य की हत्या करने पर दो वर्ष तक व्रत करे और एक बैल और 100 गायें दे । शूद्र की हत्या करने पर एक वर्ष का व्रत और एक बैल और 100 गायें दे । कुत्ता, सूअर और गदहे की हत्या करके भी शूद्र की हत्या के समान व्रत करे ।'' इस प्रकार शूद्रों की गिनती जानवरों में की गयी है ।

टैक्स यानी 'बलि' भी दण्ड के बतौर लगाने की बात मिलती है । वैसे तो राज-काज के कामों के लिए धन की ज़रूरत होती ही है । ऋग्वेद (7-6-5 और 10-173-6) में साधारण लोगों के लिए 'बलिहृत्' (राजा के लिए बलि, शुल्क या कर लाने वाले । शब्द का प्रयोग हुआ है । ऐतरेय ब्राह्मण (35-3) में वैश्य को 'बलिकृत' (दूसरे को कर देने वाला भी कहा गया है, जबकि ब्राह्मण और क्षत्रियों को कर से मुक्त रखा गया था । महाभारत में दण्ड के तौर पर हारे हुए राजाओं से कर वसूलने की बात मिलती है । सभा पर्व (25-3) में अर्जुन ने साफ़ तौर पर कहा है : ''मैं सभी राजाओं से कर लेकर आऊंगा ।'' हारे हुए देशों के राजा लोग हीरे-जवाहरात, सोना-चांदी, गाय, हाथी, घोड़े आदि लेकर पाण्डव सम्राट की सेवा में उपस्थित भी हुए थे ।

महाभारत में सेना, मंत्रियों और क़िले आदि के सिलसिले में भी काफ़ी चीज़ें आयी हैं, जिनके विस्तार में जाने का यहां मौक़ा नहीं है । यहां पर सिर्फ़ महाभारत की शासन-व्यवस्था की बुनियादों की तरफ़ ही इशारा किया गया है और इससे संबद्ध उन कुछ ख़ास चीज़ों को विवेचना को विषय बनाया गया है, जिन-जिन राज्य के बाक़ी अंग आश्रित हैं ।

## राम राज्य

हिन्दू राष्ट्र की तहरीक में जब-तब राम राज्य का नाम उछलता रहता है, लेकिन यह राम राज्य क्या है और कैसा था ? इस पर हिन्दू राष्ट्रवादियों की ज़ुबानें आमतौर पर बन्द रहती हैं । गांधी जी राम राज्य की हक़ीक़त से शायद वाक़िफ़ थे इसीलिए उन्होंने राम राज्य के नारे के तहत ''अपने राम राज्य'' का स्वप्न देखा था ।

राम कथा पर सबसे प्रमाणिक किताब ''वाल्मीकि रामायण'' मानी जाती है । इसके अध्ययन से मालूम होता है कि इसका शुरू का अध्याय बालकाण्ड और आख़िर का उत्तरकांड बाद में जोड़ा गया है, क्योंकि इसकी शैली और बयान बीच के पाठ से भिन्न है । याक़ोबी भी मानते हैं कि ये दोनों कांड क्षेपक हैं । राम के राजकाज का बयान अंतिम कांड उत्तर कांड ही में मिलता है । वैसे तो राम-कथा पर बहुत से ऐसे रामायण और दूसरी किताबें हैं, जिनमें समानता नहीं पायी जाती है । यहां ख़ासतौर से वाल्मीकि रामायण की बुनियाद पर राम राज्य का विश्लेषण करने की कोशिश की जाएगी ।

वाल्मीकि रामायण का छठा कांड युद्ध कांड भरत द्वारा राम को राज्य लौटाने, राम का राज्याभिषेक होने और साथ आये वानरों की विदाई के साथ समाप्त हो जाता है । भरत ने राम को राज्य वापस करते और उसमें हो रही गड़बड़ियों का उल्लेख करते हुए कहा :

''आपने मेरी मां का सम्मान किया और यह राज्य मुझे दे दिया । जैसे आपने मुझे दिया, उसी तरह मैं अब फिर आपको वापस दे रहा हूं । अत्यंत ताक़तवर बैल जिस बोझ को अकेला उठाता है, उसे बछड़ा नहीं उठा सकता, उसी तरह मैं भी इस भारी बोझ को उठाने में असमर्थ हूं । जैसे जल के महान वेग से टूटे या फटे हुए बांध को, जबकि उससे जल का तेज़ी से बहाव हो रहा हो, बांधना अत्यंत कठिन होता है, उसी तरह राज्य के खुले हुए छिद्र को ढक पाना मैं अपने लिए असंभव मानता हूं ।''

(युद्ध कांड, 128-2 से 4)

भरत के इस बयान से यह बात स्पष्ट हो जाती है कि अयोध्या राज्य की स्थिति काफ़ी ख़राब हो गयी थी । उसमें गड़बड़ियां पैदा हो गयी थी, लेकिन सारा लंका कांड और उसके बाद का आख़िरी उत्तरकांड ख़त्म हो जाता है, मगर पता नहीं चल पाता कि राम ने गड़बड़ियों को किस तरह दूर किया और किस तरह छिद्र ढका ? बस युद्ध कांड के आख़िरी हिस्से में कुछ बसें आयी हैं जैसे राम के राज्य-शासनकाल में कभी विधवाओं का विलाप नहीं सुनायी पड़ता था । सांप आदि दुष्ट जन्तुओं का भय नहीं था और रोगों की भी आशंका नहीं थी । (128-98) कोई बच्चा मरता नहीं था (128-99), लोग हज़ारों साल तक जीवित रहते थे, उनके हज़ारों बेटे होते थे और उन्हें किसी तरह का ग़म या रोग नहीं होता था (128-101), ब्राह्मण, क्षत्रिय,

वैश्य और शूद्र लोभरहित होते थें (128-104) राम ने 11 हज़ार वर्षों तक राज किया (128-108) इस दौरान सौ अश्वमेध यज्ञ किया और पुरोहितों को खूब दान किया (128-95)। इस तरह की और भी कुछ बातें हैं । तुलसीदास जी ने तो अपनी रामायण 'राम चरित मानस' में तो यह कहकर काम चलाया : "वैदिक दैविक भौतिक तापा, राम राज नहिं काहुहि व्यापा ।" यानी किसी भी प्राणी को राम राज्य में दैहिक, दैविक और भौतिक ताप नहीं आता । तुलसीदास ने यह भी लिखा है कि बाज़ारों में चीज़ें बिना क़ीमत अदा किये राम राज्य में मिल जाती थीं आदि-आदि ।

राम चन्द्रजी की दिनचर्या पर उत्तर कांड में आता है कि सुबह उन्हें गाना वग़ैरह गाकर जगाया जाता था (37-3) उठने के बाद स्नान आदि से निवृत्त होने के लिए राम को हज़ारों सेवकों की ज़रूरत पड़ती थी (37-10)। फिर वे देवताओं, पितरों और ब्राह्मणों की पूजा करते थे (37-14), इसके बाद राजसभा में पधारते और वहां पुराण जानने वाले लोग भिन्न-भिन्न धर्मकथाएं कहते थे (37-24) उत्तर कांड ही के प्रक्षिप्त सर्ग (पहला) में राम लक्ष्मण से कहते हैं कि बाहर कोई फ़रियादी हो तो उसे बुला लो, तो लक्ष्मण वापस आकर बताते हैं कि बाहर एक भी व्यक्ति ऐसा नहीं मिला जो कहता हो कि मेरा अमुक काम है ।

राम दोपहर के बाद का सारा वक़्त अपने अंत:पुर ही में बिताते थे । उत्तर कांड (42-27) ही मे आया है :

पूर्वाहने धर्मकार्याणि कृत्वा धर्मेण धर्मवित् ।
शेषं दिवस भागार्धमंत:पुर गतोड भवत् ।।

यानी, धर्मज्ञ राम दिन का पूर्वाह्न समय धर्मकृत्यों में व्यतीत करते थे और शेष समय मध्याह्न के बाद अंत:पुर में गुज़ारते थे ।

### राम और ब्राह्मण

राम लक्ष्मण को एक बार फिर हुक्म देते हैं : मक्ष्मण! तुम फिर जाओ और फ़रियादी का पता लगाओ । हुक्म के अनुसार लक्ष्मण बाहर आये और देखा कि दरवाज़े पर एक कुत्ता खड़ा है और उन्हीं की ओर देखता हुआ बार-बार भूंक रहा है । लक्ष्मण ने उससे आने का कारण पूछा, तो उसने कहा कि मैं तो राम जी के सामने ही अपना काम बता सकता हूं । कुत्ता राम के पास आया और एक ब्राह्मण के ख़िलाफ़ शिकायत की, जिसने उसे मारा था । मार से कुत्ते का सिर फट गया था । कुत्ते ने ब्राह्मण का नाम सर्वार्थ सिद्ध बताया । राम ने फ़ौरन एक द्वारपाल को भेजकर ब्राह्मण को बुलवाया ।

राम ने उससे कुत्ते को मारने का कारण पूछा, तो उसने बताया कि मैं भूखा था । भीख मांगने के लिए जा रहा था और यह कुत्ता मेरा रास्ता रोके खड़ा था । मैंने इसे हटने के लिए कहा तो यह नहीं हटा । भूख की बिलबिलाहट और कुत्ते की हठ इन दोनों कारणों के मिल जाने से मुझे क्रोध आ गया और मैंने इसे डंडे से मारा ।

राम ने सभा में मौजूद भृगु, आंगिरस, कुत्स, वसिष्ठ और काश्यप आदि से पूछा : "आप लोग बताएं, इसके लिए क्या करना चाहिए । मुनियों ने कहा कि ब्राह्मण को तो दंड नहीं दिया ज़ा सकता, यही समस्त शास्त्रों का मत है । प्रक्षिप्त सर्ग (2-34)। इसी बीच हालात भांप कर कुत्ते ने कहा कि पूर्व जन्म में मैं कालंजर में एक मठ का महंत था, जिसके कारण मुझे इस योनि में कुत्ता बनना पड़ा । यह ब्राह्मण भी महंत बनकर अधम योनि में चला जाएगा । राम ने ब्राह्मण को महंत बना दिया । राम ने उसका कुलपति (महंत) के पद पर अभिषेक कर दिया । इस प्रकार पूजित हुआ वह ब्राह्मण हाथी की पीठ पर बैठकर बड़े हर्ष के साथ वहां से चला गया । (प्रक्षिप्त सर्ग 35 से 39)

राम के दरबार में जब च्यवन आदि ऋषियों के पहुंचने पर राम ने कहा : "यह सारा राज्य, इस हृदय कमल में विराजमान यह जीवात्मा और यह मेरा सारा वैभव ब्राह्मणों की सेवा के लिए ही है, मैं आपके समक्ष यह सच्ची बात कहता हूं ।" (उत्तर कांड, 7-14)। राम चन्द्र जी में सहनशीलता, पिता का आज्ञापालन और भाइयों से प्रेम आदि की विशेषता उभरी हुई पायी जाती है ।

### रामराज्य में शूद्र

रामराज्य में शूद्र को भक्ति इबादत का हक़ नहीं था । शम्बूक नाम का एक शूद्र जब इबादत कर रहा था, तो राम चन्द्र जी ने उसे ब्राह्मण के बेटे के लिए मार डाला । उत्तर कांड के 73वें सर्ग के अनुसार एक बूढ़ा ब्राह्मण अपने मरे हुए बालक का शव लेकर राजद्वार पर आया । (2) और यह

कहकर विलाप करने लगा : हाय ! मैंने पूर्वजन्म में कौन-सा ऐसा पाप किया था, जिसके कारण आज इन आंखों से मैं अपने इकलौते बेटे की मौत देख रहा हूं । (4) बेटा ! अभी तो तू बालक था । जवान भी नहीं होने पाया था । सिर्फ़ पांच हज़ार दिन (13 साल 10 माह 20 दिन) की तेरी उम्र थी । (5) राम चन्द्र जी के राज्य में तो अकाल-मृत्यु की ऐसी भयंकर घटना न पहले कभी देखी गयी थी और न सुनने ही में आयी है । (9) निस्सन्देह राम ही का कोई महान दुष्कर्म है, जिससे इनके राज्य में रहने वाले बालकों की मृत्यु होने लगी । (10)

74वें सर्ग में आया है : राम ने उस ब्राह्मण का इस तरह दुख और शोक से भरा हुआ वह सारा करुण-क्रन्दन सुना । (1) उन्होंने मुनियों और अपने भाइयों को बुलाया । इन सबके सामने मामले को रखते हैं । (7) इस पर नारद जी कहते हैं : महाराज ! निश्चय ही आपके राज्य में किसी सीमा पर कोई खोटी बुद्धि वाला शूद्र महान तप कर रहा है, यह महान अधर्म है, उसी के कारण इस बालक की मृत्यु हुई है । (29) राम शम्बूक को मारने के लिए खुद गये और तलवार से उसका सिर काट डाला । (76-4) सिर कटते ही बालक ज़िन्दा हो उठा । (76-15) उस शूद्र का क़त्ल होते ही इन्द्र और अग्नि समेत सारे देवता 'बहुत ठीक, बहुत ठीक' कहकर राम की बार-बार तारीफ़ करने लगे (76-5)। देवताओं ने प्रसन्न होकर कहा कि आपने तो यह देवताओं ही का काम अंजाम दिया है । (76-7)

यह घटना चार सर्गों पर आधारित है । शम्बूक के बारे में तो यह नहीं कहा जा सकता है कि वे राक्षस थे । राम चन्द्र जी ने तो राक्षसों के सफ़ाये के लिए गोया 'मुहिम' चलायी । कई हज़ार राक्षसों ने उनके हाथ से क़त्ल होकर 'मोक्ष' हासिल किया था । इनमें मारीच, सुबाहु, कबन्ध, दूषण और उसके 14 हज़ार साथी शामिल हैं । रावण वध भी हुआ और सारी लंका नगरी जली ।

### राम और राष्ट्रप्रेम

राम के अयोध्या प्रेम का प्रसंग हिन्दुत्व द्वारा जब-तब पेश किया जाता है । यह प्रसंग उत्तर कांड ही में आया है, जिसे प्रक्षिप्त सर्ग बताया जाता है । यह प्रसंग इस प्रकार है : रावण का वध और लंका-विजय के बाद राम ने लक्ष्मण से कहा : "लक्ष्मण, तुम लंका में जाओ और विभीषण का विधिपूर्वक राजतिलक कराकर लौट आओ ।"

राम की आज्ञा पाकर लक्ष्मण गये । उन्होंने जैसे ही उस नगरी की शोभा और गरिमा को देखा कि मुग्ध रह गये । हरे-भरे वृक्षों-लताओं के पुष्पों से आच्छादित बाग़-बगीचे, पक्षियों की चहचहाहट, ऊंचे-ऊंचे सुन्दर भवन, कल-कल करते झरने, और एक से एक बढ़कर चीज़ें । उनकी आंखें सुन्दरता पर रीझ गयीं । लक्ष्मण ने विभीषण को गद्दी पर बिठाया और फिर लौटकर राम के पास आये । विनीत स्वर में बोले : "महाराज, लंका ने मेरा मन चुरा लिया है । वह नगरी स्वर्ग जैसी है । आपकी आज्ञा हो, तो मैं रह जाऊं ।"

राम ने उनकी बात सुनी । फिर गंभीर होकर बोले : "लक्ष्मण इसमें कोई सन्देह नहीं कि लंका का सौन्दर्य निराला है । वह सचमुच स्वर्ग नगरी है । उसमें चारों तरफ़ समृद्धि है । प्राकृतिक सुषमा है ।" लेकिन :

"नेयं स्वर्णपुरी लंका रोचते मम लक्ष्मण ।
जननी जन्मभूमिश्य स्वर्गादिपि गरीयसी ।।"

"हे लक्ष्मण, यह स्वर्ण पूरी लंका मुझे अच्छी नहीं लग रही है, क्योंकि जननी (मां) और जन्मभूमि स्वर्ग से भी बढ़कर है ।

उल्लेखनीय है कि राष्ट्र प्रेम के सिलसिले में विष्णु पुराण (2-3-24) में है : "जो लोग भारत-भूमि में जन्म ग्रहण करते हैं, वे धन्य हैं । देवता लोग भी उनका कीर्ति गान करते हैं, क्योंकि भारत कर्मभूमि है—यहां जन्म ग्रहण करके ही स्वर्ग प्राप्त किया जाता है । देवताओं को भी स्वर्ग की प्राप्ति के लिए इस भारत ही में आना पड़ेगा, चुनांचे भारतवासी स्वर्ग के देवताओं से भी अधिक भाग्यशाली हैं ।" सारे अवतार भी यहीं आये । श्रीमद भागवत (5-19-21) में इसी तरह की बात आयी है : "यह भारत स्वर्ग का प्रांगण है, यहां जो मानव जन्म ग्रहण करता है, वह कितना सौभाग्यशाली है । क्योंकि इससे उसे मुकुन्द-सेवा (ईश्वर की सेवा) करने का दैवयोग प्राप्त होता है ।" राष्ट्र-प्रेम के सिलसिले में और भी हवाले मिलते हैं, जिन्हें यहां देने का मौक़ा नहीं है । (जारी)

# अनाथ लड़कों की पुकार

# VOICE OF ORPHAN BOYS

## यतीमख़ाना इस्लामिया (गया)

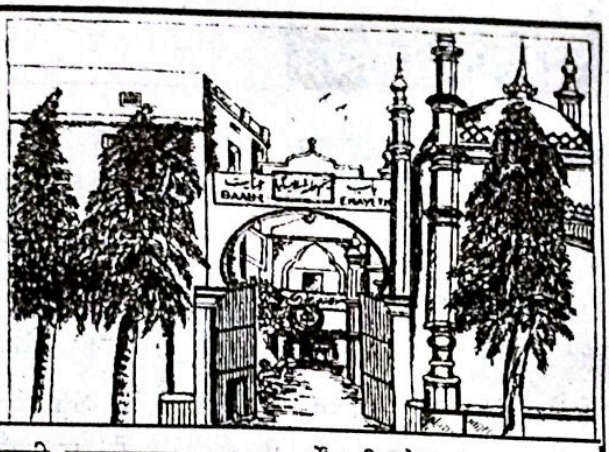

## एक परिचय

● दीनी और असरी शिक्षा की अपनी तरह की जानी-मानी रिहाइशी पाठशाला ● 93 वर्षों की सेवाएं ● बहुत से विभाग ● शिक्षा के पड़ाव : प्राथमिक से मैट्रिक तक ● हिफ़्ज़ का विभाग : हिफ़्ज़ के साथ-साथ मैट्रिक ● हर वर्ष बिहार स्कूल बोर्ड परीक्षा का 100 प्रतिशत रिज़ल्ट ● पत्राचार शिक्षा 2010-2011 के सत्र के लिए 11वीं, 12वीं और बी०ए० में प्रवेश जारी ● कंप्यूटर की भी शिक्षा ● किफ़ाला स्कीम के तहत एक अनाथ छात्र पर वार्षिक ख़र्च 8000/- रुपये प्रति वर्ष ● कुल वार्षिक ख़र्च 14 लाख से अधिक ● आमदनी का स्रोत : मुस्लिम अवाम के चन्दे ● 125 अनाथ बच्चे जिनका पूरा ख़र्च इदारा ही उठाता है ।

● जिस रूप में संभव हो मदद करके अल्लाह से बड़ा इनाम प्राप्त करें–उदाहरण के लिए ● ज़कात ● सदक़े ● अतिया ● पैदावार की ज़कात ● क़ुरबानी की खाल ● एक अनाथ बच्चे का वार्षिक ख़र्च ● अपने या किसी बुज़ुर्ग के नाम पर कमरा या हॉल बनवाना आदि ।

● याद रखें यहां हर वर्ष ऑडिट (Audit) भी कराया जाता है । आप खुद यतीमख़ाना इस्लामिया पहुंच कर बराबरी का व्यावहारिक नमूना अपनी आंखों से देखें कि किस प्रकार अनाथ और मां-बाप वाले बच्चे मिल-जुलकर रहा करते हैं ।

## यह इदारा आप से उदार सहायता की अपील करता है ।

**नोट** : यह इदारा विदेशी मुद्रा के क़ानून FCRA के तहत भी रजिस्टर्ड है ।

**अब आप विदेश से BANK A/c No. 300402010000187**

**BANK CODE NO. UBININBBJAM,**

**UNION BANK OF INDIA (MAIN BRANCH, GAYA)**

**.....में अपनी रक़म भेज सकते हैं.....**

**चेक या ड्राफ्ट पर केवल यह लिखें–THE GAYA MUSLIM ORPHANAGE**

**.....चेक, ड्राफ़्ट, मनीऑर्डर या ख़त भेजने का पता.....**

Hon. SECRETARY, THE GAYA MUSLIM ORPHANAGE

At+P.o : CHERKI-824237, Distt : GAYA (BIHAR) INDIA

BANK A/C NO. : 10581, UNION BANK OF INDIA (MAIN BRANCH, GAYA)

CORE BANKIN G A/C NO.: 300402010010581

☎ 0631-2734428 ● Mobile : 9955655960

E-mail : gmocde@yahoo.co.in, Website : www.gmogaya.com

अध्यक्ष
डॉ० फ़रासत हुसैन

नाज़िम
डॉ० मुहम्मद एहतिशाम रसूल

# तंत्र-मंत्र और मीडिया

❑ सी॰ के॰ रहमानी

भविष्य के प्रति आदमी हमेशा से चिंतित रहा है, मगर आजकल कुछ ज़्यादा ही चिंताग्रस्त है । चिंता से मुक्ति के तमाम उपाय किये गये हैं । आजकल भविष्य संवारने और चिंता से मुक्ति के उपाय ज्योतिष और तंत्र-मंत्र में ढूंढ़े और बताये जा रहे हैं । इसे अंधविश्वास की इंतिहा ही कहेंगे कि बहुतेरे लोग सुबह अख़बार में भविष्यफल ज़रूर देखते हैं । यह हाल तक है जबकि उसे मालूम है कि भविष्य फल सही नहीं है, इसके बावजूद वह मन की तसल्ली के लिए देख ज़रूर लेता है । इसलिए बाबाओं की बढ़ती मांग को देखते हुए शायद ही एकाध चैनल ऐसा हो जिस पर भविष्य फल दिखायी न देते हों ।

कुछ ही अख़बार ऐसे होंगे जिनमें भविष्य फल न छपता हो, यानी ज्योतिष और तंत्र-मंत्र को मीडिया भी ख़ूब बढ़ावा दे रहा है । कहीं विज्ञापन पाने के लालच में तो कहीं टी॰आर॰पी॰ बढ़ाने के चक्कर में प्रसारित-प्रचारित किया जा रहा है ।

दुनिया में जितनी भी समस्याएं हैं उनका निदान कहीं हो न हो ज्योतिष/तंत्र-मंत्र में होने का दावा ज़रूर किया जाता है । पढ़ने-लिखने, नौकरी करने, इंजीनियर बनने या काम धंधा करने की कोई ज़रूरत नहीं । सब समस्याओं का समाधान ज्योतिषियों और तांत्रिकों के पास है । बीमारी में दवा का न लगना, शादी में रुकावट नौकरी न लगना, लगकर छूट जाना, व्यापार में घाटा शत्रु पर विजय प्राप्त करना मुक़दमे में जीत, किसी ने कुछ कर दिया है कि पैसा आता है लेकिन घर में रुकना नहीं, गृह क्लेश, बॉस खुश नहीं है, घर नहीं बन पा रहा, नौकरी में तरक़्क़ी नहीं हो रही है ऐसे सैकड़ों समस्याओं का समाधान करने वाले विज्ञापनों की लंबी लिस्ट है जिसमें हर समस्या का समाधान घंटों में करने का दावा किया जाता है ।

इस तरह के पम्पलेट बसों में, चौराहों पर, शौचालयों की दीवारों पर चिपके दिखायी देते हैं या फिर कोई लड़का इन्हें बांटता दिखायी देगा । अख़बारों में इस तरह के विज्ञापनों की कोई कमी नहीं होती ।

एक चैनल पर एक दाढ़ी वाले बाबा रात साढ़े ग्यारह बजे 'अवतरित' होते हैं । वह इस तरह के तमाम उपाय बताते रहते हैं । काली बिल्ली को यह खिला दें, गाय को वह खिला दें, काले उड़द अमुक को दान दें, दरवाज़े पर अमुक चीज़ लटका दें, काम बन जाएगा या समस्या कम हो जाएगी । उनकी वाणी में इतना आत्मविश्वास होता है कि लगता ही नहीं कि काम पूरा नहीं होगा । इसी तरह दूसरे चैनलों पर कहीं कोई महिला दिखायी देती हैं, तो कहीं कोई ज्योतिषचार्य । रात भर चैनलों पर 'यंत्र' बिकते दिखायी देते हैं ।

एहतिशाम ख़ान मोबाइल : 09425842976

पब्लिक ट्रैवेल्स

| | |
|---|---|
| सिवनी से मंडला | प्रातः 7:20 |
| सिवनी से छिंदवाड़ा | प्रातः 7:55 |
| छिंदवाड़ा से बालाघाट | प्रात:10:30 |
| मंडला से सिवनी | दिन 12:50 |
| बालाघाट से सिवनी | सायं 6:00 |
| सिवनी से नैनपुर | सायं 5:40 |
| नैनपुर से सिवनी | दिन 12:20 |

प्रतिदिन

नोट : शादी व पार्टियों के लिए 33, 40 एवं 50 सीटर बस उपलब्ध है संपर्क करें-

एहतिशाम ख़ान, बस स्टैंड, सिवनी (मध्य प्रदेश)

यह धंधा कितना फल-फूल रहा है इसका अंदाज़ इसी से लगाया जा सकता है कि रात ग्यारह बजे के बाद अधिकांश चैनलों का समय बाबाओं, तांत्रिकों और सिद्ध यंत्रों को बेचने वाली कंपनियों ने ख़रीद रखा है । यंत्र बेचने वाले इतने प्रभावी ढंग से बताते हैं कि उन्होंने यह यंत्र जिस दिन से ख़रीदा है उस दिन से उनका समय बदल गया है । घर में ख़ुशहाली आगयी है, काम धंधा चलने लग गया है । अब कोई परेशानी नहीं रही ।

यहां एक सवाल यह उठता है कि जब यह पाखंड है और इनसे कोई लाभ नहीं होता तो इनके पास लोगों की भीड़ क्यों लगी रहती है ? यही सवाल लोगों को चकरा देता है और वहां जाने को लालायित करता है । ऐसा नहीं है कि जो लोग इनके पास जाते हैं उन्हें इस पाखंड का पता नहीं है ।

दरअस्ल जब हर तरफ़ से असफलता घेर लेती है और सब रास्ते बंद नज़र आने लगते हैं तब यही रास्ता खुला नज़र आता है । यह रास्ता इसलिए कि इसमें मेहनत नहीं लगती और सफलता की गारंटी दी जाती है । यानी असफलता आदमी को तांत्रिकों/ज्योतिषियों के पास ले जाती है ।

कुछ ऐसे लोग भी हो सकते हैं जिनके पास आम लोगों से ज़्यादा पैसा है लेकिन वह और धनी होने के चक्कर में इनकी शरण में जाते हैं क्योंकि यही शार्ट कट रास्ता दिखायी देता है । यह ऐसा रास्ता नज़र आने लगता है जिसमें हर समस्या का समाधान दिखायी पड़ता है ।

एक साहब ग़ाज़ियाबाद की स्लम बस्ती में रहकर लोगों के घरों में रंग पुताई का काम करते थे । उन्हें उस समय एक दिन की दिहाड़ी सौ रुपये मिलती थी । एक दिन उनके मन में बाबा बनने का ख़याल आया और उन्होंने अपना विज्ञापन देना शुरू कर दिया । मेरी उनसे बात हुई तो पहले वह अपनी सिद्धियों की बात करने लगे लेकिन बाद में उन्होंने अपनी पूरी सच्चाई बता दी और यह भी बताया कि अब उनकी माली हालत बहुत अच्छी हो गयी है । कुछ दिन बाद पता लगा कि उन्होंने अपना ठिकाना बदल दिया है ।

ज़िन्दगी के मुश्किल हालात से हर आदमी जूझ नहीं सकता या जूझना नहीं चाहता इसलिए वह शार्टकट रास्ता खोजता है । रही सही कसर मनमोहक विज्ञापन पूरी कर देते हैं । विज्ञापन ऐसे मनमोहक और जादुई होते हैं कि किसी भी समस्या का समाधान घंटों में करने का दावा किया जाता है । सोचता है चलो एक बार आज़माकर देख लिया जाए । हैरत की बात यह है कि यह धंधा छोटे गांव से लेकर क़स्बों और बड़े शहरों तक में ख़ुब फूल रहा है ।

अगर आप तर्क-वितर्क करते हैं तो ये लोग कह देते हैं कि उन्हीं लोगों को फ़ायदा होगा जिनको इसमें विश्वास और आस्था है । अब आपको मजबूरी में उस पर आस्था और विश्वास करना ही पड़ेगा । अगर ऐसे लोग कहीं फंसते हैं तो कह देते हैं कि हमारा काम तो ताबीज़ बनाना/पूजा पाठ करना/तंत्र मंत्र करना या यंत्र सिद्ध करके देना है सिद्धि और फ़ायदा तो अल्लाह/ईश्वर/भगवान के हाथ है । यही बात सच भी है । ईश्वर ही कार्यसाधक है जो वह चाहता है, वही होता है । अत: उसी को राज़ी करने और उसी की प्रसन्नता प्राप्त करने की कोशिश करनी चाहिए ।


प्रो॰ मुहम्मद क़मरुज़्ज़मा

9826809922
9826689853

पापुलर ट्रेवल्स

लग्जरी बस सेवा 2/2 ( स्लीपर ) के लिए सम्पर्क करें ।

| | | |
|---|---|---|
| अम्बिकापुर से बिलासपुर | रात्रि | 23:20 |
| अम्बिकापुर से रायपुर | प्रात: | 03:00 |
| अम्बिकापुर से डाल्टेनगंज | रात्रि | 21:30 |
| अम्बिकापुर से डाल्टेनगंज | रात्रि | 22:25 |
| अम्बिकापुर से डाल्टेनगंज | रात्रि | 22:30 |
| मननगढ़ से डाल्टेनगंज | रात्रि | 19:10 |
| अम्बिकापुर से मननगढ़ | संध्या | 05:00 |
| अम्बिकापुर से चीरमीरी | प्रात: | 06:30 |
| अम्बिकापुर से मननगढ़ | संध्या | 16:10 |
| रायगढ़ से डाल्टेनगंज | रात्रि | 21:40 |

राम मंदिर के पास, अम्बिकापुर, सरगुजा ( छत्तीसगढ़ )

# 'अनुपम आदर्श' : एक पठनीय पुस्तक

**पुस्तक का नाम** : अनुपम आदर्श
**लेखक** : मौलाना सैयद सुलैमान नदवी
**अनुवादक** : डॉ॰ डी॰ एन॰ चतुर्वेदी
**पृष्ठ** : 168, **मूल्य** : 80 रुपये
**प्रकाशक** : सत्यमार्ग प्रकाशन, 504/45/2डी टैगोर मार्ग, गली गंज लखनऊ-226007

यह इस्लाम के अंतिम पैग़म्बर हज़रत मुहम्मद (सल्ल॰) के पवित्र जीवन पर आधारित एक महत्वपूर्ण पुस्तक का हिन्दी अनुवाद है । आप (सल्ल॰) के पवित्र जीवन और संदेश पर मौलाना सुलैमान नदवी साहब ने जो व्याख्यान दिये हैं, उनमें से सात अहम व्याख्यानों को इसमें सम्मिलित किया गया है ।

इसके पहले व्याख्यान में यह वास्तविकता बतायी गयी है कि मानवता केवल पैग़म्बरों के जीवन चरित्रों से ही परिपूर्ण हो सकती है । दूसरे व्याख्यान में अल्लाह के रसूल हज़रत मुहम्मद (सल्ल॰) पवित्र जीवन और आचरण का हवाला देकर यह बात सिद्ध की गयी है कि आपका पवित्र जीवन सार्वकालिक और विश्वव्यापी उच्चादर्श प्रस्तुत करता है । तीसरे व्याख्यान में आप (सल्ल॰) के पवित्र जीवन के ऐतिहासिक पक्ष को उजागर किया गया है तो चौथे और पांचवें व्याख्यान में आप (सल्ल॰) की जीवनी की व्यापकता और उसकी परिपूर्णता का विशेष रूप से उल्लेख है । आप (सल्ल॰) के पवित्र जीवन कें व्यावहारिक पक्ष के कुछ पहलुओं का छठे व्याख्यान में उल्लेख किया गया है । सातवां व्याख्यान आप (सल्ल॰) के कल्याणकारी और जगतहितकारी आदर्श पर आधारित है । पुस्तक का आठवां और अन्तिम व्याख्यान आचरण पर केन्द्रित किया गया है, जिसमें समानता, बंधुता, हितैषिता और अन्य मानवीय गुणों पर बल दिया गया है । इस सिलसिले में इस्लाम की शिक्षाएं पेश की गयी हैं और अल्लाह के रसूल हज़रत मुहम्मद (सल्ल॰) के आचरण संबंधी संदेशों को यहां प्रस्तुत करने का प्रयास किया गया है ।

इस पुस्तक की भाषा अच्छी, सरल तथा सरस है । श्री मुरली मनोहर टी॰डी॰ कॉलेज बलिया, उ॰प्र॰ के हिन्दी विभाग के पूर्वाध्यक्ष डॉ॰ डी॰ एन॰ चतुर्वेदी ने अनुवाद पर जिस सतर्कता के साथ ध्यान दिया है वह सराहनीय है । प्रूफ़ में कुछ ग़लतियां हैं, लेकिन पुस्तक पठनीय है ।

● संपादन प्रभाग

HINDUSTAN TRAVELS
Prop.
ABDUL RASHID
Mob : 9425254335

Ambikapur to Bilaspur 4:30 (Morning)
Vishrampur to Bilaspur 4:25 (Morning)
Raipur to Ambikapur 9:20 (Night)
Address : Imlipara, Ambikapur, Surguja-497001 (C.G.)

# अनाथ लड़कियों की पुकार

# VOICE OF ORPHAN GIRLS

## मुस्लिम लड़कियों का यतीमख़ाना (गया)

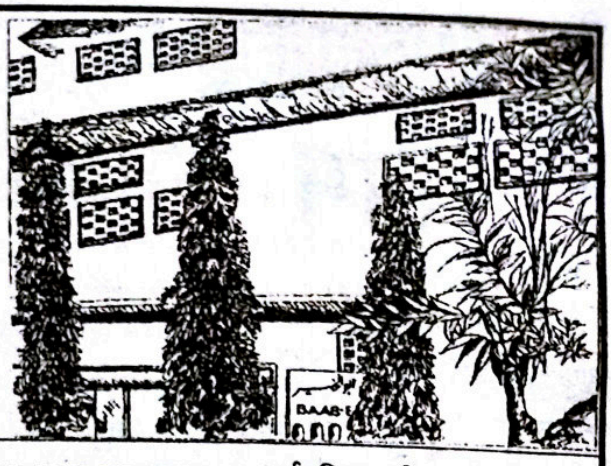

## संक्षिप्त परिचय

लड़कियों के लिए आधुनिक और इस्लामी तालीम से लैस राष्ट्रीय स्तर का एक आदर्श रिहाइशी इदारा • 24 वर्षीय सेवाएं • 19 विभाग • शिक्षा : प्राथमिक से मैट्रिक तक • पत्राचार शिक्षा • 6 छात्राओं ने हिफ़्ज़ के साथ मैट्रिक पास किया • प्रौढ़ शिक्षा • वोकेशनल सेन्टर • कटिंग और सिलाई : 6 बैच 70 छात्राएं • ज़री वर्क्स : 3 बैच 40 छात्राएं • 1993 ई॰ से 2010 ई॰ तक 63 अनाथ बच्चियों और 37 मां-बाप वाली बच्चियों ने मैट्रिक पास किया • वार्षिक ख़र्च : 13 लाख रुपये से अधिक • आमदनी का स्रोत : मुस्लिम अवाम के चन्दे • इदारा 120 अनाथ बच्चियों का सारा ख़र्च पूरा करता है • किफ़ाला स्कीम के तहत एक यतीम बच्ची का वार्षिक ख़र्च 8000/- रुपये है–आप भी एक अनाथ बच्ची का ख़र्च उठा कर सवाब में शरीक हों ।

सहायता के विभिन्न रूप : • ज़कात • सदक़े • अतिया • पैदावार की ज़कात • दीनी किताबें • ज़मीन की ख़रीदारी और क़र्ज़ की अदायगी • स्टाफ़ की मासिक आय के लिए 73000/- रुपये • मां-बाप या रिश्तेदारों के नाम कमरा या हॉल बनवाना और निर्माण कार्यों के लिए ईंटें, सीमेंट, सरिया और अन्य सामग्री या उसका मूल्य देना • यहां प्रतिवर्ष हिसाब चेक किये जाते हैं और ऑडिट होता है । • इदारा में ख़ुद आकर बराबरी का नमूना देखें कि अनाथ बच्चियां और वे बच्चियां जिनके मां-बाप हैं किस तरह मिलकर रहा करती हैं ।

**यह इदारा आप से उदार सहायता की अपील करता है ।**

**विदेशी चन्दा देने वाले :** भारत सरकार से "मुस्लिम लड़कियों का यतीमख़ाना (गया) को विदेशों से चन्दा लेने का इजाज़तनामा प्राप्त हो गया है ।

**विदेशों में रहने वाले अब BANK A/c No. 300402010009042**

**BANK CODE NO. UBININBBJAM में अपनी रक़म भेज सकते हैं ।**

**चेक या ड्राफ्ट पर केवल यह लिखें–"THE GAYA MUSLIM GIRLS ORPHANAGE"**

.....पता.....


GENERAL SECRETARY, THE GAYA MUSLIM GIRLS' ORPHANAGE

At : KOLOWNA, P.O.: CHERKI-824237, Distt.: GAYA (BIHAR) INDIA

☎ 0631-2734437 • Mobile : 9934480190

E-mail : thegayamuslimgirlsorphanage@gmail.com, Website : www.gmgo.org

BANK A/C NO.: 7752 UNION BANK OF INDIA (MAIN BRANCH, GAYA)

CORE BANKING A/C NO.: 300402010007752

संस्थापक महासचिव

इक़बाल अहमद ख़ां

# अर्जुन पुरस्कार पाने वाले मुस्लिम खिलाड़ी

■ ए॰ एन॰ शिबली

भारतीय क्रिकेट टीम के तेज़ गेंदबाज़ ज़हीर ख़ान को क्रिकेट में उनके शानदार कारनामों के लिए अर्जुन पुरस्कार देने का फ़ैसला किया गया है । ग़ौरतलब है कि भारत में एक समय खेल के क्षेत्र में दिया जाने वाला अर्जुन पुरस्कार सबसे बड़ा पुरस्कार माना जाता था । अब जब से राजीव गांधी खेल रत्न की शुरुआत हुई है तब से यह भारत में खेलों के क्षेत्र में दिया जाने वाला दूसरा सबसे बड़ा पुरस्कार है ।

अर्जुन पुरस्कार की शुरुआत 1961 में हुई थी । तब से लेकर अब तक कई खिलाड़ियों को इस पुरस्कार से नवाज़ा जा चुका है जिनमें बहुत से मुसलमान खिलाड़ी भी हैं । अगर क्रिकेट की बात करें और ज़हीर ख़ान को शामिल कर लें तो यह पुरस्कार अब तक 44 क्रिकेट खिलाड़ियों को मिला है । जहां तक मुसलमान खिलाड़ियों का संबंध है तो अब तक 30 मुस्लिम खिलाड़ी इस पुरस्कार से नवाज़े जा चुके हैं और ज़हीर ख़ान ऐसे पांचवें मुस्लिम क्रिकेटर होंगे जिन्हें इस पुरस्कार से नवाज़ा जाएगा । अब तक जिन मुस्लिम खिलाड़ियों को अर्जुन अवार्ड मिला है उनमें सलीम दुर्रानी, मंसूर अली ख़ान पटौदी, यूसुफ़ ख़ान, मीर क़ासिम अली, अब्बास मुन्तज़िर, सैयद नईमुद्दीन, ए॰ करीम, अफ़सर हुसैन, वफ़ादार ख़ान, मुहम्मद ख़ान, एल॰ए॰ इक़बाल, मुहम्मद हबीब, मुहम्मद शहीद, सैयद मोदी, सैयद किरमानी, साबिर अली, फ़र्रूख़ तरापोरे, ज़फ़र इक़बाल, कप्तान मुहम्मद ख़ान, अज़हरुद्दीन, अब्दुल बासित, मुराद अली ख़ान, आसिफ़ इस्माईल, मुहम्मद रियाज़, अख़्तर अली, जलालुद्दीन रिज़वी, अनवर सुल्तान, मुहम्मद अली क़मर, अकरम शाह और सानिया मिर्ज़ा के नाम शामिल हैं ।

हर साल यह पुरस्कार 29 अगस्त को राष्ट्रीय खेल दिवस के अवसर पर भारत के राष्ट्रपति के हाथों दिया जाता है । 7 अक्तूबर 1978 को महाराष्ट्र के अहमद नगर ज़िले में पैदा होने वाले ज़हीर ख़ान ने अपने अन्तर्राष्ट्रीय करियर की शुरुआत 2000 ई॰ में की । लगभग ग्यारह सालों से राष्ट्रीय टीम में अपनी सेवा दे रहे ज़हीर घायल होने के कारण बार-बार टीम से बाहर भी होते रहे । इसके बावजूद वही फ़िलहाल भारत के नम्बर एक गेंदबाज़ हैं । क्रिकेट विशेषज्ञ कहते हैं कि ज़हीर ख़ान अगर बार-बार चोटिल होकर टीम से बाहर नहीं होते तो उन्हें भारत का अब तक का सर्वश्रेष्ठ खिलाड़ी होने से कोई नहीं रोक सकता था । हाल ही में भारत और इंग्लैंड के बीच लॉर्ड्स के पहले टेस्ट की पहली पारी में ज़हीर ख़ान ने जो शानदार गेंदबाज़ी की वह सबने देखी । उनकी शानदार गेंदबाज़ी से जहां भारत अच्छी स्थिति में था वहीं उनके घायल होने के कारण अचानक ख़राब स्थिति में पहुंच गया और मैच भी हार गया । ज़हीर ख़ान ने पहला टेस्ट नवंबर 2000 ई॰ में बंगलादेश के ख़िलाफ़ ढाका में खेला । तब से लेकर अब तक उन्होंने कुल मिलाकर 78 टेस्ट खेले हैं और उनकी 103 पारियों में 1045 रन बनाए हैं । उन्होंने 271 विकेट भी लिए हैं । 2004 में बंगलादेश के ख़िलाफ़ तो उन्होंने कमाल ही कर दिया । इस टेस्ट में ग्यारहवें स्थान पर बल्लेबाज़ी करते हुए उन्होंने 75 रन बनाए । यह ग्यारहवें स्थान पर किसी भी बल्लेबाज़ का सबसे बड़ा स्कोर है । अपनी उस पारी के दौरान उन्होंने सचिन तेंदुलकर के साथ 133 रनों की साझेदारी भी की । यह भारत की तरफ़ से दसवीं विकेट के लिए सबसे बड़ी साझेदारी का रिकार्ड भी है ।


## हमारे पुस्तकालय को सहयोग दीजिए

क्या आप चाहते हैं कि आपका साप्ताहिक/पाक्षिक/मासिक पत्र अथवा आपकी गद्य-पद्य साहित्यिक कृति या अन्य महत्वपूर्ण कृति अधिक से अधिक लोग पढ़ें और इच्छुक व्यक्ति शोध कार्य करें ? तो आप अपने पत्र-पत्रिकाएं अथवा कृतियां हमारे पुस्तकालय को भेंट स्वरूप भेज सकते हैं । इससे हमारा पुस्तकालय विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं और विभिन्न विधाओं के ग्रंथों से समृद्ध होगा और आपके पत्र-पत्रिकाओं, ग्रंथों का लाभ भी सभी वर्ग के व्यक्ति प्राप्त कर सकेंगे ।

**पुस्तकालय का पता :** आचार्य शिवप्रसाद सिंह स्मृति पुस्तकालय, (एम॰एस॰डी॰एम॰ स्कूल) आदर्श कालोनी, चंडीगढ़-अम्बाला हाईवे, जीरकपुर, ज़िला-मोहाली (पंजाब) 140603

ज़हीर ने पहला वनडे मैच केन्या के ख़िलाफ़ नैरोबी में 3 अक्तूबर 2000 को खेला । तब से लेकर अब तक उन्होंने कुल मिलाकर 191 वनडे मैच खेले हैं जिनमें उन्होंने 273 विकेट हासिल किये हैं और एक बल्लेबाज़ के तौर पर 781 रन बनाये हैं । अब जबकि ज़हीर की सेवा को महसूस कर उन्हें अर्जुन पुरस्कार से नवाज़ने का फ़ैसला किया गया है तो ऐसी उम्मीद की जा सकती है कि पुरस्कार प्राप्त करने के बाद उनका हौसला बढ़ेगा और वे और भी बेहतर खेल पेश करेंगे ।

अर्जुन पुरस्कार हासिल करने वाले पहले मुस्लिम क्रिकेटर सलीम दुर्रानी थे । दर्शकों की मांग पर छक्का लगाने की क्षमता रखने वाले सलीम दुर्रानी को 1961 में यानी पहले साल ही अर्जुन पुरस्कार के लिए चुन लिया गया । सलीम दुर्रानी 11 दिसम्बर 1934 को काबुल में पैदा हुए थे । उन्होंने अपना पहला टेस्ट जनवरी 1960 में ऑस्ट्रेलिया के ख़िलाफ़ मुंबई में खेला । कुल मिलाकर उन्हें 29 टेस्ट मैच खेलने का मौक़ा मिला जिसमें उन्होंने एक शतक और सात अर्धशतक की मदद से 1202 रन बनाए । उन्होंने एकमात्र शतक वेस्टइंडीज के ख़िलाफ़ 1962 में लगाया । सलीम दुर्रानी ने एक गेंदबाज़ के तौर पर 75 विकेट भी चटकाये जिसमें तीन बार उन्होंने एक पारी में पांच या इससे अधिक विकेट हासिल किये । दुर्रानी दर्शकों में कितने लोकप्रियथे इसका अंदाज़ा इससे लगाया जा सकता है कि एक बार कानपुर टेस्ट के दौरान उन्हें टीम में शामिल नहीं किया गया तो बहुत से नाराज़ प्रशंसकों ने ''दुर्रानी नहीं तो टेस्ट नहीं'' का नारा लगाया और पोस्टर दिखाये ।

मंसूर अली ख़ान पटौदी अर्जुन पुरस्कार हासिल करने वाले दूसरे मस्लिम क्रिकेटर थे । उन्हें 1964 में यह पुरस्कार मिला । 5 जनवरी 1941 को भोपाल में जन्मे नवाब पटौदी के पिता भी भारत की ओर से क्रिकेट खेल चुके हैं । उन्होंने अपना पहला टेस्ट इंग्लैंड के ख़िलाफ़ दिल्ली में दिसम्बर 1961 में खेला । इसके बाद उन्हें कुल मिलाकर 46 टेस्ट मैच खेलने का मौक़ा मिला ।

सैयद मुस्तफ़ा हुसैन किरमानी अर्जुन पुरस्कार हासिल करने वाले तीसरे मुस्लिम खिलाड़ी थे । उन्हें यह सम्मान 1980-81 में मिला । सैयद किरमानी को भारत का अब तक का सर्वश्रेष्ठ विकेटकीपर माना जाता है । उनके नाम अभी तक सबसे अधिक कैच लपकने का भारतीय रिकार्ड था, जिसे हाल ही में इंग्लैंड के ख़िलाफ़ पहले टेस्ट के दौरान मौजूदा कप्तान और विकेटकीपर महेंद्र सिंह धोनी ने तोड़ा । किरमानी का जन्म 29 दिसम्बर 1949 को चेन्नई में हुआ था । उन्होंने अपना पहला टेस्ट जनवरी 1976 में न्यूज़ीलैंड के ख़िलाफ़ ऑकलैंड में खेला । कुल मिलाकर उन्होंने 88 टेस्ट मैच खेले जिसमें उन्होंने दो शतक और आठ अर्द्धशतक की मदद से 2759 रन बनाए ।

भारत के सफल कप्तानों में से एक और वर्तमान में मुरादाबाद से सांसद मुहम्मद अज़हरुद्दीन अर्जुन पुरस्कार हासिल करने वाले चौथे मुसलमान क्रिकेटर हैं । अज़हर को 1986 में इस सम्मान से नवाज़ा गया । अज़हर की गिनती भारत के सफल कप्तानों में होती है । उन्होंने एक बल्लेबाज़ के तौर पर काफ़ी नाम कमाया । विशेषज्ञों का कहना है कि अज़हर जैसा कलात्मक बल्लेबाज़ भारत में बहुत कम देखने को मिला । 8 फ़रवरी 1963 को हैदराबाद में जन्मे अज़हर ने अपना पहला टेस्ट 1984-85 में कोलकाता में इंग्लैंड के ख़िलाफ़ खेला । पहले ही टेस्ट में उन्होंने शानदार शतक बनाया । कमाल तो यह हुआ कि अगले दो टेस्ट में भी उन्होंने शतक लगाये । इस तरह उन्होंने अपने पहले तीन टेस्ट में शतक बनाऐ जो आज भी एक विश्व रिकार्ड है । अज़हर ने कुल मिलाकर 99 टेस्ट मैच खेले जिनमें उन्होंने 22 शतक और 21 अर्द्धशतक की मदद से 6215 रन बनाए । अपना पहला एकदिवसीय मैच इंग्लैंड के ख़िलाफ़ 20 जनवरी 1985 को खेलने के बाद अज़हर ने कुल मिलाकर 334 वनडे मैच खेले जिनमें उन्होंने कुल मिलाकर सात शतक और 58 अर्द्धशतक की मदद से 9378 रन बनाए ।


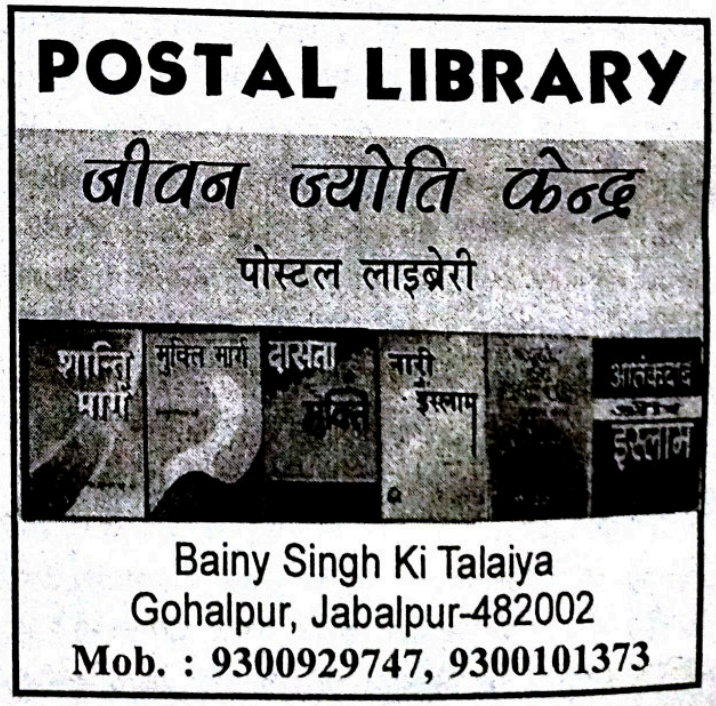

# नरक से स्वर्ग तक

❑ सैयद मुहम्मद असलम
(गोरखपुर)

ईश्वर की कृपा से उसने आंखें खोलीं । सबसे पहले उसने मन ही मन ईश्वर को धन्यवाद दिया और फिर आंखें मूंदकर उसका स्मरण करने लगा । उस समय कमरे में कोई नहीं था । उसे महसूस हुआ कि वह आसमान में उड़ रहा है वह आंखें बन्द किये सोचने लगा कि वह कौन है, कहां से आया है और कितने दिनों से यूं ही आसमान में उड़ रहा है ? उसे कुछ याद नहीं आया । उसे ईश्वर की याद आयी फिर वह ईश्वर को धन्यवाद देने लगा । उसे आसमान में उड़ना अच्छा लग रहा था । उसे लग रहा था कि वह ईश्वर के पास जा रहा है । ईश्वर ने बड़ी कृपा की है, उसके ऊपर, जो वह ईश्वर की शरण में जा रहा है उसे स्वर्ग में जाना है । उसे परमानन्द की अनुभूति होने लगी । डर तो बिल्कुल कहीं मन के किसी कोने में नहीं था । उसे उसका मन, शरीर सब बहुत हल्का लग रहा था । उसके समूचे अस्तित्व में एक अजीब-सी शांति पसरी हुई थी । वह कौन है ? इससे क्या मतलब । उसे अपना नाम भी नहीं याद आया । न ही उसने याद करने की कोशिश ही की । वह आंखें बन्द किये ही पड़ा सोचता रहा कि ईश्वर बड़ा मेहरबान है जो उसे अपने पास बुला रहा है स्वर्ग में भेजने के लिए । वह स्वर्गिक आनन्द का अनुभव करता रहा । बार-बार उसका मन ईश्वर के प्रति कृतज्ञता से भर उठता । उसका रोम-रोम ईश्वर को धन्यवाद दे रहा था ।

वह फिर शून्य में डूब गया उसकी चेतना असीम आनन्द में कहीं खो गयी और वह फिर गहरी नींद में सो गया । उसकी सांस सामान्य गति से चलती रही । फिर अचानक उसे किसी ने पुकारा तो उसने फिर आंखें खोलीं और उसके मुख से आवाज़ निकली हां ! लेकिन उसे किसने क्या नाम लेकर पुकारा उसे याद नहीं आया । वह उठकर बैठने की कोशिश करने लगा तभी सफ़ेद कपड़े पहने हुए एक युवती ने उससे कहा लेटे रहिये । उसने अपने शरीर को फिर ढीला छोड़ दिया । और सोचने लगा कि वह शायद कोई नर्स है जो उसकी देखभाल के लिए उसके कमरे में आयी है । उसने नर्स की ओर देखते हुए कहा, "पानी"। नर्स फ़ौरन पानी का गिलास पास में रखी मेज़ से उठाकर उसके पास ले आयी और एक हाथ से उसकी पीठ को सहारा देकर गिलास उसके मुंह से लगा दिया । वह प्यासा था उसने पानी का गिलास ख़ाली कर दिया । नर्स ने पूछा–और ? उसने कहा–नहीं बस ! नर्स ने उसे फिर लिटा दिया । मुलायम तकिये पर उसने सिर को रखते हुए सोचा कि आख़िर उसका कुछ नाम तो होगा ही । उसने नर्स की ओर कृतज्ञता से देखा और फिर सोचने लगा शायद वह किसी अस्पताल में है । लेकिन उसे अपना नाम नहीं याद आया । न ही उसने नर्स से पूछने की ज़रूरत महसूस की । वह अपना नाम स्वयं याद करना चाहता था ।

मुस्कुरा दिया । नर्स ने उसे मुस्कुराते देखकर पूछा, "अब आपको कैसा लग रहा है ?" उसने कहा, "बहुत अच्छा ।" नर्स ने कहा, "आप बहुत कमज़ोर हो गये हैं ।" फिर शायद नर्स को लगा वह कुछ ग़लत बोल गयी है तुरंत फिर बोली, "लेकिन अब आप बिल्कुल ठीक हैं ।" उसने कहा, "हां मैं काफ़ी अच्छा महसूस कर रहा हूं ।" उसने नर्स से पूछा–"यह कौन-सा अस्पताल है ?" नर्स ने बताया–आप अपने कृष्णा नर्सिंग होम में हैं ।

कृष्णा नर्सिंग होम...लेकिन...यह शहर कौन-सा है ?" उसका अगला सवाल सुनकर नर्स मुस्कुरायी और बोली, "यह आप ही का नर्सिंग होम है और आपका ही शहर है गोरखपुर ।" उसने दिमाग़ पर ज़ोर दिया, "गोरखपुर ?" उसे भी लगा कि हां यह तो उसी का शहर है जहां वह पैदा हुआ और पढ़-लिखकर डॉक्टर बना था । लेकिन उसे अपना नाम अब भी नहीं याद आया । न ही उसने नर्स से पूछा । उसने फिर परमात्मा को स्मरण किया और आंखें बन्द करके अपना नाम सोचने लगा । दिमाग़ पर ज़ोर डालकर उसने सोचा वह डॉक्टर बनना चाहता था, डॉक्टर तो वह बन भी गया था मगर नर्सिंग होम ? हां यह नर्सिंग होम तो उसी ने बनवाया था । नर्स पास में पड़े स्टूल पर बैठ चुकी थी । बहुत सोचने

पर भी उसे अपना नाम नहीं याद आया तो उसने नर्स से पूछ ही लिया, "क्या तुम मेरा नाम बता सकती हो ?" नर्स ने कहा, "आपको कौन नहीं जानता । आप शहर के जाने-माने हृदय और छाती रोग विशेषज्ञ डॉ॰ के॰के॰ श्रीवास्तव हैं ।" नर्स के चेहरे से नज़र हटाकर उसने ईश्वर को याद किया और मुस्कुराते हुए बोला, "कृष्ण कुमार श्रीवास्तव ।" नर्स भी मुस्कुरा पड़ी और उठते हुए बोली, "मैं जाकर आपकी पत्नी को ख़बर क्रती हूं कि आप होश में आ गये हैं ।" वह कुछ नहीं बोला । वह अपने अतीत में खो गया । अब उसे पिछली सारी बातें याद आने लगी थीं । स्मृतिचक्र तेज़ी से घूमने लगा । उसने फिर आंखें बन्द कर लीं और एक-एक कर चलचित्र की भांति सब कुछ स्मृति पटल पर देखने लगा । फिर अचानक उसने आंखों खोलीं और सोचने लगा कि वह बेहोश था तो आख़िर कितने दिनों से बेहोश था और क्यों बेहोश था ? अब उसने अपने शरीर पर ध्यान दिया पहले हाथों को देखा फिर उसने पैरों को हिलाया सब कुछ ठीक-ठाक था । फिर वह सोचने लगा कि आख़िर वह बेहोश कैसे हुआ ? लेकिन याद नहीं आया । उसने सोचा जैसे इतना सब याद आ गया है वैसे ही बाक़ी बातें भी साफ़ हो ही जाएंगी । अगर उसे नहीं याद आ रहा तो कोई और उसे बता देगा । यही सोचकर वह निश्चिंत होकर लेटा रहा । फिर ईश्वर को धन्यवाद देते हुए सोचता रहा कि यह उसी की कृपा है जो उसे नया जीवन मिला है । ईश्वर ने फिर से उसे वापस दुनिया में भेजा है । अब उसे पत्नी की याद सताने लगी । पत्नी को वह बहुत अधिक चाहता था । पत्नी भी जीवन में हर क़दम पर उसका साथ देती रही है । फिर उसे बच्चों की याद आयी । बच्चे उसके छोटे थे, दो थे एक लड़की और एक लड़का । दोनों जुड़वां हुए थे, बहुत प्यारे थे । वह बच्चों को देखने को लालायित हो उठा ।

पत्नी ने जब सुना कि उसको होश आ गया तो वह खुशी से पागल हो उठी । घर में मारे खुशी के दौड़ने लगी, घर के सभी लोगों को चिल्ला-चिल्ला कर बताने लगी, "अरे उनको होश आ गया है ईश्वर ने मेरी प्रार्थना सुन ली ।" अपने दोनों बच्चों को साथ लेकर वह घर से निकल पड़ी । घर के सब लोग भी अपने सब काम छोड़कर नर्सिंग होम की ओर चल पड़े । ड्राइवर कार लेकर किसी मेहमान को छोड़ने स्टेशन गया था । कार का इन्तिज़ार कौन करता कोई पैदल, कोई स्कूटर से, कोई साइकिल लेकर चल पड़ा । नर्सिंग होम ज़्यादा दूर भी नहीं था यही कोई दो-ढाई किलोमीटर के फ़ासले पर था । अपने दोनों बच्चों का हाथ थामे वह सड़क पर चली जा रही थी । मुहल्ले का 'बेचन रिक्शेवाला' रास्ते में मिल गया शायद किसी सवारी को कहीं छोड़कर वापस अपने घर लौट रहा था । उसने देखा कि डॉ॰ साहब की पत्नी दोनों बच्चों के साथ पैदल दौड़ी जा रही हैं तो उसने रिक्शा रोक दिया और बोला, "भाभी आइए बैठिये कहां जाना है मैं पहुंचा देता हूं ।" वह मारे खुशी के बोली, "बेचन तुमको मालूम है तुम्हारे भइया डॉ॰ साहब को होश आ गया है वे कितने दिन से कोमा में थे । आज ईश्वर ने मेरी फ़रियाद सुन ली है ।" "अरे यह तो बड़ी खुशी की बात है" कहते-कहते बेचन रिक्शेवाले का गला रुंध गया और उसकी आंखों से खुशी के आंसू टपक पड़े । "आइए भाभी जल्दी बैठिये ।" वह लपक कर बच्चों को साथ लेकर रिक्शे पर बैठ गयी और रिक्शेवाला अपनी पूरी ताक़त झोंककर रिक्शा दौड़ाने लगा । नर्सिंग होम पहुंच कर वह सीढ़ियां फलांगती हुई बच्चों को रिक्शे पर ही छोड़कर भागती हुई नर्सिंग होम में घुस गयी । बच्चे भी मारे खुशी के रिक्शे पर से कूद पड़े और रिक्शे वाला भी दोनों को साथ लिए अन्दर जा पहुंचा डॉ॰ साहब के कमरे के बाहर डॉक्टरों और नर्सिंग होम के तमाम कर्मचारियों की भीड़ मौजूद थी। सबके चेहरे पर खुशी झलक रही थी । सभी ने बच्चों को खुशी से बताया, "तुम्हारे पापा ठीक हो गये हैं, आओ आओ अन्दर चलो ।" अन्दर का दृश्य और भी मार्मिक था । पत्नी डॉ॰ साहब के पास स्टूल पर उनकी हथेली को अपने दोनों हाथों में थामे बैठी थी और दोनों की आंखें भीगी हुई थीं । ये खुशीं के आंसू थे, जिन्हें दोनों रोक नहीं पा रहे थे । आसपास कुछ सीनियर डॉक्टर, नर्सें और अन्य । कर्मचारी भरी-भरी आंखें लिए खड़े थे ।

बच्चे दौड़कर "पापा-पापा" कहते हुए डॉक्टर साहब के पैरों से लिपट गये । वह उठने की कोशिश करने लगा तो पत्नी ने उसे सहारा देकर बैठने में मदद की । वह बच्चों को अपने बेड पर चढ़ाने की कोशिश करने लगा तो एक डॉक्टर और नर्स ने दोनों को बेड पर चढ़ा दिया । बच्चे बाप से ऐसे लिपट गये, मानो अब कभी उसे छोड़ेंगे नहीं । वह बच्चों के सिर पर हाथ फिराने लगा और देर तक बच्चों को चिपटाये बैठा रहा बच्चे भी उसके सीने से शांत चिपके

रहे । यह दृश्य देखकर कमरे में मौजूद सभी की आंखें भीग चुकी थीं । बेचन रिक्शेवाला भी खिड़की से यह दृश्य देख रहा था और अपने अंगोछे से अपनी आंखें पोंछ रहा था ।

डॉ॰ साहब जब कोमा में थे, उन्हीं दिनों दुनिया में एक बहुत बड़ा बदलाव हो चुका था । एक ऐसा बदलाव, जिसे डॉक्टर साहब अभी नहीं जान पाये थे । दुनिया वास्तव में बहुत बदल चुकी थी । इसे सभी जानते थे केवल डॉक्टर साहब नहीं जान सके थे क्योंकि वह जब कोमा में गये थे उस समय दुनिया कुछ और थी लेकिन अब सब कुछ बदल चुका था । अब दुनिया में कोई पैसे के लिए काम नहीं करता था अब सभी मानवता के लिए निष्काम कर्म करते थे । बेचन रिक्शे वाला भी रिक्शे पर सवारियां तो ढोता था लेकिन पैसों के लिए नहीं क्योंकि अब किसी को पैसे की ज़रूरत ही नहीं थी । सभी को सब कुछ बिना पैसे के मिल जाता था । खाना, कपड़ा, दवा, पढ़ाई सब कुछ । पहले तो कुछ दिनों तक बड़ी अफ़रातफ़री का माहौल था किसी को कुछ समझ में नहीं आता था कि अब क्या होगा । बेचन रिक्शे वाला भी कई दिनों तक मुफ़्त खाना-कपड़ा वग़ैरह पाकर आलसी होकर पड़ा रहा । लेकिन एक दिन उसने सोचा-यूं पड़े-पड़े खाना ठीक नहीं । यूं ही पड़े-पड़े उसका बदन टूटने लगा था । पहले पांच-दस रुपये के लिए जी तोड़ मेहनत करके सवारियां ढोता था । मेहनत करने की आदत पड़ गयी थी सो उसका बदन कुछ श्रम करने की मांग करने लगा और उसकी आत्मा ने भी उसे धिक्कारा तो वह फिर से रिक्शा चलाने लगा । अब उसे सवारियां ढोकर आत्मिक शांति की अनुभूति होती थी । अब वह पैसों के लिए नहीं केवल अपने शरीर को चुस्त-दुरुस्त रखने और हराम का खाने से बचने के लिए रिक्शा चलाने लगा था । अब सवारियों से उसे पैसों के लिए हील-हुज्जत भी नहीं करनी पड़ती थी । वह लिखना-पढ़ना जानता नहीं था रिक्शा चलाता था सो अब भी वह रिक्शा चलाता है । यही हाल सबका था । हर कोई मानवता की सेवा के लिए और ईश्वर की प्रसन्नता के लिए काम करता था । यह ऐसा बदलाव था जिसके बारे में किसी ने कभी सोचा नहीं था । लेकिन ऐसा बदलाव दुनिया में हो चुका था । रिक्शा जब ख़राब होता, कोई पुर्ज़ा बदलवाना होता तो वह किसी भी दुकान पर बिना पैसा दिये सामान बदलवा लेता था । कोई मिस्त्री कोई दुकानदार पैसा नहीं मांगता । पैसों का चलन ही समाप्त हो चुका था ।

यह सारा बदलाव जो दुनिया में हो चुका था उसे डॉक्टर साहब नहीं जान पाये थे क्योंकि वो एक लंबे समय से कोमा में पड़े थे । अब कोई मरीज़ बिना दवा के नहीं मरता था । कोई डॉक्टर फ़ीस नहीं लेता था न ही कोई दवा का दुकानदार पैसा मांगता था सभी अपना-अपना काम केवल इसलिए करते थे कि उन्हें कोई न कोई काम करना ही था । जो जिस काम में पहले से लगा हुआ था वो उसी काम को बिना पैसों के कर रहा था । क्योंकि अब सब को सारी ज़रूरतों का सामान मुफ़्त मिला करता था । दवा की कंपनियां अब भी दवाएं बनाती थीं लेकिन कोई नक़ली दवा नहीं बनाता था सारे कर्मचारी बिना तनख़्वाह बिना कमीशन काम करते थे ।

कुछ दिनों तक तो सभी ने सोचा कि अब काम करने की क्या ज़रूरत जब सब कुछ मुफ़्त हो गया है । पढ़ाई मुफ़्त, दवा मुफ़्त, मकान मुफ़्त सब कुछ मुफ़्त । लेकिन कोई कब तक बैठकर खाता । बैठकर खाने वाले को ख़ुद इस बात का मलाल होने लगा था कि वह बैठकर हराम का खा रहा है तो धीरे-धीरे सभी अपने-अपने काम में लग गये थे । अब कोई डॉक्टर किसी मरीज़ का गुर्दा निकालकर नहीं बेचता । अब कोई शिक्षक पैसों के लिए ट्यूशन नहीं करता । कोई घूस लेकर विद्यार्थियों को पास नहीं कराता । डॉ॰ साहब इन सारी चीज़ों के बदलावों से अनभिज्ञ थे । अब


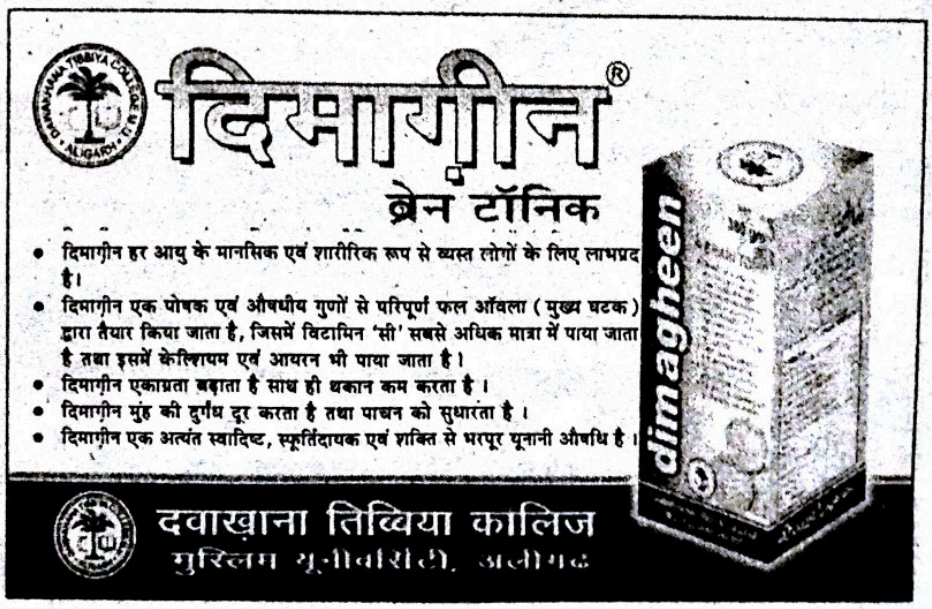

और जो कोई
अल्लाह और उसके
रसूल ( सल्ल० ) की
आज्ञा का पालन करे और
अल्लाह से डरे और उसकी
सीमाओं का ख़्याल रखे,
तो ऐसे ही लोग
सफल हैं ।
( क़ुरआन, 24:52 )

A WELL WISHERS
BANGALORE

कोई अपनी सात पुश्तों के लिए धन इकट्ठा करने के लिए चुनाव नहीं लड़ता था । जो जन प्रतिनिधि चुनाव लड़ते वे वास्तव में जनता की सच्चे हृदय से भलाई करने के लिए चुनाव लड़ते थे कहीं कोई बूथ कैपचरिंग नहीं होती थी । कोई देश हथियार नहीं बनाता न ही बेचता था । सतयुग आ गया था ।

डॉ॰ साहब ने अपनी मेडिकल की पढ़ाई के दौरान ही यह जान लिया था कि मानव एक हिंसक जीव नहीं है इसकी प्रकृति सात्विक है इस बात को वे अच्छी तरह समझते थे । इसी कारण इस बड़े बदलाव का समूची मानवजाति ने स्वागत किया था और मानव की यही अच्छी और भली मूल प्रकृति और प्रवृत्ति के बल पर ही यह सब संभव हो सका था ।

डॉ॰ साहब यह भी जानते थे कि इंटरनेट और तमाम वैज्ञानिक खोजों और प्रगति ने मानव को इस लायक़ बना दिया है कि हर व्यक्ति तक उसकी ज़रूरत की चीज़ें पहुंचाना बहुत सरल हो चुका है । इस कारण बिना मुद्रा के प्रचलन के मानवजाति समूची दुनिया में सभी के लिए सब कुछ उपलब्ध कराने में सक्षम हो सकी है । आज पूरी दुनिया एक गांव में बदल चुकी है । इन्सान-इन्सान के बीच की दूरियां मिट चुकी हैं । अब सारे धर्मों की शिक्षाएं सभी के लिए सुलभ हैं । कोई कहीं भी बैठकर किसी भी धर्म किसी भी विषय का अध्ययन, चिंतन-मनन कर सकता है । डॉ साहब पहले से इन सारी बातों का ज्ञान रखते थे और आज वह इस बदलाव के द्वारा इन सारी सुविधाओं का मानवता की भलाई के लिए इस्तेमाल होते देख गद्‌गद् होते रहते ।

डॉ॰ के॰के॰ श्रीवास्तव एक नेक इन्सान थे उन्होंने अपनी बुद्धि अपनी प्रतिभा और अपनी ईमानदारी के बल पर बहुत तरक़्क़ी की थी । वे एक साधारण परिवार से ताल्लुक़ रखते थे लेकिन उन्होंने काफ़ी यश और दौलत कमा कर कृष्णा नर्सिंग होम बनवाया था । उन दिनों अक्सर वे सोचा करते थे कि यह दुनिया आख़िर कब बदलेगी । वे पैसों के लिए पहले भी काम नहीं करते थे उनके हृदय में मानवता की सेवा की भावना कूट-कूटकर भरी थी । वे अपने साथी डॉक्टरों की धन लोलुपता को देखकर अक्सर दुखी रहा करते थे । क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार से बहुत दूर रहकर वे रोगियों की सेवा में लगे रहते थे । ईश्वर ने इसीलिए उनको बहुत धन दिया था वे बहुत मामूली फ़ीस लेकर इलाज करते थे । बहुत सारे डॉक्टर उनसे इसीलिए द्वेष रखते थे कि वे कम पैसों में इलाज करके उनका धंधा चौपट कर रहे थे । ग़रीब मरीज़ों को पहले भी वे बिना पैसों के इलाज की सुविधा दे दिया करते थे । एक दिन उनसे द्वेष रखने वाले डॉक्टरों ने उनकी हत्या करने की नीयत से उनकी कार को एक ट्रक वाले को पैसा देकर टक्कर लगवा दी थी वह उसी दिन से कोमा में थे । लेकिन जब वे कोमा में अपने नर्सिंग होम में पड़े थे ईश्वर ने उनके हृदय की भावना के अनुरूप दुनिया में बदलाव कर दिया था । लेकिन डॉक्टर साहब को इस बदलाव के बारे में कुछ भी पता नहीं चल सका । वह चेतन अवस्था में भी ईश्वर को याद किया करते थे और शायद कोमा में भी ईश्वर को ही याद करते रहे थे । शायद इसीलिए ईश्वर ने उनकी बेहोशी की हालत में ही दुनिया में एक चमत्कार कर दिया था और सारी दुनिया में ऐसा बदलाव किया कि सारी दुनिया ही सुधर गयी थी । बदली हुई दुनिया में ईश्वर ने फिर उन्हें जीवन दिया । और अब डॉक्टर साहब ठीक होकर घर आ चुके थे । डॉक्टर साहब को अपनी ज़िन्दगी वापस मिलने की अपने बीवी बच्चों से मिलने की उतनी ख़ुशी नहीं महसूस होती जितनी इस दुनिया के बदल जाने की हुई । अब डॉक्टर साहब ईश्वर की याद में ही अपना समय बिताते और ईश्वर को हर घड़ी धन्यवाद देते हुए अपना काम करते रहते ।

यह बदलाव कब और कैसे संभव हुआ इसका उन्हें कुछ पता नहीं था । केवल इतना पता था कि यह बदलाव ईश्वर ने ही अच्छे इन्सानों को एकजुट करवा के किया है । और इस बदलाव से उन्हें असीम आनन्द की अनुभूति होती रहती हर समय हर पल और उनका हृदय ईश्वर के प्रति कृतज्ञता से भर उठता ।

डॉ॰ साहब पहले अक्सर सोचते रहते थे कि मुद्रा का प्रचलन इन्सान के दैनिक जीवन में आसानी लाने के लिए शुरू हुआ था लेकिन आज यही मुद्रा सारी बुराइयों की जड़ बनी हुई है ।

ईश्वर ने मानव को केवल इसलिए पैदा किया कि इन्सान उसकी भक्ति करे, ईश्वर को याद करे लेकिन आज हाल यह है कि इन्सान ईश्वर का चिंतन करने के बजाय धन कहां से कैसे आये इसी के चिंतन में व्यस्त रहता है । पैसों के लिए इन्सान आज कुछ भी करने को तैयार है उसे केवल धन चाहिए अच्छे लोगों के लिए दुनिया क़ैदख़ाना बन चुकी

है और बुरे लोगों के लिए स्वर्ग । क्या विडंबना है ? भाई-भाई का दुश्मन इसी पैसे के लिए हो रहा है । धर्म को भी कमाई का ज़रिया बना लिया गया है । दो धर्मों को लड़ाकर अपना उल्लू सीधा किया जा रहा है और उल्लू सीधा करने का सीधा अर्थ है धन लोलुपता और संग्रह की प्रवृत्ति । कोई स्विस बैंक में अपना बैलेंस बढ़ा रहा है तो कोई इनकम टैक्स बचा रहा है । कोई सात पुश्तों का इन्तिज़ाम करने में लगा है तो कोई खाद्य सामग्रियों में मिलावट कर रहा है । कोई शिक्षा माफ़िया है तो कोई कला माफिया बना बैठा है । कोई सुपारी पर हत्या कर रहा है तो कोई करवा रहा है । कोई लुटेरा, डाकू है, तो कोई रहज़न है । कोई ठग है तो कोई दलाल है । कोई मालामाल है तो कोई कंगाल । कोई अपना जिस्म बेच रहा है तो कोई ख़ून । कोई ईमान बेच रहा है तो कोई धर्म बेच रहा है ।

डॉ॰ साहब पैसों के लिए होने वाले सारे अधर्म सारे कुकर्म देखकर व्यथित रहा करते थे लेकिन ईश्वर पर उनकी आस्था बहुत मज़बूत थी । वे दिल ही दिल में, मन ही मन में ईश्वर से इस दुनिया को सच्ची राह पर लाने की दुआएं-प्रार्थनाएं किया करते थे । ईश्वर ने शायद उनकी प्रार्थना सुन ली थी । अब दुनिया को बदला हुआ देखकर डॉक्टर साहब की प्रसन्नता का कोई ठिकाना न था और उनकी तरह के तमाम लोगों की भी प्रसन्नता की कोई सीमा नहीं थी ।

पैसों के लिए, तनख़्वाह के लिए लोग अपने-अपने जिगर के टुकड़ों को देश सेवा के लिए फ़ौज में या समाज सेवा के लिए पुलिस जैसे विभागों में भर्ती कराते थे । उनमें से कई लड़ते हुए वीरगति को प्राप्त हो जाते । पत्नियों से पति, मांओं से उनके बेटे, बहनों से भाई आये दिन जुदा होते रहते थे लेकिन अब ऐसा नहीं होता था । अब कोई धर्म या देश की सीमा के लिए किसी इन्सान की जान नहीं लेता था ।

डॉक्टर साहब को कभी-कभी लगता कि वे ख़ुशी से कहीं पागल न हो जाएं लेकिन क़ुरआन और पैग़म्बरों की बातें याद आ जातीं कि दुख में दुखी और सुख में अत्यंत ख़ुशी मत पालो शांतचित्त रहो, समभाव में रहो तो उनका चित्त फ़ौरन स्थिर हो जाता और अत्यधिक ख़ुशी से भी होने वाले विचलन से वह बच जाते या ईश्वर की कृपा से बचा लिए जाते ।

पुलिस और फ़ौज जैसे संगठनों और विभागों की पूरी दुनिया में अब ज़रूरत ही नहीं रही । अब किसी दुर्घटना में घायल को अस्पताल पहुंचाने वालों की और दुखियों की सेवा करने वालों की कोई कमी नहीं थी अब कोई किसी की बहू-बेटी को दहेज के लिए न तो सताता था और न जलाता मारता था ।

डॉक्टर साहब पहले अक्सर सोचते कि भ्रूण हत्याएं अगर इसी तरह होती रहीं तो दुनिया का क्या होगा ? जिस नारी ने पुरुषों को जन्म दिया वही पुरुष नारी को नीचा या छोटा क्यों समझता है ? डॉ॰ साहब रोज़ इन सारी बातों को सोचते-सोचते ही अपने बिस्तर पर नींद में सो जाते । उन्हें क्या पता था कि ईश्वर उन्हें एक लंबी कोमा की नींद में सुलाकर दुनिया को बदल देगा । डॉक्टर साहब यह बदलाव कैसे हुआ अब अक्सर इसी बात को सोचते-सोचते सो जाते हैं और नींद में भी ईश्वर को धन्यवाद देते रहते हैं कि ईश्वर ने उनको नर्क से निकालकर वास्तव में स्वर्गवासी बना दिया है ।


मारूफ़
शू पैलेस
जी॰ई॰ रोड, बस स्टैंड, बी॰एम॰वाई॰
चरौदा, दुर्ग ( छत्तीसगढ़ )
फ़ोन : 0788-6534786

मक़सूद भाई मोबाइल : 9406090786
एस॰के॰ इंटरप्राइजेज
होल सेल शू मर्चेन्ट
अलंकार कम्पलेक्स के निकट
कैम्प-2, भिलाई, ( छत्तीसगढ़ )
फ़ोन : 0788 6535786

# घातक है महिलाओं में बढ़ती धूम्रपान की लत

■ सुप्रिया
(झांसी, उ०प्र०)

महिलाओं में धूम्रपान की बढ़ती प्रवृत्ति को विदेशी संस्कृति का कुत्सित प्रभाव कहिये या पुरुषों से होड़ लेने की तथाकथित आधुनिकता परन्तु यह एक कटु सत्य है कि कोमल अंगों की स्वामिनी नारी आधुनिकता की चकाचौंध में एक ऐसे शौक़ के पीछे दीवानी हुई जा रही है, जो न केवल स्वयं उसके लिए, बल्कि उसके इर्द-गिर्द के लोगों के लिए भी बेहद नुक़सानदेह है। महिलाओं में यह प्रवृत्ति दिन-ब-दिन बढ़ती ही जा रही है, ख़ासकर उच्चवर्गीय महिला समुदाय में। सिगरेट का यह शौक़ महिलाओं की मां बनने की संभावनाओं पर ढेरों प्रश्न छोड़ रहा है और एक स्वस्थ पीढ़ी के आगमन पर लग रहे हैं अनगिनत प्रश्न चिन्ह।

यूं तो तंबाकू का सेवन काफ़ी प्राचीनकाल से किया जाता रहा है। हां, तब से अब तक इसका स्वरूप अवश्य बदला है। सदियों पहले यह औषधि के रूप में इस्तेमाल किया जाता था, परन्तु आज इसका सेवन नशे के लिए किया जाता है। अगर यह जानने की कोशिश की जाए कि इसका जन्म कहां से हुआ तो यह काफ़ी मुश्किल होगा। बरसों की खोजबीन के बाद पता चला है कि मूलरूप से तम्बाकू का जन्म स्थल अमेरिका है, जहां हज़ारों वर्ष पूर्व यह औषधि के रूप में इस्तेमाल किया जाता था। तम्बाकू भी उन बहुत से पौधों में से एक है जिन्हें सदियों पहले उत्तरी अमेरिका से यूरोप में लाया गया था। नशे के लिए इसका प्रयोग सर्वप्रथम यूरोप में किया गया, न केवल पुरुष बल्कि महिलाएं भी बेधड़क पाइप का इस्तेमाल करती थीं। उस समय भी समाज ने महिलाओं द्वारा इसका सेवन करने पर घोर विरोध किया था। केवल महिलाओं के लिए ही नहीं पुरुषों के लिए भी इसे घातक बताया गया।

1800 तथा 1900 के मध्य तम्बाकू का चलन काफ़ी बढ़ चुका था, उस समय न केवल पुरुष और महिलाएं बल्कि बच्चे भी इसके शिकंजे में आ चुके थे। लगभग 1920 में पुरुषों से बराबरी की होड़ में लगकर महिलाओं ने इसका इस्तेमाल खुलेआम शुरू कर दिया। 1935 तक आते-आते यह एक फैशन बन चुका था।

आंकड़ों से पता चलता है कि आज विश्व की लगभग 20 से 35 प्रतिशत महिलाएं तम्बाकू का सेवन करती हैं और महिलाओं की आकस्मिक मृत्यु का एक बड़ा कारण तम्बाकू ही है। यदि इस ओर कोई ध्यान न दिया गया तो आने वाले वर्षों में यह मृत्यु दर बढ़कर दोगुनी-तीगुनी हो जाएगी। अनुमान लगाया गया है कि सन 2020 तक पहुंचते-पहुंचते यह मृत्युदर लाखों के आंकड़ों को भी पार कर जाएगी। डॉक्टरों द्वारा किये गये सर्वेक्षणों के आधार पर कहा जाता है कि धूम्रपान करने वाली महिलाओं को पुरुषों की अपेक्षा स्वास्थ्य संबंधी अधिक जोखिम उठाने पड़ते हैं।

धूम्रपान से गले और फेफड़ों का कैंसर होना तो इसका ख़तरनाक परिणाम है ही, इसके साथ-साथ रक्तचाप बढ़ने, सांस की शिकायत तथा दिमाग़ में शिथिलता आना भी धूम्रपान से होने वाली जानलेवा बीमारियां हैं। महिलाओं में तो इसके परिणाम और भी घातक सिद्ध होते हैं। इससे न केवल प्रजनन संबंधी गड़बड़ी उत्पन्न होती है बल्कि औरत का पूरा स्वास्थ्य ख़तरे में पड़ सकता है। सिगरेट में मौजूद

## 'सदाकांक्षा' 2011

'सदाकांक्षा' (2011) का अगला अंक विभिन्न विधाओं पर केन्द्रित होगा। रचनाकार बन्धुओं से निवेदन है कि विभिन्न विधाओं पर अपनी पांच उत्कृष्ट रचनाएं संक्षिप्त जीवन परिचय के साथ 30 अक्तूबर 2011 तक निम्नलिखित पते पर भिजवाने का कष्ट करें। 'सदाकांक्षा' के निरंतर प्रकाशन के लिए हमें आपका भरपूर सहयोग अपेक्षित है।

संपादक, 'सदाकांक्षा'
इस्लामी साहित्य संगम
2703, बारादरी, बल्लीमारान, दिल्ली-110006
ई-मेल : sadakanchha2004@rediffmail.com

निकोटिन नामक विष गर्भाशय के रक्त प्रवाह की गति को मंद कर देता है, नतीजतन बच्चे को मिलने वाली आक्सीजन और लौह तत्व की मात्रा कम हो जाती है । सिगरेट से बनने वाली कार्बन मोनोओक्साइड के कारण भी आक्सीजन का अभाव हो जाता है । सिगरेट पीने से शरीर में उपस्थित विटामिन 'सी' काफ़ी मात्रा में नष्ट हो जाता है जो कि गर्भवती महिला के लिए बहुत आवश्यक होता है । धूम्रपान की शिकार औरतों के बच्चे कमज़ोर, चिड़चिड़े तथा बहुत-सी बीमारियों से ग्रस्त होते हैं । ऐसी औरतों के बच्चे विक्लांग भी हो सकते हैं, न केवल शारीरिक रूप से, बल्कि वे मानसिक रूप से भी अस्वस्थ हो सकते हैं ।

हालांकि भारत में महिलाओं में धूम्रपान की लत को सामाजिक बुराई माना जाता है, किन्तु फिर भी ग्रामीण क्षेत्रों तथा पिछड़े वर्ग की महिलाओं में धूम्रपान की आदत बहुत पुरानी है । आजकल यह प्रवृत्ति फैशन के रूप में फैल चुकी है । आज उच्च वर्गीय तथा मध्यमवर्गीय परिवारों में महिलाओं ने इस आदत को खुलेआम अपना लिया है ।

एक सर्वेक्षण के अनुसार महानगरों में कॉलेजों में 10 से 15 प्रतिशत छात्राएं धूम्रपान करती हैं । घर की चौखट तक सीमित रहने वाली महिलाएं बहुत कम धूम्रपान करती हैं । कामकाजी महिलाओं में यह लत अधिक फैल चुकी है । विदेशों में तो इसका सेवन सिगरेट या पाइप के रूप में किया जाता है परन्तु भारत में यह कई रूपों में प्रचलित है । सिगरेट और पाइप के अतिरिक्त बीड़ी, चिलम आदि के रूप में इसका सेवन काफ़ी अधिक मात्रा में किया जाता है । इसके अतिरिक्त खैनी, ज़र्दा तथा पान मसाला के रूप में भी इसका सेवन बड़ी मात्रा में किया जाता है । नशे के लिए वैसे तो हमारे समाज में और भी बहुत-सी चीज़ें प्रचलित हैं जैसे शराब, चरस, गांजा, स्मैक, हेरोइन आदि, लेकिन तम्बाकू का प्रचलन सबसे अधिक है ।

हमारे देश में तो इसे बहुत से रूपों में इस्तेमाल किया जाता है । आंध्र प्रदेश में इसे चुट्टा कहा जाता है तो केरल में इसे यूं ही चबाया जाता है । बिहार में बीड़ी और हुक्के में इसे गुड़गुड़ाया जाता है तो गोवा में खैनी और घुमती के नाम से मशहूर है और पान चबाना तो पुराने समय से ही भारत में प्रचलित है । चीन में किये गये सर्वेक्षण के अनुसार चीन के लगभग 30 करोड़ लोग सिगरेट की आदत के शिकार हो चुके हैं जो कि अमेरिका की समूची आबादी से कहीं अधिक है । स्वास्थ्य विशेषज्ञों का कहना है कि चीन में धूम्रपान एक राष्ट्रीय आदत बन चुकी है जिसके सबसे ज़्यादा शिकार बच्चे हैं । यहां तक कि चार-पांच साल के बच्चे भी सिगरेट पीना सीख रहे हैं ।

हालांकि सिगरेट के पैकेटों पर तथा विज्ञापनों पर वैधानिक चेतावनी के रूप में लिखा रहता है कि तम्बाकू का सेवन सेहत के लिए हानिकारक है, परन्तु फिर भी इस ओर कोई ध्यान नहीं देता । इसके प्रचार के लिए बनाये गये आकर्षक विज्ञापनों की ओर लोग अधिक खिंचते चले जाते हैं ।

सरकारी प्रयासों व स्वयंसेवी संगठनों द्वारा उठाये गये क़दमों के बावजूद न तो धूम्रपान पर रोक लगायी जा सकी है और न ही लोगों में इससे होने वाले घातक परिणामों के प्रति आवश्यक जागरूकता ही आयी है । इस ओर ध्यान देने की आवश्यकता है ।


माल का लालच और ईमान दोनों किसी बन्दे के दिल में हरगिज़ जमा नहीं हो सकते

मद्रासी

मद्रासी होटल
मालवीय रोड
रायपुर (सी॰जी॰)
फोन : 0771-2539516,2236788

मद्रासी होटल
शॉप नं॰ 1-7
मोतीबाग़ चौपाटी, रायपुर
फोन : 0771-2533946, 5053603

■ डॉ॰ मुहम्मद अहमद

# इलेविन ऐट

8 अगस्त 2011
दिन था सोमवार
अर्थात्, इलेविन ऐट था
अरुणोदय होते ही
तनवीर को
गुज़री रात का मंज़र
याद आ रहा था बार-बार
बेटा अब्दुल्लाह
बेटी इशरत का
चेहरा । रुदन
याद आ रहा था बार-बार
स्वर गूंज रहा था दिमाग़ में
'अब्बा, भूख लगी है'
'अम्मी, भूख लगी है'
भूख के मारे
ये बेचारे
रो-रोकर सो गये थे :
लेकिन तनवीर और
हलीमा को नींद कहां नसीब थी ?

... ... ...

तनवीर मज़दूर था
इसलिए भी मजबूर था
फ़ज्र (भोर) की नमाज़
पढ़कर निकल पड़ा
गंतव्य की ओर
दिल्ली के
बिन्दापुर क्षेत्र स्थित
नन्हें पार्क की ओर
मालिक इन्दर सिंह से
दिहाड़ी मांगने
मोहित संग
दोनों ने की थी
उसके घर की रंगाई
अनुरोध सुनते ही
इन्दर सिंह भड़क उठा ।
दिहाड़ी देने से साफ़
किया इन्कार
लगायी कड़ी फटकार ।

... ... ...

तनवीर गिड़गिड़ाया
जतायी अपनी मजबूरी–
पैसे नहीं थे
राशन नहीं था
रात में चूल्हा नहीं जला
भूख से बच्चे हैं बेक़रार
दीजिए मज़दूरी सरकार
दहाड़ा मालिक
क्रुद्ध होकर–
सुबह-सुबह क्यों आया
घर पर ?
किसका पैसा मैं दूं बाक़ी ?!
झूठ बोल
उसने लगायी फिर दुत्कार
किया साफ़-साफ़ इन्कार ।

... ... ...

तनवीर के बार-बार के
आग्रह पर
आतंकी बना मालिक
लाठी-डंडों से मिलकर पीटा
उसे जमकर
क्रूर-निर्दय होकर
भूख की मार से
पहले से ही आहत
तनवीर पर पड़ी
दुहरी मार
वह करता रहा
चीत्कार
मदद के लिए
लगायी पुकार/गुहार

... ... ...

किन्तु,
शब्द शून्य
प्रत्युत्तर शून्य
कोई नहीं आया
किन्तु,
वह चला गया
ख़ुदा के पास
जो सबका ख़ुदा है
इन्दर सिंह का भी
न चाहते हुए भी
सबको उसी की ओर जाना है
कर्मों का सही प्रतिफल पाना है ।

# शहला

शहला नहीं रहीं
आतंकियों के हत्थे
चढ़ गयीं
घर से निकल कर
कार में बैठते ही
गोली के छर्रों ने
ले ली उनकी जान
दंग रह गये
उनके निगहबान
म॰प्र॰ पुलिस
भाजपा शासन !
जारी हुआ फ़रमान
सी॰बी॰आई॰ करे
पूरे अरमान
सी॰बी॰आई॰ हुई
परेशान
किसे पकड़े
अस्ल अपराधियों को
अथवा
'राष्ट्रवादियों' को ?

# हानिकारक है मोबाइल फ़ोन की तरंगें

❒ विद्या प्रकाश

जहां एक तरफ़ मोबाइल फ़ोन से सूचनाओं तथा संदेशों के परस्पर आदान प्रदान में नवीन क्रांति हुई है तथा व्यक्ति-व्यक्ति के बीच दूरियां कम हो गयी हैं । वहीं दूसरी तरफ़ मोबाइल फ़ोन के इस्तेमाल से निकलने वाली तरंगों से अनेक प्रकार की गंभीर बीमारियों का ख़तरा बढ़ गया है ।

इस संबंध में विभिन्न रिपोर्टों में इस बात का खुलासा किया गया है कि घनी बस्तियों में मोबाइल टावरों के पांच सौ मीटर के दायरे में निवास करने वाले लोगों को इलेक्ट्रोमेग्नेटिक रेडिएशन से गंभीर तथा प्राणघातक बीमारियों का ख़तरा बढ़ जाता है । मोबाइल फ़ोन तथा टावरों से निकलने वाली इलेक्ट्रोमेग्नेटिक तरंग से ब्रेन ट्यूमर तथा कैंसर का ख़तरा है । इस तरंग की परिधि में आने से गर्भवती महिलाओं में गर्भपात की आशंका बढ़ जाती है । इसी के साथ अनिद्रा तथा रोग प्रतिरोधक क्षमता कम होने की शिकायत आम हो जाती है ।

भारत सरकार की डाट संस्था ने शोध के बाद जो रिपोर्ट प्रस्तुत की है, उसमें मोबाइल टावरों को आबादी से दूर रखने की सलाह दी गयी है तथा बताया गया है कि जहां भी टावर स्थापित किये गये हैं वहां के आसपास तितलियों, चिड़ियों तथा मधुमक्खियों जैसे छोटे जीवों का अस्तित्व समाप्त होता जा रहा है ।

रिपोर्ट में ख़ास तौर से बच्चों तथा गर्भवती महिलाओं को मोबाइल तथा मोबाइल टावरों से निकलने वाली तरंगों से दूर रहने की सलाह दी गयी है । तरंगों के दुष्प्रभावों से बचाव हेतु भवनों में एंडीरेडिएशन वाल पेंट तथा एंटीरेडिएशन वस्त्रों का इस्तेमाल करना आवश्यक है ।

इसी के साथ चन्द रुपयों की लालच में घनी बस्ती में स्थित अपने भवनों पर मोबाइल टावर लगाने की अनुमति कदापि न प्रदान की जाए । मोबाइल फ़ोन तथा टावरों के दुष्प्रभावों से बचाव हेतु सावधानी बरतनी आवश्यक है ।

मुद्रक एवं प्रकाशक ख़लील अहमद द्वारा दावत ट्रस्ट (रजि॰), D-314, दावत नगर, अबुल फ़ज़्ल इन्कलेव, जामिया नगर, नयी दिल्ली-110025 से प्रकाशित एवं भारत ऑफ़सेट, गली क़ासिम जान, बल्लीमारान, दिल्ली-6 से मुद्रित ।
फोन: 011-26949430
संपादक : डॉ॰ मुहम्मद अहमद

संस्था की लिखित अनुमति के बिना सम्पूर्ण या आंशिक पुनर्प्रकाशन पूर्णत: प्रतिबंधित है ।

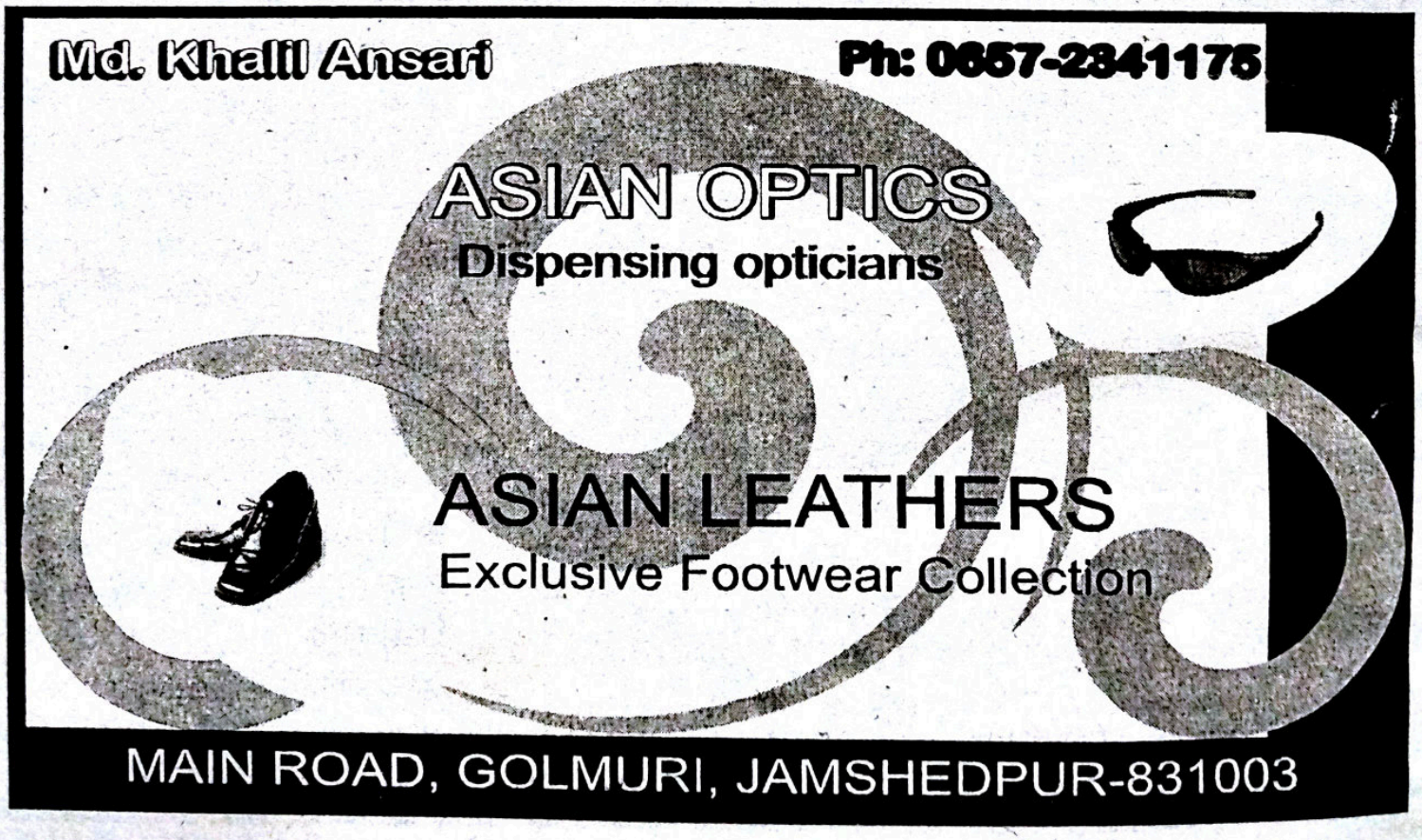

"जो लोग अपने माल अल्लाह के मार्ग में ख़र्च करते हैं, उनकी उपमा ऐसी है, जैसे एक दाना बोया जाए, जिससे सात बालें निकलें और प्रत्येक बाल में सौ दानें हों।" (क़ुरआन)

# M. M. IBRAHIM SB.

# QULITY FOODS

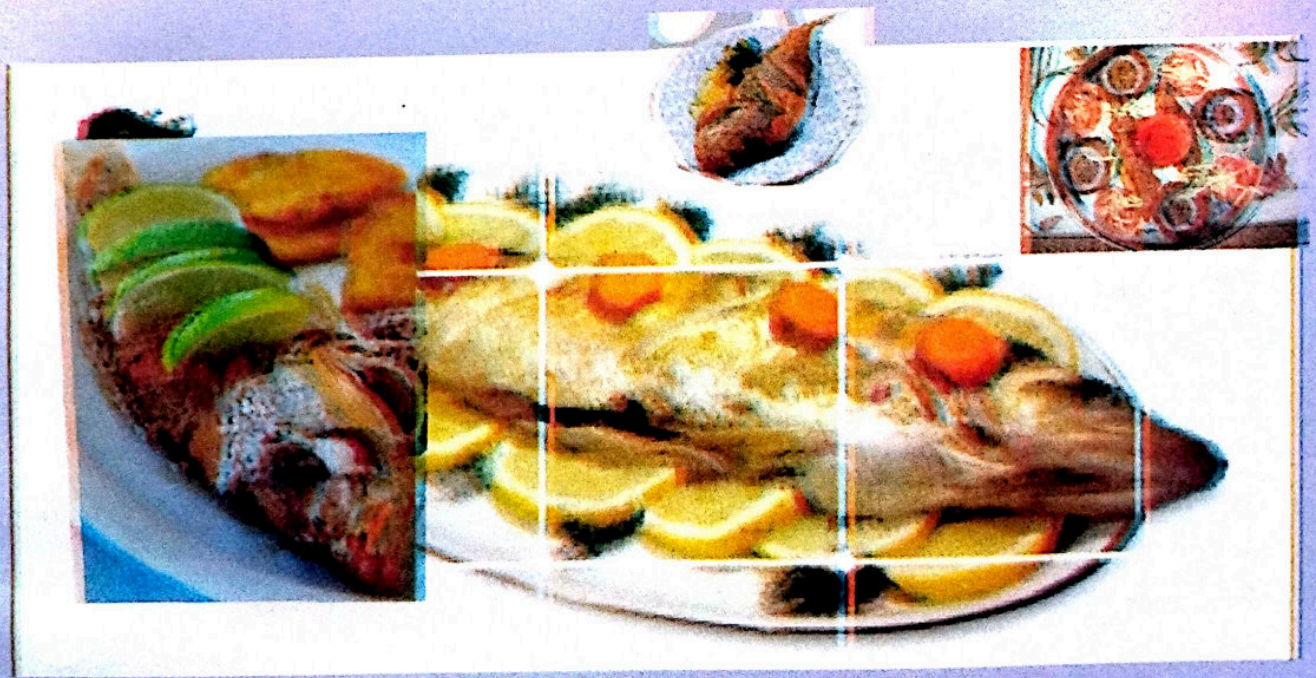

**Plot No. 5, 5B-39 & 50B-50A, Concolim**
**Industrial Estate, Concolim,**
**Salcette (Goa)-403703**

Posted on 20-21 September 2011
October 2011
E-mail: kantimonthly@hotmail.com
Publishing Date: 18.09.2011

हिन्दी साहित्यों की साहित्यिक पत्रिका
कान्ति

RNI 53372/91
DL(S)-01/3147/2009-2011
LICENSED TO POST WITHOUT PREPAYMENT
License No. U (SE)-73/2009-11

Off. 2257800, 2258100
Cell : 9822163036, 9822123036

# M/s. GOA SALES CORPORATION

S/26, Near Irrigation Quarters, NH-17, Karaswada, Mapusa-Goa

# M/s. GOA GUNNY TRADERS

S/25, Near Irrigation Quarters, NH-17, Karaswada, Mapusa-Goa

DEALERS IN : ALL TYPES OF INDUSTRIAL SCRAP MATERIALS



Off. : 2257800, 2258100
Res. : 2250100
Cell : JK 9822163036

# M/s. Jay-kay Plastic

## Re-processor of Plastic Granuells

Near Binani Glass Fibre Co.,
S/2 Colvale Industrial Estate, Colvale-Goa